A Daily News Magazine
इंदौर
बुधवार, 31 जुलाई, 2024
इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 9 अंक 279, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

बिहार : पीके की 'जन सुराज पार्टी' किसे हराने के लिए ?

सत्य ब्यूरो

बिहार की राजनीति में प्रशांत किशोर (पीके) अब आधिकारिक रूप से उतरने वाले हैं। कभी खुद को वर्तमान तो कभी पूर्व चुनावी रणनीतिकार बताने वाले किशोर ने रविवार को पटना में कहा कि 2 अक्टूबर को गांधी जयंती पर जन सुराज अभियान एक राजनीतिक पार्टी के रूप में सामने आ जाएगा। उनकी पार्टी की नजर अगले साल विधानसभा चुनाव पर है और वो हर सीट पर चुनाव लड़ेगी।

किशोर ने रविवार को पटना में जन सुराज की राज्य स्तरीय कार्यशाला में किशोर ने कहा, पार्टी नेतृत्व का मसला उचित समय पर तय किया जाएगा। यानी उनका संगठन अभी तक राज्यस्तरीय नेतृत्व तय नहीं कर पाया है। या फिर वो मुख्यधारा के दलों से निराश या महत्वाकांक्षी लोगों के टूटकर उनके संगठन में शामिल होने का इंतजार कर रहे हैं।

जन सुराज अभियान की पटना कार्यशाला में पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर की पोती सहित कई लोगों ने भाग लिया। किशोर ने भारत रत्न से सम्मानित समाजवादी नेता के छोटे बेटे वीरेंद्र नाथ ठाकुर की बेटी जागृति ठाकुर के आने का भी स्वागत किया। दिवंगत ठाकुर के बड़े बेटे रामनाथ ठाकुर जेडीयू सांसद और केंद्रीय राज्य मंत्री हैं। बता दें कि प्रशांत किशोर पिछले दो साल से जन सुराज अभियान चला रहे हैं। पूरे बिहार का दौरा कर चुके हैं।

जन सुराज में शामिल होने वाले अन्य लोगों में पूर्व आरजेडी एमएलसी रामबली सिंह चंद्रवंशी शामिल थे, जिन्हें हाल ही में अनुशासनहीनता के आधार पर विधान परिषद से अयोग्य घोषित कर दिया गया था। पूर्व आईपीएस अधिकारी आनंद मिश्रा भी शामिल हुए, जिन्होंने भाजपा के टिकट की उम्मीद में आईपीएस से इस्तीफा दे दिया था, लेकिन लोकसभा बक्सर से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा था। आनंद मिश्रा हार गए थे और जमानत जब्त हो गई थी।

किशोर ने अपनी जन सुराज यात्रा पश्चिम चंपारण से शुरू की थी। हालांकि 10 जिलों में वो कार से यात्रा करते हुए पहुंचे थे। लेकिन इस यात्रा के बाद दावा किया गया कि उन्होंने जमीनी स्तर पर नेताओं का एक समूह बनाया है। जिनके दम पर वो अपनी पार्टी को पूरे बिहार में फैला देंगे। लेकिन प्रशांत किशोर अपनी पार्टी को लॉन्च नहीं कर पाए। अब नया रंग रोगन लगाकर फिर से अपनी राजनीतिक पार्टी को लॉन्च करने की तैयारी है। देश के सबसे पिछड़े राज्यों में बिहार की प्रमुख पार्टियां आरजेडी, भाजपा, जेडीयू और कांग्रेस हैं।

प्रशांत किशोर ने जो राजनीतिक लाइन पकड़ी है, उससे भाजपा को सीधा फायदा है। यानी 37 फीसदी दलित और मुस्लिम वोट आरजेडी और जेडीयू की ताकत है। ये दोनों समुदाय भाजपा को वोट नहीं देते। क्योंकि इनकी नजर मुख्य रूप से इन्हीं दो समुदायों के वोटों पर है। इसीलिए प्रशांत किशोर को भाजपा की बी टीम कहा जाता है। क्योंकि बिहार में जिस तरह की दलित-मुस्लिम राजनीति प्रशांत किशोर करना चाहते हैं, उससे भाजपा को जबरदस्त फायदा होगा। इससे यह भी संकेत मिलता है कि अगले साल होने वाले बिहार विधानसभा चुनाव के बाद भाजपा अकेले दम पर सरकार बनाना चाहती है। उसे प्रशांत किशोर की पार्टी के जरिए दलित-मुस्लिम वोट बंटने की उम्मीद है।

प्रशांत किशोर ने भाजपा की 'बी' टीम का शक दूर करने के लिए बिहार की सभी सीटों पर चुनाव लड़ने की घोषणा की है। लेकिन मुसलमानों से प्रशांत किशोर की जज्बाती अपीलों का सिलसिला जारी है। किशोर ने अररिया की सभा में कहा था: 'तुम्हारे पैगंबर साफ़ कहते हैं कि संघर्ष के बिना कुछ भी हासिल नहीं किया जा सकता। आप सिर्फ बीजेपी या नरेंद्र मोदी को हराने के बारे में सोचते रहते हैं लेकिन इस दिशा में ठोस प्रयास नहीं करते।' इसके बजाय, आप कुछ लोगों या नेताओं द्वारा उन्हें हराने की प्रतीक्षा करते हैं। किशोर ने फिर कहा- 'भाजपा एक दिन में नहीं बनी। मोदी 2014 में नहीं आए थे। वह उससे पहले 20 साल तक वहां थे।' यानी मुसलमानों के मर्म पर भी वो हाथ रख रहे हैं। ताकि बी टीम कहना लोग बंद करेंगे। लेकिन राजनीति में जो दिखता है, वो होता नहीं। जो होता है, राजनीतिक मकसद उससे अलग होता है। फिलहाल प्रशांत किशोर भाजपा की पसंद बने हुए हैं।

प्रशांत किशोर खुद ब्राह्मण हैं, लेकिन वो दलितों और मुसलमानों से जाति और धार्मिक आधार पर मतदान बंद करने और 'अपने बच्चों के भविष्य' को ध्यान में रखने की अपील कर रहे हैं। लेकिन प्रशांत किशोर जिस जाति से आते हैं, वो खुद आंख बंद कर भाजपा को वोट देती है, उसके लिए प्रशांत किशोर का कोई संदेश नहीं है।

अगर दलित और मुस्लिम वोट बैंक के रूप में किसी पार्टी को वोट देते हैं तो उस पर सभी को ऐतराज है, लेकिन ऐतराज करने वाले अपने जाति समूह या समुदाय पर ध्यान नहीं देते जो खुलकर दक्षिणपंथी भाजपा का समर्थन करते हैं। प्रशांत किशोर ने दलितों और मुस्लिमों से जो अपील की है, उसकी खास वजह कुछ और भी है। 1990 के बाद से, बिहार का नेतृत्व उन नेताओं ने किया है जो सामाजिक न्याय की राजनीति से निकले हैं, चाहे वह आरजेडी के लालू प्रसाद और उनकी पत्नी राबड़ी देवी हों, या वर्तमान मुख्यमंत्री और जेडीयू सुप्रीमो नीतीश कुमार हों। इन सभी की दलितों और मुस्लिमों में पहचान है। प्रशांत किशोर वहां अपनी जगह बनाना चाहते हैं। लेकिन उससे फायदा भाजपा को होगा।

ऐसा क्यों है कि मुस्लिमों को आकर्षित करने के लिए प्रशांत किशोर ने कहा है कि मुस्लिम बिहार की आबादी का 17 प्रतिशत हैं, यादवों से 3 प्रतिशत अधिक लेकिन उनके पास पूरे बिहार का कोई नेता नहीं है। यह अपील कर प्रशांत किशोर क्या साबित करना चाहते हैं।

उनके पास भाजपा के कोर वोटर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के लिए कोई अपील क्यों नहीं है। हाल ही में, किशनगंज में एक सभा में, उन्होंने क्यों कहा कि जन सुराज पार्टी 2025 के विधानसभा चुनावों में 75 मुसलमानों को मैदान में उतारेगी।

किशोर ने मुस्लिमों से कहा- 'आप डर के मारे असामाजिक तत्वों को वोट देना कब बंद करेंगे और अपने लिए वोट करना कब शुरू करेंगे।' उन्होंने आरजेडी और जेडीयू की मुसलमानों के प्रति दिखावटी बातों पर सवाल उठाए और पूछा कि उन्होंने इस समुदाय को सरकार में महत्वपूर्ण पद क्यों नहीं दिए।

मुसलमानों के अलावा प्रशांत किशोर कुछ इस तरह की बात दलितों से भी कहते हैं। प्रशांत किशोर दलित मुस्लिमों की 37 फीसदी आबादी को अपने मंच पर लाना चाहते हैं, ताकि आरजेडी और जेडीयू के वोट बैंक पर कब्जा किया जा सके।

(सत्य हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सुप्रभात

जिस वक्त मैंने तुम्हें चूमना चाहा

तुम्हारे दफ़्तर से फोन आ गया
मैं चाहती थी तुम्हारे सीने से सिर टिकाए
कुछ देर सुनती रहूँ अपनी ही धड़कन
लेकिन उस वक्त
तुम प्रेम कविता लिखने में व्यस्त थे
तुम तक पहुँचाना चाहती थी मन की पाती
मगर तुम उलझे थे मोबाइल में
आँखों को कहनी थी एक बात
उधर तुम्हें करना था कोई अनुवाद
बड़े तालाब पर बैठ
बहना था कलकल
लेकिन तुम्हारी डायरी में थे
कई सारे अपॉइंटमेंट
एक चाय पीनी थी
तुम्हारे हाथों की गर्माहट से भरी
और मौसम हमेशा सर्द ही मिला
मेरी ख़्वाहिश वाली तमाम शामें
अखबार की डेडलाइन में खो गई
यूँ ज़रूरी कामों के बीच
प्रेम हमेशा स्थगित रहा।

- श्रुति कुशवाहा

पेरिस ओलंपिक

मनुकामना पूरी, भारत को मिला दूसरा मेडल

● शूटिंग में मनु भाकर का ऐतिहासिक डबल धमाल ● सरबजोत सिंह संग दिलाया ब्रॉन्ज, रच दिया इतिहास

पेरिस (एजेंसी)। भारतीय जोड़ी मनु भाकर और सरबजोत सिंह ने पेरिस ओलिंपिक में इतिहास रच दिया है। मनु और सरबजोत ने शूटिंग के 10 मीटर एयर पिस्टल मिक्स्ड टीम इवेंट में ब्रॉन्ज मेडल जीता। भारत के शूटरों ने ली वोन्हो और ओह ये जिन की कोरियाई जोड़ी को हराया। इससे पहले रविवार को मनु भाकर महिलाओं की 10 मीटर एयर पिस्टल ब्रॉन्ज मेडल जीतने के बाद ओलिंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला निशानेबाज बनी थी, जबकि अब वह एक ही ओलिंपिक में दो मेडल जीतने वाली पहली भारतीय बन गई हैं। भारतीय स्टार जोड़ी ने साउथ कोरिया की ली ओन्हो और ओह ये जिन की जोड़ी को 16-10 के बड़े अंतर से हराया। यह भारत के लिए ऐतिहासिक पल है। शूटिंग में इससे पहले किसी शूटर ने दो मेडल नहीं जीते थे, लेकिन मनु ने कमाल कर दिया है। मनु आजादी के बाद दो पदक जीतने वाली पहली भारतीय बन गई हैं।

'लव जिहाद' के खिलाफ सख्त हुई योगी सरकार

विधानसभा में पेश हुआ लव जिहाद के खिलाफ बिल, मिलेगी सख्त सजा

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी की योगी सरकार ने राज्य में लव जिहाद को रोकने और इसको बढ़ावा देने की कोशिश करने वालों के खिलाफ सख्त कदम उठाने जा रही है। विधानसभा के मानसून सत्र की शुरुआत में ही सीएम योगी आदित्यनाथ की सरकार ने एक विधेयक लाकर साफ कर दिया कि सरकार इसके प्रति बेहद गंभीर है। विधानसभा में मंगलवार को यूपी विधि विरुद्ध धर्म संपरिवर्तन प्रतिषेध (संशोधन) विधेयक पेश करके सरकार ने कहा कि अब 'लव जिहाद' पर उम्रकैद की सजा होगी। संशोधित अधिनियम में छल कपट या जबर्दस्ती कराये गये धर्मांतरण के मामलों में कानून को पहले से ज्यादा कड़ा बनाया गया है।

सो रहे थे लोग और शुरू हो गया मौत का 'तांडव'

केरल के वायनाड में लैंडस्लाइड, 114 लोगों की मौत

खौफनाक था तबाही का मंजर, संभलना भी मुश्किल

वायनाड़ (एजेंसी)। वायनाड में आधी रात को तीन बार हुए लैंडस्लाइड से हर तरफ तबाही है। मौतों का आंकड़ा 114 के पार पहुंच गया है। केंद्र सरकार ने मृतकों और घायलों की मदद का ऐलान किया है। केरल के वायनाड में भारी बारिश के चलते मंगलवार तड़के बड़ा हादसा हो गया। तीन जगहों पर भूस्खलन के चलते अब तक 114 लोगों की मौत की खबर है। इसके अलावा करीब 100 लोग घायल हैं, जिन्हें निकाला गया है। इन भूस्खलनों की वजह बीते 2-3 दिनों से जारी भारी बारिश है। इतनी भारी मात्रा में अचानक हुई बारिश से मिट्टी कटती चली गई और फिर इतना बड़ा हादसा ढाई बजे रात को हुआ, जिसका किसी को अंदाजा नहीं था। अब इस हादसे के कारणों का एक्सपर्ट पता लगा रहे हैं। एक्सपर्ट्स का कहना है कि वायनाड के जिस मेप्पादी इलाके में लैंडस्लाइड की घटनाएं हुई हैं, वहां बड़े पैमाने पर मिट्टी का क्षरण बीते कुछ सालों में हुआ है। इसके चलते यह हादसा हुआ है और अचानक मिट्टी खिसक गई। दरअसल बीते कुछ सालों में इस इलाके से पेड़ों को बड़े पैमाने पर काटा गया है। इस वन क्षेत्र में बड़े वृक्षों को काटकर फसलें उगाने की कोशिशें हुई हैं। इसके चलते मिट्टी का क्षरण तेजी से हुआ है और लैंडस्लाइड जैसी घटना हो गई।

केरल सरकार ने पांच सदस्यीय कमेटी का किया गठन

केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने घोषणा की कि स्थिति से निपटने और चल रहे राहत प्रयासों की देखरेख करने के लिए पांच मंत्रियों का एक प्रतिनिधिमंडल वायनाड में भेजा गया है। मंत्रियों को कहा गया है कि वह राहत कार्यों से तुरंत अवगत कराएं और बेघर हुए लोगों को रिलीफ़ कैंप की ओर भेजें।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में मंत्रि-परिषद में हुए अहम फैसले

40 लाख लाड़ली बहनों को 450 रुपए में गैस सिलेंडर

● आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का 2 लाख का बीमा; दिव्यांगता पर मिलेंगे 1 लाख ● प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा एवं सुरक्षा बीमा योजना के बीमा कवर का लाभ देने की स्वीकृति

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में आज मंत्रि-परिषद की बैठक मंत्रालय में हुई। मंत्रि-परिषद द्वारा सक्षम आंगनवाड़ी एवं पोषण 2.0 योजना अंतर्गत प्रदेश की निर्धारित आयु वर्ग की पात्रता अनुसार आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, मिनी आंगनवाडी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं को प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा एवं प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के बीमा कवर का लाभ देने के सम्बन्ध में स्वीकृति दी गई। स्वीकृति अनुसार आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं मिनी, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं को सुरक्षा कवर प्रदान करने के उद्देश्य से योजनाओं के संचालन के लिए वित्तीय वर्ष 2024-25 एवं 2025-2026 में प्रतिवर्ष क्रमशः राशि रूपये 3 करोड़ 63 लाख केंद्रांश एवं 2 करोड़ 42 लाख रूपये राज्यांश के होंगे। इस प्रकार 2 वित्तीय वर्ष के लिये कुल राशि 12 करोड़ 10 लाख रूपये की स्वीकृति प्रदान की गई। मध्यप्रदेश में 40 लाख लाड़ली बहनों को 450 रुपए का रसोई गैस सिलेंडर दिया जाएगा। इससे ऊपर की राशि की भरपाई राज्य सरकार करेगी। यह निर्णय मंगलवार को भोपाल में हुई कैबिनेट की बैठक में लिया गया। बैठक में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता और सहायिकाओं को प्रधानमंत्री जीवन ज्योति योजना और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना का लाभ देने का निर्णय भी लिया गया।

कैबिनेट की बैठक के बाद नगरीय विकास और आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने बताया कि प्रदेश में 97 हजार 300 आंगनबाड़ी कार्यकर्ता हैं। दोनों बीमा योजनाओं का प्रीमियम राज्य सरकार भरेगी। प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना 18 से 50 वर्ष आयुवर्ग की आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, मिनी आंगनवाड़ी कार्यकर्ता तथा आंगनवाड़ी सहायिका को राशि 436 रुपये प्रतिहितग्राही वार्षिक प्रीमियम के भुगतान से, किसी कारण से मृत्यु की दशा में 2 लाख रुपये का जीवन जोखिम कवर किया जाएगा।

लाड़ली बहनों को 450 रूपये में गैस रिफिल भुगतान योजनाओं का अनुमोदन

मंत्रि-परिषद द्वारा प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के समस्त गैस कनेक्शनधारी उपभोक्ताओं और गैर पीएमयूबाय अंतर्गत गैस कनेक्शनधारी लाड़ली बहनों को गैस सिलेंडर रिफिल पर अनुदान राशि के भुगतान के लिये दो योजनाओं का अनुमोदन किया गया है। वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिये योजना क्रमांक 1370 रसोई गैस सहायता योजना (उज्ज्वला) एवं योजना क्र. 1387 रसोई गैस सहायता योजना (गैर उज्ज्वला) की स्वीकृति दी गई है। अब वित्तीय वर्ष 2024-25 से इस योजनांतर्गत हितग्राहियों को राशि का भुगतान इन योजनाओं से किए जाने का प्रावधान किया गया।

महिला को जिंदा जलाया 40 प्रतिशत झुलसी

शादी का प्रपोजल ठुकराने पर आरोपी ने पेट्रोल डालकर खुद को भी लगाई आग

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में एकतरफा प्यार में सनकी ने महिला को जिंदा जलाने की कोशिश की। शादी का प्रपोजल ठुकराने से गुस्साए आरोपी ने पहले तो खुद पर पेट्रोल डाला, इसके बाद महिला पर पेट्रोल डालकर आग लगा दी। बाद में खुद को भी आग लगा ली।

महिला 42 प्रतिशत तक झुलस गई है। आरोपी भी 25 प्रतिशत तक झुलसा है। महिला शादीशुदा है और तीन बच्चों की मां है। उसकी हालत नाजुक बताई जा रही है। वारदात रांझी के मस्ताना चौक के पास मंगलवार दोपहर 12 बजे की है। महिला 42 प्रतिशत तक झुलस गई है।

- **पति से अलग मायके में रहती है महिला-** 40 साल की महिला की फूल-माला की दुकान है। 15 साल पहले उसकी घमापुर में शादी हुई थी। 4 साल से पति से अलग रह रही है। 12 साल की बड़ी बेटी पिता के साथ जबकि 9 साल की बेटी और 7 साल का बेटा उसके साथ रहते हैं। पति से अलग होने के बाद शुरुआत में महिला किराए के मकान में रही, फिलहाल मां-पिता के साथ रह रही है।
- **महिला की दुकान पर बैठता था आरोपी-** आरोपी ऑटो ड्राइवर नरेंद्र पंजाबी (40) अविवाहित है। महिला की दुकान के पास उसका आना-जाना होता था। दोनों में बातचीत होने लगी। वह दुकान पर आकर बैठने लगा। मंगलवार को भी वह दुकान पर पहुंचा और महिला के सामने शादी करने की बात रखी। मना करने पर नाराज हो गया। वह पेट्रोल से भरी बोतल साथ लाया था।आसपास के लोगों ने आग बुझाई, इसके बाद दोनों को रांझी अस्पताल में भर्ती कराया गया।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 38.5 °c | न्यूनतम 33°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ बुधवार,31 जुलाई 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की दबंगई का जल्द होगा अंत !

भारत समेत क्वाड देशों ने दिया सीधा संदेश,तिलमिलाया ड्रैगन

टोक्यो (एजेंसी)। चीन पर नकेल कसने के लिए बने भारत और अमेरिका समेत चार प्रमुख देशों के क्वाड गठबंधन के विदेश मंत्रियों ने जापान की राजधानी टोक्यो में मुलाकात की, जिसमें स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए प्रतिबद्धता जताई गई।

बैठक में विदेश मंत्री एस. जयशंकर, अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन, जापान की विदेश मंत्री योको कामिकावा और ऑस्ट्रेलिया की विदेश मंत्री पेनी वोंग ने भाग लिया। विदेश मंत्रियों ने कहा कि क्वाड हिंद और प्रशांत महासागरों में समुद्र कानून पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीएलओएस) के अनुरूप एक स्वतंत्र एवं मुक्त समुद्री व्यवस्था विकसित करने के लिए कटिबद्ध है। बैठक में क्वाड देशों के विदेश मंत्रियों ने चीन को साफ संदेश देते हुए इस बात पर सहमति जताई कि हिंद-प्रशांत देश में किसी की दबंगई स्वीकार नहीं की जाएगी। एक संयुक्त बयान में क्वाड के विदेश मंत्रियों ने कहा, हम स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत के लिए 'क्वाड' की दृढ़ प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हैं। टोक्यो में इस बात पर जोर दिया गया कि सभी देश मुक्त और खुले हिंद प्रशांत क्षेत्र की ओर काम करेंगे। एक महत्वपूर्ण कदम के तहत समूह ने सोमवार को अपने महत्वाकांक्षी हिंद-प्रशांत समुद्री क्षेत्र जागरुकता (आईपीएमडीए) कार्यक्रम को हिंद महासागर क्षेत्र तक विस्तारित करने की योजना की घोषणा की। यह घोषणा हिंद महासागर में चीन के बढ़ते प्रभाव को लेकर नई दिल्ली की चिंताओं के बीच की गई। एक संयुक्त बयान में विदेश मंत्रियों ने कहा कि क्वाड हिंद और प्रशांत महासागरों में समुद्र कानून पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के अनुरूप एक स्वतंत्र एवं मुक्त समुद्री व्यवस्था विकसित करने के लिए कटिबद्ध है।

संक्षिप्त समाचार

'ब्लेम गेम' के शोर के बीच धुंधली हो जाएगी दिल्ली की कहानी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के ओल्ड राजेन्द्र नगर में हुए हादसे को लेकर संसद के दोनों सदनों में हंगामा हुआ। इस बीच गृह मंत्रालय ने घटना की जांच के लिए एक हाई-लेवल कमेटी गठित कर दी है। संसद में एक तरफ जहां सत्ता

पक्ष ने आम आदमी पार्टी को घटना का जिम्मेदार बताया तो वहीं विपक्ष ने केंद्र सरकार पर जमकर निशाना साधा। राज्यसभा में सभापति जगदीप धनखड़ ने कहा कि कोचिंग सेंटरों की संस्कृति किसी 'गैस चैंबर' से कम नहीं हो गई है। इस दौरान उन्होंने कोचिंग संस्थानों पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि इससे शिक्षा का बाजारीकरण हो रहा है।

वजन घटाने वाले अमेरिकी इंजेक्शन को भारत में मंजूरी

अहमदाबाद (एजेंसी)। कॉमनमैन के इर्द-गिर्द दो सवाल घूमते हैं। 1. तेजी से पैसा कैसे कमाए। 2. वजन कैसे कम करें। हम पहले प्रश्न का उत्तर कुछ समय बाद एक लेख में देने का प्रयास करेंगे, लेकिन हम दूसरे प्रश्न का उत्तर यहां देंगे। भारत की बात छोड़िए, अगर हम गुजरात की ही बात करें तो यहां मोटे लोगों की भरमार है। पुरुष पिलपिले होते हैं, कमर के

बाहर चर्बी लटकी रहती है, महिलाओं में भी मोटापा अधिक होता है। एक बार जब शरीर मोटा हो जाता है तो कई अन्य बीमारियां भी घेर लेती हैं। वजन कम करने के केवल दो ही तरीके हैं। घूमना और डाइटिंग करना। अब एक तीसरा और आसान रास्ता खुल गया है। वो तरीका है एक छोटा सा इंजेक्शन।

राजस्थान के विधायकों की सैलरी हर साल 10 फीसदी बढ़ेगी

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान में विधायकों के वेतन, भत्ते और पूर्व विधायकों की पेंशन अब सरकारी कर्मचारियों की तरह हर साल बढ़ेगी। इसके लिए हर बार विधानसभा में बिल पास नहीं करवाना होगा। सोमवार को सीएम भजनलाल शर्मा ने विधानसभा में बजट पास होने से पहले फाइनेंस और एप्रोप्रिएशन बिल

(वित्त एवं विनियोग विधेयक) पर हुई बहस का जवाब देते हुए इसकी घोषणा की है। सीएम भजनलाल ने कहा- कई विधायकों और पूर्व विधायकों ने वेतन और पेंशन को लेकर उनसे आग्रह किया था। विधायकों के वेतन और पूर्व विधायकों की पेंशन में बढ़ोतरी कितनी होगी, यह आगे तय होगा। मोटे अनुमान के अनुसार, महंगाई के हिसाब से कम से कम 10 प्रतिशत सालाना या इसके आसपास का इजाफा तय माना जा रहा है।

सीएम यादव ने बताया कैसे कुलपति को कुलगुरु बनाया

इंदौर में सज्जन मुझसे बोले-मैं कुलपति का पति, सोचिए, मेरी हालत क्या हुई होगी

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भोपाल में सीएसआईआर-एम्प्री (एडवांस मटेरियल एंड प्रोसेसेस रिसर्च इंस्टीट्यूट) में दो दिवसीय राष्ट्रीय हिन्दी विज्ञान सम्मेलन का शुभारंभ किया। इस दौरान उन्होंने कुलपति के पद को कुलगुरु करने की पूरी कहानी सुनाई...। सीएम ने कहा कि ये देश का दुर्भाग्य है और चुनौती पूर्ण, लेकिन आनंद का विषय है। हम गुलामी के लंबे काल से निकलकर गए हैं। गुलामी ने हमारे अंदर के गुणों को पहचानने के लिए कष्ट खड़ा कर दिया। कई बार दूसरा कोई मजाक हममें से ही बनाता है।

जब मैं शिक्षा मंत्री था, तब हिन्दी ग्रंथ अकादमी की बैठक में सभी वाइस चांसलर्स के साथ सोचा कि हमारी डिग्रियां, मेडिकल, इंजीनियरिंग की डिग्रियों का पाठ्यक्रम हिन्दी में क्यों नहीं होना चाहिए। मुझे अच्छा लगा कि कभी जिनको कुलपति कहा जाता था वो सब ग्रंथ अकादमी में आते थे। इनको हमने कुलगुरु कहा है। ये उस मानसिकता का ही फर्क है जो कुलगुरु और कुलपति में होती है।

सीएम ने कहा- मैं जब शिक्षामंत्री था तब इंदौर यूनिवर्सिटी कैंपस में गया। प्रोफेसर रेणु जैन अभी भी कुलगुरु हैं। मैं उनसे मिला संयोग से उनके पति मिले। उन्होंने कहा आपका मेरा परिचय नही हैं। मैंने कहा-बताइए तो वो बोले मैं कुलपति का पति हूं। आप बताओ मेरी क्या हालत हुई होगी। उन्होंने कोई अहंकार में नहीं बोला। लेकिन, वो यथार्थ भी था। लेकिन, भाषा में क्या बोला गया उसका असर कैसा होगा। ये उस समय समझने के लिए पर्याप्त था। मैंने कहा ये नहीं चलेगा। हमने खोजबीन की तो बताया गया कि कुलगुरु रख सकते हैं। हमने कहा इससे अच्छी क्या बात हो सकती है। कुलपति के बजाए कुलगुरु कहते हैं। सीएम डॉ. मोहन यादव ने दो दिवसीय राष्ट्रीय हिन्दी विज्ञान सम्मेलन का उद्घाटन किया। उन्होंने सीएसआईआर की किताब अनुसंधान संदेश और सम्मेलन की स्मारिका का विमोचन किया।

अंशकालिक शिक्षकों को गुरुजी कहा जाने लगा

सीएम ने कहा- जब कुलगुरु कहा तो हमारे यहां आजादी के बाद कुछ परंपरा अच्छी हुई लेकिन कुछ परंपरा अटपटी भी खड़ी हो गई। शिक्षक दिवस पर डॉ. राधाकृष्णनन जी की स्मृति में होना अच्छी बात है लेकिन, गुरुपूर्णिमा जैसे हमारे त्योहारों को मनाने के लिए बड़ा संकोच होता है। गुरुजी कहते-कहते राजनीति में कुछ गड़बड़ तो हो ही जाता है। अंशकालिक शिक्षक लगा दिए तो उनका नाम गुरुजी कर दिया। तो गुरु पूर्णिमा में कौन जाएगा ये बड़ा संकट है। उच्च शिक्षा वाले कहते हम नहीं आएंगे, ये शिक्षकों में आ जाएंगे। शिक्षकों के पास जाओ तो वो कुछ और बात बताते।

किसी को अपने प्रभाव से दबाना, डराना नहीं चाहते

सीएम ने कहा- हमारी हजारों साल से परंपरा रही है। हम किसी को दबाना, ड़राना नहीं चाहते। किसी को गिराना नहीं चाहते। किसी को अपने प्रभुत्व में लाकर अपने नीचे नहीं बिठाना चाहते। लेकिन, ये चीजें करने की बात करेंगे तो सब क्षेत्रों की महत्ता बढ़ेगी। उनमें विज्ञान सबसे पहले आता है। विज्ञान में हमारी भी कठिनाई है पढ़कर कागज की डिग्री मिलती है। लेकिन, अपनी स्व भाषा में जो बात समझ सकते हैं। देशी भाषा से जैसे ही हम विदेशी भाषा में जाते हैं तो कई बार अर्थ बदल जाता है।

बिना पढ़े-लिखे लोगों को अपने अविष्कारों को मिलेगा मंच

सीएम ने कहा- विज्ञान में हिन्दी को प्रोत्साहन देने का बड़ा अभियान शुरु हुआ। ये चौथा सम्मेलन है। हमने तो कहा है कि ये आने वाले समय में ये अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होना चाहिए। क्योंकि स्व भाषा को जानने वाले विद्वान अगर रिसर्च का हिन्दी में अनुवाद करते हैं तो पूरे देश में वो सहज रूप लोकप्रिय होता। लोगों की जिज्ञासाएं विज्ञान के प्रति बढ़ेगी। ऐसी सभी रिसर्च को बढ़ावा देने के लिए हमने कहा है कि यदि कोई पढ़े-लिखे नहीं हैं। वो भी अपने कोई अनूठे अविष्कार लेकर आते हैं तो मैंने विज्ञान भारती से आह्वान किया है कि वो इसका प्रबंधन करें कि अपनी प्रतिभा के बल पर जो भी होनहार लोग हैं वो इस तरह के आयोजन में भागीदार बनें।

गर्ल्स कॉलेज की 4 छात्रा लापता, दो सगी बहनें

पिता से फोन पर कहा- अभी शादी नहीं करना, पढ़ना है; मुंबई में मिली लोकेशन

दमोह (नप्र)। दमोह के कमला नेहरू गर्ल्स कॉलेज की 4 छात्राएं लापता हो गईं। इनमें दो सगी बहनें हैं। सोमवार को वे घर से कॉलेज जाने का कहकर निकली थीं। पुलिस ने देर रात गुमशुदगी दर्ज कर कॉलेज के सीसीटीवी चेक किए, लेकिन छात्राएं कहीं नजर नहीं आईं। एक छात्रा ने मंगलवार को अपने पिता से फोन पर कहा, अभी शादी नहीं करना है। आगे की पढ़ाई के लिए जा रही हूं।

दमोह कोतवाली टीआई आनंद सिंह के अनुसार किरण पिता धनीराम पटेल (18) निवासी बीजौरी, किरण पिता भगवत पाल (18) सीता नगर के साथ पिंकी (19) और सुनीता (18) पिता लट्टू अहिरवार लापता हुई हैं। चारों फर्स्ट ईयर में थीं। ये गांव से बस से कॉलेज आना-जाना करती थीं।

सोमवार रात तक उनकी लोकेशन दमोह ही आ रही थी। बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन समेत सभी मुख्य स्थानों के सीसीटीवी फुटेज खंगाल रहे हैं। सीएसपी अभिषेक तिवारी ने बताया कि छात्राओं की तलाश के लिए टीमें बनाई गई हैं। छात्राओं की लोकेशन मुंबई के दादर स्टेशन पर मिली है। पुलिस की एक टीम वहां के लिए रवाना होगी।

5 दिन पहले कहा था- भोपाल जाकर पढ़ना चाहती हूं- सीता नगर से गायब दो सगी बहनें सुनीता और पिंकी के पिता लट्टू अहिरवार ने बताया कि 5 दिन पहले बेटी ने कहा था पापा मुझे पढ़ने बाहर जाना है। मैंने पूछा- कहां जाना है, तो उसने कहा था- भोपाल। मैंने कहा था कि यहीं रहकर पढ़ो। कहीं बाहर नहीं जाना है। दूसरी बच्चियों ने भी अपने से पिता यही कहा था कि उन्हें पढ़ने भोपाल जाना है। मेरी बेटी के फोन से दूसरी छात्रा पूजा ने अपने पिता से बात की है। उसने कहा- पापा हम बहुत दूर निकल आए हैं, हमें मत खोजना। आगे की पढ़ाई करने के लिए जा रही हैं।

बेटी ने जॉब के साथ-साथ पढ़ाई करने की बात कही

सीता नगर की रहने वाली पूजा ने मंगलवार सुबह अपने पिता को वाट्सएप कॉल किया था। पूजा के पिता धनीराम पटेल ने बताया कि चारों छात्राएं 8वीं क्लास से साथ में पढ़ रही हैं। सुबह बेटी का कॉल आया था। उसने कहा- पापा आप परेशान मत होइए। अभी घर जाइए, मैं आगे की पढ़ाई के लिए बाहर निकल गई हूं। मैं भागकर नहीं गई हूं। उनसे कहा- हम चारों का मन है कि जब हमने इतनी पढ़ाई की है तो कुछ अच्छा करें। इसके लिए हमें और आगे पढ़ना होगा। हम नौकरी के साथ-साथ पढ़ाई करेंगे। मैंने उसे कहा- बेटा तुम वापस आ जाओ। यहां तो हम तो तुम्हें पढ़ा ही रहे हैं। तुम चारों का हम जहां कहोगे, एडमिशन करवा देंगे। तुम ऐसे भागकर क्यों चली गईं। वापस आ जाओ। धनीराम ने बताया कि पूजा ने कुछ मैसेज भी भेजे हैं। उसने कहा कि वह अभी शादी नहीं करना चाहती। उसे आगे और पढ़ाई करनी है, इसी कारण वह घर से चली गई है। उसने यह भी कहा है कि पढ़ाई के लिए जब भी परिवार की मदद लगेगी, वह संपर्क करेगी।

मालगाड़ी से टकराने के बाद बेपटरी हुई हावड़ा-मुंबई मेल

18 डिब्बे पटरी से उतरे, अब तक 2 की मौत,20 घायल

जमशेदपुर (एजेंसी)। झारखंड के जमशेदपुर में मंगलवार सुबह 3.43 बजे 12810 मुंबई-हावड़ा मेल पहले से डिरेल हुई मालगाड़ी से टकरा गई। घटना के बाद मेल की 18 बोगियां पटरी से उतर गईं। हादसे में 2 लोगों की मौत हो गई, जबकि 20 से ज्यादा लोग घायल बताए जा रहे हैं। पैसेंजर ट्रेन का इंजन डिरेल हुई मालगाड़ी की बोगी से टकराया। इसके बाद ट्रेन के 18 डिब्बे पटरी से उतर गए। हादसा राजखरसवां और बड़ाबाम्बो के बीच हुआ। रेलवे ने मृतकों के परिजनों को 10-10 लाख का मुआवजा देना का ऐलान किया है। वहीं गंभीर रूप से घायल 6 यात्रियों को 5-5 लाख का मुआवजा दिया जाएगा। चक्रधरपुर रेल मंडल के सीनियर डीसीएम आदित्य कुमार चौधरी ने बताया कि रेलवे की दुर्घटना राहत ट्रेन और एंबुलेंस घटनास्थल पर मौजूद है। घायलों को चक्रधरपुर स्थित रेलवे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इस दुर्घटना की पुष्टि करते हुए चक्रधरपुर रेल मंडल के सीनियर डीसीएम आदित्य कुमार चौधरी ने कहा कि घटना की सूचना के बाद चक्रधरपुर रेल मंडल के अधिकारी चक्रधरपुर रेल मंडल से रिलीफ ट्रेन और जिला प्रशासन के द्वारा तमाम एंबुलेंस घटनास्थल की ओर भेजी गई।

यूपी को सिर्फ प्रधानमंत्री मिले, और कुछ भी नहीं

अखिलेश बोले-10 साल में हम वहीं के वहीं खड़े हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के मानसून सत्र का मंगलवार को सातवां दिन था। लोकसभा में अखिलेश यादव ने कहा- मेक इन इंडिया के नाम पर यूपी को सिर्फ प्रधानमंत्री ही मिले हैं। कोई बड़ा प्रोजेक्ट नहीं मिला। 10 साल बाद भी हम वहीं के वहीं खड़े हैं।

इससे पहले एएपी सांसदों ने दिल्ली के एलजी को बर्खास्त करने की मांग की। उन्होंने संसद के बाहर प्रदर्शन किया। अखिलेश बोले- यूपी सरकार ने बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे बनाया था। प्रधानमंत्री उद्घाटन करके आ गए। उद्घाटन के कुछ दिन बाद से ही वह रिपेयर मांग रहा है। उसके लिए रिपेयर का पैसा नहीं मिल रहा है। यह एक्सप्रेसवे 6 लेन नहीं 4 लेन है। इसे सतना से जोड़कर हरिद्वार तक ले जाना चाहिए, तब इस एक्सप्रेसवे की उपयोगिता बढ़ेगी। अखिलेश बोले- प्रधानमंत्री ने जब जनकपुर से एक झंडी दिखाई थी, जिसके बाद वहां से अयोध्या तक बस आई थी।

जेपी नड्डा के बाद देवेंद्र फडणवीस बनेंगे भाजपा के अध्यक्ष !

- पीएम मोदी संग मीटिंग ने बढ़ाई हलचल, अगस्त के अंत तक होगा ऐलान

नई दिल्ली (एजेंसी)। जगत प्रकाश नड्डा के बाद भारतीय जनता पार्टी की कमान कौन संभालेगा। इसे लेकर चर्चाओं का दौर जारी है। इसी बीच अटकलें लगाई जाने लगी हैं कि पार्टी के शीर्ष पद पर महाराष्ट्र का नेता बैठ सकता है। हालांकि, इसे लेकर आधिकारिक तौर पर कुछ नहीं कहा गया है। दरअसल, महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की शनिवार को हुई मुलाकात ने चर्चाओं को हवा दे दी है। कहा जा रहा है कि अगस्त के अंत तक भाजपा को नया अध्यक्ष मिल सकता है।

कर्नाटक सरकार में होगा बड़ा फेरबदल ! शुरू हुई तैयारी

- दिल्ली में महामंथन, डीके शिवकुमार पर भी हो सकता है फैसला

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक में लोकसभा चुनाव के बाद से बीजेपी कांग्रेस सरकार पर ज्यादा ही हमलावर है। बीजेपी और जेडीएस के विपक्ष से निपटने के लिए दिल्ली में मंगलवार को महामंथन होने वाला है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं के साथ होने वाली बैठक में मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार भी शामिल होंगे। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और अन्य कई सीनियर नेता आगे की रणनीति तय करेंगे। जानकारी के मुताबिक कर्नाटक सरकार में बड़े फेरबदल पर भी फैसला किया जा सकता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक कर्नाटक सरकार में कुछ मंत्रियों के पोर्टफोलियो में भी परिवर्तन किया जा सकता है। मंत्रिमंडल में बदलाव की चर्चा काफी दिनों से चल रही है। महर्षि वाल्मीकि एसटी डिवेलपमेंट कॉर्पोरेशन के 84 करोड़ से ज्यादा रुपये के अवैध ट्रांसफर को लेकर ईडी कार्रवाई कर रही है। इस जांच में विधायक बी नागेंद्र की गिरफ्तारी हो चुकी है और उन्हें हटा दिया गया है।

नगर निगम इंदौर का बजट पेश

पानी पर सौ रुपए बढ़ाए,संपत्ति कर में 3 से 7 रुपए की बढ़ोतरी, कचरा शुल्क पर कोई असर नहीं

इंदौर (एजेंसी)। महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने इंदौर नगर निगम का मंगलवार को वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए बजट पेश किया। इस बार आठ हजार करोड़ से अधिक राशि का बजट प्रावधान है। 15 साल बाद टैक्स में बढ़ोतरी की जा रही है। महापौर ने कहा कि चलित पाठशाला शुरू की जाएगी, कुछ ब्रिज बनाए जाएंगे, ठेकेदारों को समय पर भुगतान किया जाएगा। इस बार दो प्रतिशत ग्रीन सेस कर भी लिया जाएगा। अगले बजट से सिंगल आईडी से टैक्स वसूली का काम शुरू कर दिया जाएगा।

- **संपत्ति कर जलकर बढ़ाया, कचरा कलेक्शन में कोई बढ़ोतरी नहीं-** महापौर ने कहा 15 साल में करों की वृद्धि नहीं हुई, जबकि 29 गांव और शामिल हुए हैं। इसलिए उनका विकास भी जरूरी है। इस बार संपत्ति कर में व्यवसायिक रूप से अधिकतम 7 रुपए, रहवासी इलाकों में जोन वाइज अधिकतम 3 रुपए की बढ़ोतरी प्रस्तावित है। जल कर में फ्लैट 100 रुपए की बढ़ोतरी होगी। वहीं, डोर टू डोर कचरा कलेक्शन में कोई बढ़ोतरी नहीं की गई है। लेकिन ऐसी संस्थाएं जो एक से डेढ़ टन से ज्यादा कचरा प्रतिदिन निकालती हैं उनका टैक्स बढ़ाया जाएगा। पानी के व्यवसायिक उपयोग पर भी टैक्स बढ़ेगा। उषा, आशा सहित अन्य महिला सुपरवाइज़र को सिटी बस की यात्रा में 75 प्रतिशत की छूट मिलेगी।बाहर से आने वाले विद्यार्थियों को सिटी बस में 25प्रतिशत की छूट मिलेगी।सम्मेलन शुरू होते ही कांग्रेस पार्षदों ने किया हंगामा, एक दिन के लिए निलंबितइससे पहले सम्मेलन शुरू होते ही तख्तियां लेकर पहुंचे कांग्रेस पार्षदों ने हंगामा शुरू कर दिया। सभापति मुन्नालाल यादव ने कांग्रेस पार्षदों को चेतावनी दी की तख्तियां बाहर कर दें नहीं तो सभी को निलंबित कर दूंगा। लेकिन कांग्रेस पार्षद नहीं माने। वे लगातार नारेबाजी करते रहे। और तख्तियां लहराते रहे।सभापति ने नेता प्रतिपक्ष चिंटू चौकसे को पांच मिनट का समय दिया। इसके बाद भी वे नहीं माने तो उन्हें दिनभर के लिए निलंबित कर दिया। वे सदन से बाहर निकलकर धरने पर बैठ गए।इसके बाद विधायक रमेश मेंदोला और महेंद्र हार्डिया भी सदन से चले गए। दोनों ने मीडिया से बात करने से मना कर दिया। बताया जा रहा है कि इंदौर के विधायक जल, संपत्ति और स्वच्छता कर बढ़ाए जाने के विरोध में हैं।पानी की लागत हमने फ्लैट 100 रुपए बढ़ाएंगे। स्वच्छता में कोई कर नहीं बढ़ाया

गया है। संपत्तिकर में पॉश इलाकों के रेट झोन बदले जाएंगे। इंदौर के लिए दो प्रतिशत ग्रीन सेस कर बढ़ाने का प्रावधान भी इस बार किया गया है।

- **सभापति यादव ने बताया इसलिए निलंबित करना पड़ा-** बजट सम्मलेन पूरा होने के बाद निगम सभापति मुन्नालाल यादव ने मीडिया से बात की। कांग्रेस पार्षदों के निलंबन पर उन्होंने कहा कि बार-बार बीच में बोलना, तख्तियां लेकर आने की सदन में अनुमति नहीं है। इसलिए उन्हें बाहर करना पड़ा। उन्हें केवल आज के लिए निलंबित किया गया था। कल वे बजट चर्चा में भाग ले सकेंगे।
- **नेता प्रतिपक्ष बोले- जनता को जवाब नहीं देना चाहते महापौर, धरने पर बैठे-** इंदौर नगर निगम के नेता प्रतिपक्ष चिंटू चौकसे ने दिनभर के लिए निलंबित किए जाने पर बाहर निकलकर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि हम बजट में चर्चा करना चाहते थे। लेकिन भाजपा वाले जनता को जवाब देने को तैयार नहीं हैं। नगर निगम में लगातार भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। जनता इसका जवाब मांग रही है। हम भी वही पूछ रहे थे। पर कोई जवाब नहीं दिया। बजट सत्र से निलंबित होने के बाद कांग्रेसी पार्षद धरने पर बैठ गए।काले कपड़े पहनकर बजट सत्र में पहुंचे कांग्रेस पार्षद लगातार नारेबाजी कर रहे थे। जैसे ही महापौर बजट सत्र पर बोलने के लिए खड़े हुए कांग्रेस ने नारेबाजी तेज कर दी।
- **शहीदों को श्रद्धांजलि के बाद सभा पांच मिनट के लिए स्थगित-** कांग्रेस पार्षद कमल वाघेला ने कहा कि पाकिस्तान परस्त इस्लामिक जेहादी मानसिकता से भरे हुए आतंकवादियों के हमले में शहीद हुए सैनिकों को श्रद्धांजलि दी। इससे महापौर और नेता प्रतिपक्ष चिंटू चौकसे ने भी देश की सभी प्रमुख हस्तियों के निधन पर उन्हें श्रद्धांजलि दी।
- **इन्हें बजट का महत्व समझ नहीं आ रहा है : महापौर पुष्यमित्र भार्गव-** महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने कहा कि इन्हें एक बार चिल्लाने का मौका दे दीजिए। इन्हें बजट का महत्व समझ नहीं आ रहा है। इसके बाद सभापति ने कहा कि पांच मिनट का समय देता हूं तख्तियां बाहर करें और बजट सत्र में शांति से शामिल हों। इसके बाद भी कांग्रेसी पार्षद नहीं माने। पांच मिनट पूरे होने के बाद सभापति मुन्नालाल यादव ने हंगामा कर रहे पार्षदों को दिन भर के लिए निलंबित कर दिया।
- **श्रद्धांजलि पर हंगामा, महापौर बोले- श्रद्धांजलि तो दे दें-** सभापति ने देश के सभी विख्यात हस्तियों को श्रद्धांलि देने के साथ सभा की कार्रवाई शुरू की। इस दौरान कांग्रेसी पार्षदों ने हंगामा करते रहे। महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने खड़े होकर कहा कि कम से कम श्रद्धांजलि तो दे दो। इस सदन की परंपरा का पालन तो करिए। इसके बाद कांग्रेस पार्षद चुप हुए।
- **भाजपा पार्षद बोले- ऐसा लग रहा है मानो मुस्लिम लीग के पार्षद आए हों-** बजट सत्र के दौरान कांग्रेसी पार्षद भ्रष्टाचार के खिलाफ लिखी तख्तियां लेकर पहुंचे तो सभापति ने कहा कि तख्तियां बाहर निकालो नहीं तो सभी को निलंबित कर दूंगा।
- **आमदनी 800, बजट 8 हजार करोड़-** नगर निगम की आय की बात करें तो विभिन्न प्रकार के टैक्स से 700 से 800 करोड़ की आय प्राप्त होती है। चुंगीकर सहित अन्य योजनाओं से मिलने वाली राशि की बात करें तो यह एक हजार करोड़ से अधिक नहीं होती है। बजट भले ही साढ़े सात से आठ हजार करोड़ का पेश किया जाता है, लेकिन निगम की इतनी आय ही नहीं होती है।

इंदौर एयरपोर्ट नेशनल रैंकिंग में टॉप-10 से फिर बाहर

इंदौर (एजेंसी)। एयरपोर्ट अथॉरटी ऑफ़ इंडिया द्वारा सोमवार देर रात जारी 2024 की दूसरी तिमाही की सर्वे रिपोर्ट में इंदौर फिर पिछड़ गया। एयरपोर्ट की सर्विस क्वालिटी और मेंटेनेंस में चूक के कारण इंदौर एयरपोर्ट अपनी रैंकिंग तो सुधार नहीं पाया। बल्कि 0.08 अंक और कम हो गए। इस वजह से इंदौर एयरपोर्ट टॉप 10 से बाहर होकर देशभर में 12वें नंबर पर कायम है। इंदौर इस सर्वे में शामिल होने वाला मध्य प्रदेश का इकलौता एयरपोर्ट है।पिछले साल इंदौर एयरपोर्ट 1 नंबर पर आया था। जिन 31 बिंदुओं पर सर्वे हुआ, उसमें लगभग सभी में एयरपोर्ट की नंबरिंग गिरी है। अधिकारियों से मिली जानकारी के अनुसार इस बार सबसे ज़्यादा नुक़सान फ्लाइट लेट होने के कारण हुआ है। वहीं रैंकिंग गिरने पर इंदौर एयरपोर्ट प्रबंधन का कहना है कि इस बार हमारे अंक

12वें नंबर पर क़ायम; 0.08 अंक और घटे; इस कैटेगरी में प्रदेश का एकमात्र एयरपोर्ट

कम हुए हैं, इसे हम ठीक करेंगे। गोवा का एयरपोर्ट 1 नंबर पर आया है। सर्वे रिपोर्ट हर तिमाही में जारी होती है जिसे जिसे एएसक्यू कहा जाता है। यानी एयरपोर्ट सर्विस क्वालिटी। इसी में इंदौर बुरी तरह पिछड़ रहा है।

फ्लाइट लेट होने में सबसे ज़्यादा नंबर कम हुए

बीते कुछ माह से इंदौर एयरपोर्ट पर दिल्ली, मुंबई और पुणे की उड़ानें लगातार लेट चल रही हैं। इस कारण यात्रियों की कनेक्टेड फ्लाइट छूट रही हैं। सर्वे के बिन्दु अन्य उड़ानों से कनेक्शन करने में आसानी में इंदौर एयरपोर्ट को 4.00 अंक मिले हैं, पिछली बार 4.27 अंक मिले थे। यानी पिछली बार से 0.27 अंक कम हुए हैं।बीते कुछ माह से इंदौर एयरपोर्ट पर दिल्ली, मुंबई और पुणे की उड़ानें लगातार लेट चल रही हैं। इस कारण यात्रियों की कनेक्टेड फ्लाइट छूट रही हैं। सर्वे के बिन्दु अन्य उड़ानों से कनेक्शन करने में आसानी में इंदौर एयरपोर्ट को 4.00 अंक मिले हैं, पिछली बार 4.27 अंक मिले थे। यानी पिछली बार से 0.27 अंक कम हुए हैं।

स्कूल में टीचर ने की छात्रा से छेड़छाड़

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में बिल्डर की बेटी से स्कूल में छेड़छाड़ का मामला सामने आया है। टीचर ने 11 साल की छात्रा से लंच टाइम में गंदी हरकत की। बिल्डर और उनकी पत्नी ने आरोपी टीचर के खिलाफ पुलिस में शिकायत की है। पुलिस ने छेड़छाड़ और पॉक्सो एक्ट की धाराओं में केस दर्ज कर लिया है।लसूड़िया टीआई तारेश सोनी ने बताया कि सोमवार को एक बिल्डर और उनकी पत्नी थाने आए थे। उनकी 11 साल की बेटी दोपहर में स्कूल से घर पहुंची। उसने अपनी मां को बताया कि गौरांग सर स्कूल के बरामदे में घूमते रहते हैं। वो आते-जाते देखते हैं।

इंदौर में मैडम से शिकायत की, नहीं लिया एक्शन; पॉक्सो में केस दर्ज

बच्ची ने मां को बताया, सोमवार को ब्रेक मिलने पर हम क्लास के बाहर निकले। तब गौरांग सर ने क्लास के बाहर दरवाजे पर मुझे रोक लिया। वे बात करने लगे। इस दौरान मुझे कई जगह बैड टच किया। मुझे यह सब अच्छा नहीं लग रहा था। जैसे-तैसे उनसे छूटकर भागी और क्लास में पहुंची।कुछ देर बाद लंच हुआ तब डर के मारे क्लास से बाहर नहीं निकली। लंच के बाद क्लास में आई टीचर को गौरांग सर की हरकत के बारे में बताया। मुझसे टीचर ने कहा कि क्लास होने के बाद एक्शन लेते हैं, लेकिन स्कूल ने ध्यान नहीं दिया। बच्ची स्कूल से घर पहुंची और पूरी घटना की जानकारी मां को दी। इसके बाद पिता को फोन पर सूचना देकर घर बुलाया। बेटी को साथ लेकर माता-पिता ने लसूड़िया थाने में स्कूल टीचर के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई।

आज भी रहेगा बादलों और रिमझिम वाला मौसम

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में रविवार को हुई ढाई इंच बारिश के बाद फुहारों और रिमझिम वाला मौसम रहा। दिनभर में सिर्फ 6 मिमी ही बारिश हुई। अभी तक सीजन की 14 इंच बारिश हो चुकी है जबकि जुलाई में 10 इंच बारिश हो चुकी है। जुलाई का कोटा पूरा करने के लिए ढाई इंच बारिश की जरूरत है जबकि एक दिन बाकी है। मौसम विभाग ने आज रिमझिम और हल्की बारिश के आसार जताए हैं। अगस्त के पहले हफ्ते में अच्छी बारिश के आसार हैं।रविवार को दिन का तापमान 24.8 (-4) डिग्री और रात का तापमान 23.6 (+1) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया था। इस दौरान ढाई इंच बारिश रिकॉर्ड की गई थी। सोमवार को भी मौसम में ठण्डक रही। दिन का तापमान 25.9 (-2) डिग्री और रात का तापमान 22.4 (0) डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। यानी रविवार को दिन और रात के तापान में 1 डिग्री का अंतर था। सोमवार को 3 डिग्री का अंतर रहा जबकि बारिश 6 मिमी रिकॉर्ड की गई। इस बार जुलाई के आखिरी हफ्ते में हुई बारिश से उम्मीद जरूर बंधी है लेकिन अब माह का कोटा पूरा होना मुश्किल लग रहा है। दरअसल बंगाल की खाड़ी से आया सिस्टम गुजरात की ओर चला गया है। ऐसे में बुधवार से तेज बारिश का अनुमान है। अब बारिश के मौसम के करीब दो माह बाकी हैं।

इंदौर में एक हफ्ते में आधे हुए टमाटर के रेट

हरी सब्जियों की कीमतों में भी गिरावट, दोगुना हुए सुरजना फली के भाव

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में एक हफ्ते पहले तक 1800 से 2000 रुपए कैरेट के भाव में बिकने वाले टमाटर के भाव आधे रह गए है। चोइथराम सब्जी मंडी में सोमवार को बोली लगने के साथ थोक टमाटर (700 से 900 रुपए प्रति कैरेट) 32-35 रुपए तक बिका। अब ग्राहकों को यही टमाटर 50-70 रुपए किलो तक के भाव में मिलने लगा है। दरअसल महाराष्ट्र के संगमनेर और नारायण गांव के साथ साउथ के कई हिस्सों में अच्छी बारिश और नई फसल के 15 दिन पहले आने से भाव में गिरावट आई है। इंदौर और आसपास के जिलों के किसानों ने भी बारिश में फसल खराब होने के चलते मंडी में सब्जी की अपूर्ति तेज कर दी है। सावन का महीना शुरू होने के बाद डिमांड कम और आवक अधिक होने से भाव में गिरावट आई है।

8 से 18 गाड़ी पर पहुंची आवक

करीब एक सप्ताह पहले अचानक भाव बढ़ने से मंडी में थोक टमाटर के भाव

2000 रुपए कैरेट तक पहुंच गए थे। 6-8 गाड़ी टमाटर की आवक ने रेट और बढ़ा दिए थे। अब मंडी में 16-18 गाड़ी टमाटर आने से भरपूर आवक के चलते कीमत आधी रह गई है। टमाटर व्यापारियों का मानना है कि रोजाना 25 गाड़ी की आवक होने के बाद भाव में और कमी आएगी और शहर की जरूरत के हिसाब से टमाटर मिलने लगेगा।

लोकल टमाटर की आवक से और कम होंगे भाव- साईं कृपा टमाटर कम्पनी के सन्नी विहरे ने बताया कि सितंबर-अक्टूबर तक खंडवा, राजगढ़, खरगोन, झाबुआ, आलीराजपुर से टमाटर की आवक शुरू हो जाएगी। इसके बाद महाराष्ट्र पर निर्भरता खत्म होगी। भाव भी 19 से 20 रुपए किलो हो जाएंगे।

इंदौर में नशे के आदी भाई ने बहन को जलाया

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के चंदन नगर में एक भाई ने बहन पर एसिड की बोतल उड़ेल दी। इससे बहन के हाथ, पैर और पीठ जल गई। पति ने उसे उपचार के लिए एमवाय में भर्ती कराया है। यहां उसका बर्न विभाग में उपचार चल रहा है। सोमवार को पुलिस ने महिला के बयान लिए। इसके बाद रात में आरोपी भाई पर केस दर्ज किया गया। चंदन नगर पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक सविता (38) पति विनोद परमार निवासी इंडोरामा सेक्टर-3 की शिकायत पर पुलिस ने उसके भाई सचिन पुत्र कमल किशोर परमार निवासी गंगा कॉलोनी के खिलाफ 124(1),296,351(3) बी.एन.एस की गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया है। आरोपी भाई ने पीड़िता के ऊपर एसिड की बोतल उड़ेल कर उसे जला दिया। पीड़िता ने सोमवार को दिए बयान में बताया कि वह गृहिणी है। सचिन उससे छोटा है। गंगा कॉलोनी चंदन नगर में हमारा पुश्तैनी मकान है। सचिन काफी नशा करता है। वह जुआं खेलने का भी आदी है। इस कारण से उसे पत्नी और बच्चों ने छोड़ दिया। उसने इन्ही हरकत के कारण अपने घर का सामान भी बेच दिया। अब वह घर बेचना चाहता है। उसे मैंने पहले भी रोका था। तब उसने घर नहीं बेचा। फिर से जिद करने के चलते उसे मकान नहीं बेचने दे रही। इस बात से वह काफी नाराज है।रविवार को अपने पति विनोद को लेकर भाई के घर उसे समझाने गई।

प्रतिबंधात्मक कार्रवाई न करने पर तीन एसीपी को कमिश्नर ने दी सख्त हिदायत

इंदौर (एजेंसी)। शहर में कानून व्यवस्था को लेकर पुलिस कमिश्नर राकेश गुप्ता ने दो बैठकें लीं। इसमें बड़ी चोरियों और स्नेचिंग की वारदातों पर अफसरों को सख्ती करने के निर्देश दिए। रात्रि गश्त बढ़ाने, चेकिंग में कठोरता लाने, आदतन अपराधियों की जमानत निरस्त कराने के लिए कहा। अपराधियों पर प्रतिबंधात्मक कार्रवाई न करने पर एसीपी गांधी नगर, सेंट्रल कोतवाली और एसीपी हीरानगर को सख्त हिदायत दी गई। वहीं परदेशीपुरा को कार्य में सुधार लाने के लिए कहा।कमिश्नर ने बैठक में सभी थानों में हुए अपराधों को लेकर चर्चा थी। बढ़ रही चोरियों और स्नेचिंग को लेकर गश्त बढ़ाने के निर्देश दिए। शहर में जनता की मदद से सीसीटीवी कैमरे बढ़ाने के लिए जनता से सीधे संवाद करने को कहा। वहीं, डीसीपी ट्रैफिक अरविंद तिवारी और एडिशनल डीसीपी तिवारी को शहर में नए बने एक्सिडेंट जोन को चिह्नित करने को कहा है। गुप्ता ने संपत्ति संबंधी अपराधों में बेहतर रिकवरी करने के लिए

डीसीपी जोन-2, डीसीपी जोन-4 और जोन-1 की टीम की प्रशंसा की। वहीं, आदतन अपराधियों के खिलाफ प्रभावी काम करने, बच्चों के गुमने के प्रकरणों की विवेचना को लेकर एसीपी विजय नगर कृष्णलाल चंदानी की सराहना की।टीआई विजय नगर सीबी सिंह और टीआई राऊ राजपाल सिंह राठौर के काम की प्रशंसा की। एसीपी आजाद नगर को जनता की मदद से कैमरे लगवाने पर सराहा। वीडियो फुटेज जुटाने में अच्छा काम करने पर तुकोगंज थाने के हेड कांस्टेबल विनोद नागर और कांस्टेबल गरिमा को इनाम दिया। वहीं, पश्चिम क्षेत्र के टीआई की कार्यशैली पर उसे नोटिस थमाया है।

स्वास्थ्य विभाग को नहीं मिल रहे थे डॉक्टर

5 संजीवनी क्लिनिक को संस्थाओं ने 'गोद' लिया

इंदौर (एजेंसी)। शहर में 116 संजीवनी क्लिनिक बनना हैं। इनमें से 85 नए हैं। बाकी पुराने भवनों का जीर्णोद्धार किया जा रहा है। निगम निर्माण एजेंसी है, जबकि इन्हें संचालित करने की जिम्मेदारी स्वास्थ्य विभाग की है, लेकिन स्वास्थ्य विभाग सभी क्लिनिक और डिस्पेंसरियों को ठीक से नहीं चला पा रहा है। इसकी वजह यह है कि उनके पास डॉक्टर्स ही नहीं हैं।निगम की पहल पर इन्हें चलाने के लिए 5 समाजसेवी संस्थाएं आगे आई हैं। इनमें 5 संजीवनी क्लिनिक को संचालित करने का जिम्मा समाजसेवियों ने लिया है। एमबीबीएस डॉक्टर, फर्नीचर, संसाधन, दवाइयां आदि वे ही उपलब्ध करवाएंगे। इसके लिए निगम, स्वास्थ्य विभाग और संस्था के बीच अनुबंध होगा। यह जनभागीदारी का मॉडल होगा।5 महीने पहले महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने स्वास्थ्य मंत्रालय को प्रस्ताव भेजा था। इसमें उन्होंने कहा था कि शहर की समाजसेवी संस्थाएं इन अस्पतालों को निःशुल्क संचालित करना चाहती हैं। इसके लिए मैन पॉवर सहित संसाधन वे ही जुटाएंगे। वहां से मंजूरी मिलते ही सोमवार को समाजसेवियों के साथ बैठक भी रखी गई।सीएमएचओ डॉ. बीएस सैत्या ने बताया कि संस्था को 208 तरह की आवश्यक दवाइयां रखना होंगी। सरकार द्वारा जारी स्वास्थ्य शिविर, अभियान आदि भी मुख्यमंत्री संजीवनी क्लिनिक की तरह इन संस्थाओं में आयोजित करना होंगे। 17 तरह की निःशुल्क जांच अनिवार्य है।इसके

लिए सामग्री, रिएजेंट स्वास्थ्य विभाग उपलब्ध करवाएगा। मानकों के अनुसार एक डॉक्टर, नर्सिंग ऑफिसर, फार्मासिस्ट, डेटा एंट्री ऑपरेटर और सपोर्ट स्टाफ रखना होगा। इसका मानदेय संस्था द्वारा दिया जाएगा। जांच सामग्री विभाग से मिलेगी, लेकिन एलआईएमएस पोर्टल में हितग्राही की जानकारी अपडेट करने की जिम्मेदारी कर्मचारी की होगी।

इन वार्डों में चल रहा क्लीनिक का काम

वार्ड 4 में प्रेमनगर बस्ती, वार्ड 10 में बाणगंगा पानी की टंकी, वार्ड 14 में पंचशील स्थित खाली जमीन, वार्ड 17 में ऋषि नगर सार्वजनिक उपयोग की जमीन पर संजीवनी क्लस्टर, वार्ड 24 में कुलकर्णी नगर ब्रिज के पास, वार्ड 37 में तपेश्वरी पानी की टंकी के पास, वार्ड 38 में बड़ला पानी की टंकी परिसर, वार्ड 45 में लाला का बगीचा में निर्मित सुलभ शौचालय को तोड़कर संजीवनी बनाएंगे।वार्ड 51 में शिव नगर पानी की टंकी, वार्ड 53 में यादव नगर श्मशान नूरी मैदान में क्लस्टर, वार्ड 54 में भील कॉलोनी में आंगनवाड़ी परिसर, वार्ड 56 में जीवन की फैल कब्रिस्तान, वार्ड 61 में जूनी इंदौर थाना क्वार्टर के पास, वार्ड 63 में हर्षदीप टॉवर के सामने इंदिरा प्रतिमा के पास, वार्ड 64 में गजाधर नगर के पास, वार्ड 76 में भूरी टेकरी, वार्ड 77 में गणेश नगर, वार्ड 78 में तेजपुर गड़बड़ी, वार्ड 80 में अहिल्या नगर सर्विस रोड, वार्ड 81 में देवेंद्र नगर केसरबाग ब्रिज के पास, वार्ड 83 में गुमाश्ता नगर स्कीम 71 सेक्टर सी में बनाया जाएगा।

पीएमश्री पर्यटन वायु सेवा

उज्जैन में एयर स्ट्रिप पर नीलगायें आ जाती हैं, इसलिए इंदौर-उज्जैन फ्लाइट बंद, जबलपुर, भोपाल का किराया बढ़ाया

इंदौर (एजेंसी)। जून में शुरू हुई पीएमश्री पर्यटन वायु सेवा का अगस्त का शेड्यूल आ गया है। इसके मुताबिक इंदौर-उज्जैन फ्लाइट को बंद कर दिया है। फ्लाइट बंद करने के दो कारण बताए हैं। पहला यह कि उज्जैन की एयर स्ट्रिप पर नीलगायें आ जाती हैं। दूसरा कारण लगातार यात्री नहीं मिलना हैं। इसके अलावा इंदौर-भोपाल और इंदौर-जबलपुर फ्लाइट का किराया भी बढ़ा दिया गया है।मालूम हो, पीएमश्री पर्यटन वायु सेवा के तहत 6 सीटर फ्लाइट का संचालन किया जा रहा है। सेवा जब शुरू हुई थी, तब इंदौर-उज्जैन की 3, इंदौर-जबलपुर व इंदौर-भोपाल की 1-1 फ्लाइट संचालित हो रही थी। शुरुआती शेड्यूल में उज्जैन की फ्लाइट मंगलवार, बुधवार, रविवार को थी। अब 1 अगस्त से जो 2 फ्लाइट इंदौर से उड़ेंगी, उनमें एक भोपाल जाएगी और एक जबलपुर और इन्हीं दो शहरों से ये फ्लाइट वापस इंदौर आएंगी। इसके अलावा किसी और शहर के लिए सीधी फ्लाइट नहीं है।

इंदौर-भोपाल का टिकट अब 3000 रुपए

सभी फ्लाइट पर पहले 50 प्रतिशत

डिस्काउंट इस विशेष सेवा के तहत दिया जाता था। इसे कम करते हुए 35प्रतिशत कर दिया है। इंदौर-भोपाल का टिकट पहले 2062 रुपए था, जिसे बढ़ाकर 3000 कर दिया है, वहीं इंदौर-जबलपुर का टिकट 4875 रुपए था, जिसे बढ़ाकर 5200 कर दिया है। इंदौर-उज्जैन का टिकट 31 जुलाई तक 1125 रुपए है।अगस्त में यह रहेगा फ्लाइट का समय- 1 अगस्त से 31 अगस्त तक इंदौर से जबलपुर फ्लाइट सुबह 9.20 पर उड़कर 1 घंटा 45 मिनट में 11.05 पर जबलपुर पहुंचेगी। भोपाल की फ्लाइट दोपहर 4.10 बजे उड़कर 1 घंटे में शाम 5.10 पर भोपाल पहुंचेगी। यात्री अपने टिकट निजी कंपनी के पोर्टल से बुक कर सकते हैं। पर्यटन बढ़ाने के लिए सेवा शुरू की, एयर स्ट्रिप पर तार फेंसिंग के बाद उज्जैन फ्लाइट दोबारा शुरू होगी।टूरिज्म विभाग के अंकित कौरव ने बताया कि ये सेवा मुख्य रूप से उन शहरों के लिए है, जहां टूरिज्म है और पहुंचने के लिए सड़क की कनेक्टिविटी उतनी अच्छी नहीं है। रीवा, सिंगरौली, खजुराहो जैसी जगह के लिए फ्लाइट बढ़ाई गई हैं। इंदौर-उज्जैन के लिए भी जल्द फ्लाइट शुरू करेंगे। फ्लाइट की ऑक्यूपेंसी 70प्रतिशत रही है।फ्लाइट ऑपरेट करने वाली कंपनी फ्लाईओला के नवीन किशोर ने बताया कि उज्जैन एयर स्ट्रिप पर बहुत परेशानी आती है, क्योंकि वहां कभी नील गाय और कोई प्राणी आ जाता है। हमने फेंसिंग की मांग की है।

संपादकीय

आरक्षण : नीतीश सरकार को झटका

बिहार में ओबीसी के लिए आरक्षण निर्धारित 50 से अधिक करने के नीतीश कुमार सरकार के फैसले पर पटना हाई कोर्ट द्वारा रद्द करने के फैसले पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगाने से इंकार कर वही किया है, जोकि अपेक्षित था। सुप्रीम कोर्ट उस फैसले पर कायम है, जिसमें उसने देश में 50 फीसदी से अधिक आरक्षण की सीमा तय कर दी थी। हालांकि राज्य समय-समय पर आरक्षण की अधिकतम सीमा का उल्लंघन कर राजनीतिक लाभ अपने-अपने राज्यों में आरक्षण 50 फीसदी से अधिक करने की राजनीतिक शोशेबाजी करते रहते हैं। यह जानते हुए भी कि कतिपय अपवादों को छोड़ दें तो आरक्षण की सीमा बढ़ाना कानून संभव नहीं है, जब तक कि खुद संसद इस फैसले को संविधान संशोधन न कर दे। यह बात सभी राजनीतिक दल जानते हैं, फिर भी लोक लुभावन घोषणाओं के चलते वो आरक्षण सीमा बढ़ाने का टोटका करते रहते हैं। सोमवार को सुप्रीम कोर्ट ने पटना हाईकोर्ट के उस आदेश पर रोक लगाने से इनकार कर दिया, जिसमें बिहार में पिछड़े वर्गों के लिए 65 प्रतिशत कोटा खत्म कर दिया गया था। बिहार सरकार ने आरक्षण को 50 प्रतिशत से बढ़ाकर 65 प्रतिशत करने के सरकार के फैसले को रद्द करने के हाईकोर्ट के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी। गौरतलब है कि पटना उच्च न्यायालय की एक खंडपीठ ने 20 जून को बिहार विधानसभा द्वारा 2023 में पारित संशोधनों को यह कहते हुए रद्द कर दिया था कि वे संविधान की शक्तियों से परे हैं और संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 16 के तहत समानता का उल्लंघन करते हैं। 7 नवंबर, 2023 को, नीतीश के नेतृत्व वाली महागठबंधन सरकार ने बिहार कोटा स्लैब को बढ़ाकर 65 प्रतिशत कर दिया। इसके साथ ही, आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों यानी ईडब्ल्यूएस के लिए 10 प्रतिशत कोटा को ध्यान में रखते हुए राज्य में आरक्षण प्रभावी रूप से 75 प्रतिशत हो गया। सरकार के इसी फैसले को पटना हाईकोर्ट ने रद्द कर दिया था। अब सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि इस मामले की विस्तृत सुनवाई सितंबर में की जाएगी। भारत के मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली तीन न्यायाधीशों की पीठ ने कहा कि वह याचिका को स्वीकार करेगी और सितंबर में इस पर सुनवाई करेगी। लेकिन 20 जून, 2024 के पटना हाईकोर्ट के आदेश पर रोक लगाने के रूप में कोई अंतरिम राहत नहीं देगी। पीठ में न्यायमूर्ति जे बी पारदीवाला और न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा भी शामिल थे। कोर्ट में बिहार सरकार की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता श्याम दीवान ने हाईकोर्ट के आदेश पर रोक लगाने की मांग की और कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने छत्तीसगढ़ से संबंधित इसी तरह के एक मामले में अंतरिम आदेश पारित किया था। लेकिन सीजेआई चंद्रचूड़ ने बताया कि हाईकोर्ट ने पाया है कि पहले से ही 68 प्रतिशत सिविल सेवाओं में आरक्षित उम्मीदवार हैं। ध्यान रहे कि महाराष्ट्र में भी वहां की सरकार ने तीन बार मराठा समुदाय को आरक्षण दिया। लेकिन वह अदालत में नहीं टिक पाया। हर बार आरक्षण का दायरा घटता गया। 2014 में कांग्रेस-एनसीपी गठबंधन सरकार ने 16 फीसदी तो साल 2018 में तत्कालीन मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने मराठा समुदाय को नौकरी में 12 फीसदी और शिक्षा में 13 फीसदी आरक्षण दिया। हाल के लोकसभा चुनाव में आरक्षण की अधिकतम सीमा बढ़ाने का मुद्दा भी उठा था। लेकिन कोई भी राजनीतिक पार्टी संविधान में संशोधन कर आरक्षण सीमा बढ़ाने का जोखिम नहीं उठाना चाहती। क्योंकि इससे अगड़े व अनारक्षित समुदायों के नाराज होने की पूरी संभावना है। दरअसल सत्तारूढ़ दल 50 फीसदी से आरक्षसण देकर गेंद कोर्ट में डलवा देते हैं ताकि उनके दोनो हाथों में लड्डू रहें।

नजरिया

– वीरेन्द्र कुमार पैन्यूली

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

आपदा की अनदेखी के नतीजे

हम सामाजिक पुनर्वास और आपदाग्रस्त ग्रामीण समुदायों के पुनर्निर्माण में भी चूके हैं। 2013 की आपदा के बाद चमोली, रूद्रप्रयाग जिलों के गहन मैदानी अध्ययनों में उभरकर आया था कि आपदाओं के कुप्रभाव कम-से-कम हों उसके लिये सरकार व आम जन को अपनी कार्यशैलियों व सोच में बदलाव लाना होगा, पर ये बातें ज्यादा दिन न रह पाईं। यह 'शमशान वैराग्य' जैसा था। ये वो बातें हैं, जिन्हें सामाजिक कार्यकर्ता या विशेषज्ञ पहले कहते थे, तो कोई ध्यान नहीं देता था। छिन्न-भिन्न आजीविका को पटरी पर लौटाने के लिए क्या कार्यक्रम लिये जायें ये जानने के लिए आज भी यदि आप आपदा प्रभावित क्षेत्रों में जायें तो एक स्वर से सुनेंगे कि हम ऐसी आजीविका अपनाना चाहते हैं, जो केवल तीर्थयात्रियों के भरोसे न हो। मौसम की मार या कोरोना जैसी महामारियां स्थानीय लोगों के नियंत्रण में तो नहीं ही हैं। ऐसे में यात्रा-काल में मौसम क्या गुल खिलायेगा, कुछ नहीं कहा जा सकता। वैसे भी बे-मौसम बर्फबारी होती रही है।

उत्तराखंड की 16-17 जून 2013 की आपदा को हर समय याद किया जायेगा। इस जल-प्रलय में लगभग एक हजार स्थानीय लोगों के साथ मृतकों की संख्या करीब 6 हजार थी। रामबाड़ा, तिलवाड़ा, अगस्तमुनि, गुप्तकाशी में भारी नुकसान हुआ था। 4200 गांव प्रभावित हुये थे। इसके बाद जीवट वाले लोग सालों-साल केदारनाथ में ही रहकर बर्फीले तूफानों में पुनर्निर्माण करते रहे हैं। 2014 में ऐसी हवाई-पट्टी भी बनी जहां भारतीय वायुसेना का विशालकाय भारवाहक हेलीकॉप्टर उतर सकता था, किन्तु स्थानीय प्रकृति और पारिस्थितिक पुनर्निर्माण के कार्य, जो साथ होने थे, वे न हुये न हो रहे हैं। उनके प्रति अपेक्षित संवेदनशीलता भी नहीं है।

तभी तो 30 जून 2024 को प्रात: लगभग पांच बजे मंदिर परिसर से पांच किलोमीटर दूरी पर 'गांधी सरोवर' में जो हिमस्खलन हुआ था और जिसे वहां उपस्थित श्रद्धालुओं ने बर्फ के पहाड़ का अचानक भरभराना बताया था, उसे इस क्षेत्र के लिये सामान्य बता दिया गया। सन् 2022, 2023 में भी ऐसा ही हुआ था और तब भी इसे सामान्य बता दिया गया था। जब ऐसी अवांछित अनहोनियां होती हैं तो मनोवैज्ञानिक रूप से सहमे लोग, आगे फिर कुछ ऐसा ही न घट जाये, की आशंका में जीते रहते हैं। केदारधाम के संदर्भ में आप मानें, न मानें अधिकांश स्थानीय जन आज भी सांस रोके रहते हैं।

यदि हम समस्याओं की जड़ में जाये बिना 'ऐसा ही होता है' कहने पर आ जायें तो भूस्खलनों के समय, जंगल की आग के समय, फ्लैश-फ्लड्स के मामलों में भी कह देंगे कि यह तो होता ही है। न भूलें, पूरे विश्व की चिंता जलवायु बदलाव के दौर में हिमालयी ग्लेशियरों में आये संकट की है। पश्चिमोत्तर हिमालय में 1991 के बाद औसत तापमान 0.66 सेंटीग्रेड बढ़ गया है। हिमालयी ग्लेशियरों की पिघलने की दर दुगुनी हो गई है। ये भी न भूलें कि भारी बरसात में अभी 30 जून की आपदा में करीब 7 किमी लम्बाई के चोरबाड़ी ग्लेशियर में 3865 मीटर्स की ऊंचाई पर स्थित चोराबाड़ी झील, जिसे 'गांधी सरोवर' कहा जाता है, अपनी परिधि में टूट गई थी। इसके भारी मलबे व अथाह जलराशि ने केदारनाथ धाम को अपनी चपेट में लिया था।

चोरबाड़ी ग्लेशियर के स्रौटों से ही चोराबाड़ी झील के साथ मंदाकिनी नदी का स्त्रोत भी बनता है। बढ़े हिम पिघलाव व बहाव से मंदाकिनी जगह-जगह विकराल होती गई। कहीं-कहीं इसका जल-स्तर 15 मीटर्स तक भी चढ़ गया था। पहले समस्त केदारघाटी में 2013 की भयावह आपदा आई थी, आज हालात पहले से भी ज्यादा खराब हैं। लाखों की संख्या में हर सीजन में तीर्थयात्री पहुंच रहे हैं। उनकी उपस्थिति और गतिविधियां 'हीट-आइलैंड' न बनायेंगी ये भी तो नहीं कहा जा सकता। दिन भर की सौ से ज्यादा हेलीकॉप्टर उड़ानें केदारनाथ अभयारण्य के वन्य जीवों व ग्लेशियरों की ताजा बर्फ में भी कम्पन पैदा करती हैं। ऐसा लगता है कि 2013 की आपदा से हमने कुछ सीखा नहीं, उल्टे केदारपुरी को सुविधायुक्त भव्यता वाला कस्बा बनाकर ही भुलाना चाहते हैं।

हम सामाजिक पुनर्वास और आपदाग्रस्त ग्रामीण समुदायों के पुनर्निर्माण में भी चूके हैं। 2013 की आपदा के बाद चमोली, रूद्रप्रयाग जिलों के गहन मैदानी अध्ययनों में उभरकर आया था कि आपदाओं के कुप्रभाव कम-से-कम हों उसके लिये सरकार व आम जन को अपनी कार्यशैलियों व सोच में बदलाव लाना होगा, पर ये बातें ज्यादा दिन न रह पाईं। यह 'शमशान वैराग्य' जैसा था। ये वो बातें हैं, जिन्हें सामाजिक कार्यकर्ता या विशेषज्ञ पहले कहते थे, तो कोई ध्यान नहीं देता था।

छिन्न-भिन्न आजीविका को पटरी पर लौटाने के लिए क्या कार्यक्रम लिये जायें ये जानने के लिए आज भी यदि आप आपदा प्रभावित क्षेत्रों में जायें तो एक स्वर से सुनेंगे कि हम ऐसी आजीविका अपनाना चाहते हैं, जो केवल तीर्थयात्रियों के भरोसे न हो। मौसम की मार या कोरोना जैसी महामारियां स्थानीय लोगों के नियंत्रण में तो नहीं ही हैं। ऐसे में यात्रा-काल में मौसम क्या गुल खिलायेगा, कुछ नहीं कहा जा सकता। वैसे भी बे-मौसम बर्फबारी होती रही है।

स्थानीय लोग यात्रा-सीजन में इतना कमाने का भरोसा रखते थे, जो उन्हें बाकी वर्ष के लिए पर्याप्त रहे, किन्तु 2013 की आपदा में खच्चरों को गंवा चुका खच्चर वाला भी फिर से खच्चर लेने के पहले इसका भी हिसाब-किताब कर रहा था कि उसके खच्चरों के लिए आसपास में ही कितना काम मिल पायेगा। अन्यथा यात्रियों के भरोसे न रहकर वह कोई दूसरा काम करने की सोच रहा था।

दुखद स्थितियों में तब केदार क्षेत्र के कई परिवारों को चलाने की जिम्मेदारी महिलाओं पर आ गई थी, इसलिए उन्होंने आजीविका के उन्हीं कार्यों को अपनाना पसन्द किया था जिनमें उन्हें बाहर न जाना पड़े। गाय-भैंस पालन, टेलरिंग, बागवानी, दुकान चलाने जैसे काम उन्होंने अपनाये थे। इनको दक्षता देने व इनके समूह बनाने के जो काम होने चाहिए थे, वे नहीं हुये, क्योंकि वे परियोजनाओं पर निर्भर थे। आपदा राहत की तात्कालिक परियोजनायें जब खत्म हुईं तो वो भी खत्म हो गईं।

इसी प्रकार पहले जब देवभूमि के आस्थावान व 'उत्तराखंड राज्य निर्माण' के आन्दोलनकारी भोग-विलास वाले, पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले पर्यटन व तीर्थाटन को बढ़ावा न देने के लिए चेताते थे तो कोई नहीं सुनता था, परन्तु जून 2013 की आपदा के बाद स्थानीय लोग ही, जिनमें व्यवसायी भी थे, कहते हुए मिल रहे थे कि यह तो होना ही था। जो कुछ तीर्थ-क्षेत्रों में नहीं होना चाहिए था, उसको भी करने में यहां परहेज नहीं होता था। 2013 में कई स्थानीय व्यवसायी खुद अपने व्यवसायिक आचरण को सवालों के घेरे में रखने से नहीं हिचकिचाये थे। प्रतिबंधित पदार्थों की खेपें आज भी क्षेत्र में पकड़ी जाती हैं। तीर्थयात्रा में पर्यटन का कोण आज और भी ज्यादा बढ गया है।

पिछली आपदा ने मजबूरन लोगों को इस तथ्य को भी देखने को मजबूर किया है कि जहां-जहां नदियों के तटों पर अतिक्रमण हुआ और जहां-जहां सड़कों व परियोजनाओं का मलबा पड़ा, वहां-वहां नदियों ने विनाश भी किया व अपनी राह भी बदली। अत: एक तरफ तो नदियों को उनकी जमीन लौटाने व उनके अविरल बहने के पक्ष में और दूसरी तरफ मशीनों से मनमानी, पहाड़ों को अस्थिर करने वाली कटानों के विरूध्द जनमत बना है।

वैकल्पिक जंगल के रास्तों, पैदल मार्गों को ढूंढने, उनको मजबूत करने, जलस्त्रोतों को पुन: संरक्षित करने, पलायन रोकने, यात्रियों की संख्या सीमित करने, उनको पंजीकृत करने, मौसम की चेतावनी पर यात्रा को सीमित करने के सरकार के आज होते काम भी आपदा से मजबूरी में ली गई सीख ही मानी जा सकती है। खेद है कि इस संवेदनशील क्षेत्र में कम-से-कम हवाई पटिटयों की बाढ़ लाने में सरकार परहेज नहीं कर रही है।

भारी सीमेंट कांक्रीट, इस्पात के निर्माण से सरकार परहेज नहीं कर रही है। इनसे स्थानीय स्तर पर कुछ लाभ नहीं होने वाला, उल्टे जमीन व पर्यावरण को खतरे बढ़ेंगे ही। जरूरत है, आधुनिक तीर्थधामों को पर्यटन स्थल बनाने के सपने जमीन पर उतारने की बजाए 2013 की केदार त्रासदी के बाद जो टिकाऊ विकास की चाह आम प्रभावित स्थानीयों में उपजी थी, उसको जमीन पर उतारा जाये। हिमालयी क्रंदन को अरण्य रोदन होने से बचायें। (सप्रेस)

कोचिंग सेंटर में मौत

ना नौकरी देंगे, ना ही जिंदगी....

– दिनेश दिनकर

विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में राजनैतिक रैलियों में, व्हाट्स ऐप यूनिवर्सिटी पर, सोशल मीडिया पर भारत को विश्व गुरु बनाने के नारे लगाए जाते हैं, झूठे सपने दिखाए जाते हैं। जिस देश में मात्र शिक्षा ग्रहण करने के दौरान बच्चों, युवाओं की मौत हो जाए, उस देश को विश्वगुरु बनाने का ढोंग किया जा रहा है। देश की राजधानी नई दिल्ली में देश की सबसे बड़ी परीक्षा संघ लोक सेवा आयोग की तैयारी कर रहे अभ्यर्थी बार-बार शासन-प्रशासन की लापरवाही से मौत की गर्त में धकेले जा रहे हैं और यहां विश्व की सबसे नई बनी संसद भवन पर कोई असर नहीं पड़ता है। दिल्ली के राजेंद्र नगर में एक कोचिंग सेंटर के बेसमेंट में बनी लाइब्रेरी में अचानक बारिश और सीवर का ज्यादा पानी भरने से यूपीएससी के 3 अभ्यर्थियों की दर्दनाक मौत हो गई। शुरुआती जांच में कोचिंग सेंटर के मैनेजमेंट को लापरवाही बरतने का दोषी पाया गया है। इमारत के जिस बेसमेंट में लाइब्रेरी चल रही है, वहां एमसीडी द्वारा केवल कार पार्किंग और स्टोरेज खोलने की अनुमति दी गई थी।

– यूपीएससी अभ्यर्थियों के साथ होने वाली दुर्घटनाओं की बात की जाए तो परसों इस घटना में 3 अभ्यर्थियों की मौत हुई है।

– पिछले सप्ताह पटेल नगर में यूपीएससी प्री पास अभ्यर्थी जो सितंबर में मेन्स पेपर लिखने वाला था, उसकी भी दर्दनाक मौत हो गई। दरअसल दोपहर को अपनी कॉलोनी में जाते समय उसने कॉलोनी के गेट को खोलने की कोशिश की, मगर गेट के नजदीक लोहे का खंभा था। संभवत: वहां से गेट में करंट बना होगा, जिससे 26 वर्षीय निलेश राय नामक होनहार अभ्यर्थी की भी शासन-प्रशासन की लापरवाही से मौत हो गई। शुरुआती जांच में एमसीडी ने लोहे के खंभे से गेट में करंट जाने की बात से इंकार कर दिया।

– पिछले साल 15 जून को दिल्ली के ही मुखर्जी नगर में एक कोचिंग सेंटर में आग लगने से 60 से ज्यादा यूपीएससी अभ्यर्थी गंभीर रूप से घायल हुए थे। घटना के वक्त लगभग 250 अभ्यर्थी क्लास में मौजूद थे। कुछ अभ्यर्थी आग से बचने के लिए इमारत की तीसरी मंजिल से कूदकर अपनी जान बचाने में सफल रहे मगर हाथों और पैरों मे गंभीर चोट लगने से घायल हो गए।

– पूर्वोत्तर दिल्ली के भजनपुरा में 25 जनवरी, 2020 को एक कोचिंग सेंटर की अचानक दो छत गिर गई थीं। इस हादसे में चार छात्रों समेत 5 लोगों की मौत हो गई और 13 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए थे। कोचिंग सेंटर एक जर्जर इमारत में संचालित की जा रही थी, जिस कारण यह जानलेवा हादसा हुआ था।

– मई 2019 में गुजरात के सूरत में भी ऐसे ही एक कोचिंग सेंटर में आग लगी थी, जिससे लगभग 25 विद्यार्थियों की मौत हो गई थी। इनमें से ज्यादातर स्कूली विद्यार्थी थे।

कुछ महीनों से नीट की परीक्षा में गड़बड़ी का मामला– युवा अभ्यर्थियों के हौंसले कमजोर कर रहा था, फिर यूपीएससी में विवादास्पद आईएएस पूजा खेरकर ने देश की सबसे बड़ी परीक्षा और सबसे बड़ी सरकारी नौकरी की नियमावली को आलोचना योग्य बना दिया। लगातार राज्यों में सरकारी नौकरियों की भर्ती में पेपर लीक, पेपर कैंसिल, दो-तीन वर्षों तक नौकरी के लिए परीक्षा ही ना लेना, कोर्ट केस में भर्तियों का लटकना जैसे मुद्दे देश में युवाओं को निराश करते रहते हैं। शासन-प्रशासन का असंवेदनशील रवैया ना तो समय पर नौकरी दे पा रहा है और ना ही युवाओं की जिंदगी बचा पा रहा है। अगर भर्ती प्रक्रिया को लेकर ये पढ़ने वाले युवा शांतिपूर्ण ढंग से अपनी आवाज भी उठाएं तो इन पर लाठीचार्ज की जाती है, इनके खिलाफ पुलिस केस तक दर्ज कर दिए जाते हैं। इनके परिजनों को डराया जाता है। अपने हक की आवाज उठाने वालों की जिंदगी बर्बाद कर दी जाती है यहां देश में।

वहीं, इसी देश में जातिगत आरक्षण के नाम पर आगजनी, तोड़फोड़ करने वालों को हीरो बना दिया जाता है। अन्य धर्म की महिला से गैंगरेप करने वालों को पार्टी विशेष के लोग फूल-मालाओं से स्वागत करते हैं। राजनीतिक पार्टियों द्वारा धरना-प्रदर्शन के दौरान गिरफ्तार किए गए कार्यकर्ताओं को बिना किसी कार्यवाही के छोड़ दिया जाता है। धार्मिक यात्राओं पर सुरक्षित माहौल, सुचारू ढंग से व्यवस्था बनाए रखने के सरकारी आदेश जारी किए जाते हैं। इन यात्राओं में तोड़फोड़ करने वालों की जाति और धर्म की पुष्टि होने पर कार्रवाई की भी जाती है और नहीं भी मगर पढ़ाई के लिए आवाज उठाने वालों के खिलाफ इतने केस दर्ज कर लिए जाते हैं, जितनी उनके पास डिग्री भी नहीं होती। प्रत्येक वर्ष स्कूल बसों में अनियमितता होने के चलते एक्सीडेंट में सैकड़ों बच्चों की मौत हो जाती है, बिना परमिशन के स्कूलों को संचालित किया जाता रहा है। कॉलेजों में शैक्षणिक स्टाफ, उपयुक्त संसाधनों की कमी और नारे देश को विश्व गुरु बनाने के लगाए जाते हैं। यहां जिक्र करना जरूरी है कि भारतीय छात्रों के साथ देश में ही नहीं, विदेशों में भी ऐसे ही घटनाएं हो रही हैं। भारत सरकार द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार पिछले 5 वर्षों में 633 भारतीय छात्रों ने विदेशों में अपनी जान गंवाई है। 101 देशों में कुल 13.35 लाख भारतीय छात्र पढ़ाई कर रहे हैं।

भारत में सामान्य प्रक्रिया रहती है जिसमें पहले एक घटना होती है, फिर उसकी जांच के लिए कमेटी गठित की जाती है, फिर उस कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर कार्यवाही करने का आश्वासन दिया जाता है। घटना होने पर शुरुआती जांच में पुलिस कुछ लोगों को गिरफ्तार कर लेती है, बाद में गिरफ्तार लोगों में से आधे से अधिक सबूतों के अभाव में छूट जाते हैं। निर्धारित नियमावली के अनुसार कुछ दिन संबंधित विभाग कार्यवाही करने की कोशिश करता है कि कुछ महीनों बाद कोई दूसरी घटना हो जाती है। फिर शासन-प्रशासन पहले वाली घटना को नियंत्रण करने, भविष्य में सुरक्षित माहौल बनाए रखने की कोशिश छोड़कर दूसरी घटना पर औपचारिक कार्यवाही करने लगता है। इसी तरह फिर तीसरी घटना सामने होती है तो दूसरी घटना को छोड़ देता है और पहले वाली घटना को तो बस मीडिया याद रखता है। कभी किसी रिक्शा वाले ने या ट्रक वाले ने एक्सीडेंट कर दिया और मीडिया तक खबर पहुंच गई तो रिक्शा वालों/ट्रक वालों के कागज़ चैक किए जाएंगे। किसी स्कूल में आग लग गई तो रिक्शा वालों को छोड़कर स्कूली इमारतों की फिटनेस चैक की जाएगी। नियमित रूप से ना तो कोई जांच की जाती है और ना ही कोई कार्यवाही। शासन-प्रशासन, नेता काम करने का दावा करते हैं मगर जमीनी स्तर पर कोई सकारात्मक परिणाम नहीं दिखते हैं। ना तो समय पर सीवरों की सफाई होती है, दिल्ली में ही बिजली की तारें लटकते हुए किसी अनहोनी का इंतजार कर रही होती हैं। हस्पतालों में जर्जर इमारतें आगजनी को लेकर बेचैन हैं। अगर कहा जाए कि एमसीडी वाले केवल सड़क पर खड़ी रेहड़ी वालों के खिलाफ कार्रवाई करके संतुष्ट हो रहे हैं तो कोई गलत नहीं होगा। कोचिंग सेंटर कैदखाने बनकर रह गए हैं। जहां कथित शिक्षकों की करोड़ों की कमाई हो रही है और अभ्यर्थी मोटिवेशनल रील्स देखकर सो रहे हैं। शासन-प्रशासन जाने-अनजाने में अपनी कार्यशैली से यही समझा रहा है कि हम ना नौकरी दे सकते हैं और ना ही जिंदगी.....

व्यंग्य

शिकारी अम्मा

सतीश सिंह

लेखक व्यंग्यकार हैं।

भारतीय परिवेश में 'शिकारी अम्मा' जैसे नामकरण को पचाना किसी भी गैरतमंद इंसान के लिए संभव नहीं है, क्योंकि 'अम्मा' शब्द सुनते ही आँखों में वात्सल्य, करुणा, ममता की मूर्ति आदि से परिपूर्ण महिला का चित्र तैरने लगता है। आखिर कोई अम्मा शिकारी कैसे बन सकती है? यह सुनने में अटपटा और बेसिर पैर वाली बात लगती है, लेकिन दूसरे नजरिये से देखें तो इस संबोधन में कोई अतिश्योक्ति भी नहीं है, क्योंकि महिला की परिकल्पना भारत में चुड़ैल, डायन आदि के रूप में भी की गई है। इस दृष्टिकोण से 'शिकारी अम्मा' शब्द सुनकर बहुत ज्यादा हाईपर होने की जरुरत कतई नहीं है।

'शिकारी अम्मा' को डायन की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है, लेकिन उसे चुड़ैल के समकक्ष जरूर माना जा सकता है। भूत वाली चुड़ैल नहीं, नकचढ़ी और नकारात्मक स्वभाव वाली। इसतरह, 'शिकारी अम्मा' शिकारी होने के साथ-साथ चुड़ैल भी थी, लेकिन कुछ खास लोगों के लिए। पति और अपने बच्चों के लिए तो वह दुनिया की सबसे अच्छी औरत थी। सगी बहनों और अपनी माताश्री के लिए वह परी, सिंड्रेला, स्नो-व्हाइट आदि थी, लेकिन अन्य महिला रिश्तेदारों के लिए वह बीते ज़माने की विलेन 'ललिता पवार' से भी ज्यादा खतरनाक, संगदिल और खुंखार थी।

'शिकारी अम्मा' के शिकार करने की मोडस ओपरेंडी बाघ, शेर आदि से काफी मिलती-जुलती थी। वह शिकार करने के लिए पहले इंतजार करती थी,फिर,अचानक से वह शिकार के गर्दन में अपने नुकीले दांत गड़ा देती थी,शिकार थोड़ी देर फड़फड़ाता था,फिर शिथिल पड़ जाता था। ऐसे माजरे को देखकर 'शिकारी अम्मा' की खुशी और संतुष्टि में कई गुणा इजाफा होता था और इस पूरी प्रक्रिया के दौरान उसका चेहरा 1000 वॉट के बल्ब की तरह चमकता रहता था। वैसे तो 'शिकारी अम्मा' लगभग सभी महिला रिश्तेदारों का शिकार करती थी,लेकिन उसकी सबसे पसंदीदा शिकार 'भौजाई' थी, जिसे वह बड़े शिद्दत के साथ अंजाम देती थी।

'शिकारी अम्मा' कभी भी किसी की शिकार नहीं बनी, क्योंकि उसके सैयां इकलौती संतान थे। हालाँकि,ननद रहती तो भी 'शिकारी अम्मा' का वह कुछ भी नहीं उखाड़ पाती। मानसिक रूप से वह रावण से भी ज्यादा बलशाली थी और शातिर भी। शातिरपना तो उसकी रगों में खून के साथ 24 घंटे कूदता-फाँदता रहता था। खुद के घर में भी वह हिटलर थी। पति और सास की बोलती भी उसके सामने बंद रहती थी। सास से पैर मालिश करवाना उसका मनपसंद शौक था। बेटे भी उसकी उँगलियों पर नाचते थे।

सिर्फ बेटियों वाली अम्मा से तो उसका जन्म-जन्मांतर का बैर था। मौका मिलते ही वह बेटियों की अम्मा को केवल बेटी जनने का ताना दे देती थी,जब तक उनकी आँखों से आसूं निकलता नहीं था, तब तक वह आक्रामक बनी रहती थी। उसके मुंह से निकले शब्द विष बुझे तीर से भी ज्यादा मारक होते थे, जिससे कोई भी शिकार बच नहीं पाता था। अक्सर बेटियों की अम्मा ताना सुनकर सदमें में चली जाती थी। कमजोर दिल वाले अम्माओं के परलोकसिधारने का डर हमेशा बना रहता था। अकूत पैसों की मालकिन होने के कारण 'शिकारी अम्मा' के तेवर हमेशा आसमान पर चढ़े रहते थे और उसका गरीब टाइप की ममेरी, चचेरी, मुसेरी और फुफेरी बहनों एवं भौजाईयों को ताना देने का दुकान हमेशा चलता रहता था। गरीब बहनों एवं भौजाईयों को अपने घर में लगे मार्बल या चिमनी या टीवी या फिर झूमर की कीमत बताकर उन्हें कमतर दिखाने या फिर उनपर मनोवैज्ञानिक दबाव बनाने में 'शिकारी अम्मा' को डिप्लोमा और डिग्री दोनों हासिल था। केवल सगी बहन और उसकी खुद की अम्मा को उसके टॉर्चर के दायरे से बाहर रहने का प्रीविलेज प्राप्त था।

'शिकारी अम्मा' को शिकार करने का हुनर अपने पूर्वजों से मिला था। उसकी मां भी मोहल्ले की नामचीन शिकारी थी। मोहल्ले की औरतें और कुनबे में उनके नाम का डंका बजता था। हालाँकि, नौकरी के कारण घर से वे अक्सर बाहर रहा करती थीं जिसके कारण संभावित शिकार खरगोश, मेमने, आदि की तरह उछल-कूद मचाते रहते थे, लेकिन छुट्टी में जैसे ही वे मायके आती थीं, वैसे ही भौजाईयों और भतीजियों की शामत आ जाती थी। 'शिकारी अम्मा' की छोटी मौसी भी आले दर्जे की उम्दा शिकारी थी,लेकिन मंझली मौसी मामले में थोड़ी कमजोर थी। वह गिलहरियों, चूहों, बिल्लियों आदि का शिकार करके ही मस्त रहती थी। उनके नाखून एवं दांत दोनों कमजोर थे,परंतु,छोटी मौसी के दांत बहुत ही तीखे, नुकीले और मजबूत थे। कद-काठी में वे थोड़ी छोटी थीं, लेकिन उसके मिजाज सर्वदा आसमान पर रहते थे। उनके पंजे तो उनके दांतों से भी ज्यादा नुकीले और पैने थे, मानो वह कोई तेज धार वाला चाकू हो।

'शिकारी अम्मा' की अम्मा,छोटी और मझली मौसी अपने मायके में भेड़ियों की तरह झुंड बनाकर शिकार करती थीं। तीनों मिलकर भौजाईयों पर लगातार और बार-बार तब तक हमला करती थीं, जब तक वे बेदम और निश्चेत न हो जाएँ। उनमें भेड़िया के साथ-साथ लोमड़ी वाले भी गुण थे। वे अंग्रेजों की तरह 'डिवाइड एंड रूल' नीति का इस्तेमाल करके भौजाईयोंऔर बहनों को अपना शिकार बनाती थीं।

वे अच्छी तरह से जानती थी, किस भौजाई या किस ममेरी, चचेरी, मुसेरी या फुफेरी बहन को कब टार्गेट करना है। उसकी कोई भी रणनीति कभी भी बैक-फायर नहीं करती थी, क्योंकि 'शिकारी अम्मा' योजनाबद्ध तरीके से काम करना अच्छी तरह से जानती थी। लगभग सभी भाई 'शिकारी अम्मा' के दौलत और रसूख के मुरीद थे, उसके बड़े वाले भक्त थे। उनकी बीबीयाँ उनसे लाख कम्प्लेन 'शिकारी अम्मा' की करे, लेकिन उनकी कानों में कभी भी जूं तक नहीं रेंगता था।

'शिकारी अम्मा' का औरा व्यापक और अनंत था, जिसकी चमक इतनी चमकीली थी कि भौजाई या ममेरी, चचेरी, मुसेरी और फुफेरी बहनों की आँखें हमेशा भींची-रहती थी। चील, कौवे, लोमड़ी, गिद्ध और भेड़िए के गुणों से युक्त वह बेहद ही चालाक,काइयां, क्रूर और खूंखारथी। इसलिए, 'शिकारी अम्मा' के मायके में सर्वदा त्राहिमाम-त्राहिमाम वाली स्थिति बनी हुई रहती है।उनके आतंक की वजह से आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर उनकी सगी भौजाई भी दिल्ली पलायन करने के फ़िराक में है। जय हो, 'शिकारी अम्मा' की। आपकी महिमा अपरंपार है। आपके राज्य में हमेशा घटाटोप अंधेरा कायम रहे।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मुंशी प्रेमचंद की 144वीं जयंती (31 जुलाई) पर विशेष

मुंशी प्रेमचंद- आम आदमी के साहित्यकार

रंजू भाटिया

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार, स्तंभकार तथा कुछ चर्चित पुस्तकों के लेखक हैं)

आधुनिक हिन्दी साहित्य के पितामह और उपन्यास सम्राट महान कथाकार मुंशी प्रेमचंद ने अपने लेखन के माध्यम से न सिर्फ दासता के विरुद्ध आवाज उठाई बल्कि लेखकों के उत्पीड़न के विरुद्ध भी सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने उपन्यासों और कहानियों के अलावा नाटक, समीक्षा, लेख, संस्मरण इत्यादि कई विधाओं में साहित्य सृजन किया। प्रेमचंद ऐसे कहानीकार और साहित्यकार थे, जिन्हें आज भी सबसे ज्यादा पढ़ा जाता रहा है। उन्हें 'आम आदमी का साहित्यकार' भी कहा जाता है। चूंकि उनकी लगभग सभी कहानियां आम जीवन और उसके सरोकारों से ही जुड़ी होती थी, इसीलिए उनके सबसे ज्यादा पाठक आम लोग रहे हैं। दरअसल उन्होंने अपने सम्पूर्ण साहित्य लेखन में एक आम गरीब आदमी की पीड़ा को न केवल समझा बल्कि अपनी कहानियों और उपन्यासों के जरिये उसका निदान बताने का प्रयास भी किया। उन्होंने अपनी लगभग सभी रचनाओं में आम आदमी की भावनाओं, उनकी परिस्थितियों, समस्याओं तथा संवेदनाओं का मार्मिक शब्दांकन किया। आज भी हिन्दी भाषी दिग्गज लेखकों और साहित्यकारों का यही मानना है कि मुंशी प्रेमचंद जैसा कलमकार हिन्दी साहित्य में न आज तक कोई हुआ है और न होगा। अपनी रचनाओं के माध्यम से उन्होंने समाज को सदैव रूढ़िवादी परम्पराओं और कुरीतियों से निकालने का प्रयास किया। उन्हें 'हिन्दी साहित्य का माइलस्टोन' भी कहा जाता है।

कम ही लोग यह जानते हैं कि जो मुंशी प्रेमचंद हिन्दी लेखन के लिए इतने विख्यात रहे हैं, उन्होंने अपने लेखन की शुरुआत उर्दू से की थी। अपना पहला साहित्यिक कार्य उन्होंने गोरखपुर से उर्दू में शुरू किया था और 1909 में कानपुर के 'जमाना प्रेस' से उर्दू में ही उनका पहला कहानी-संग्रह 'सोज ए वतन' प्रकाशित हुआ था, जिसकी सभी प्रतियां ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त कर ली गई थी। उस समय में वे उर्दू में 'नबावराय' के नाम से लिखते थे। उनका लिखा कहानी संग्रह जब्त करने के बाद 'जमाना' के सम्पादक मुंशी दयानारायण ने उन्हें परामर्श दिया कि भविष्य में अंग्रेज सरकार की नाराजगी से बचने के लिए नवाब राय के बजाय वे नए उपनाम 'प्रेमचंद' के नाम से लिखना शुरू करें। इस प्रकार वे नवाब राय से प्रेमचंद बन गए। उत्तर प्रदेश में वाराणसी के लमही गांव के डाक मुंशी अजायबलाल के घर 31 जुलाई 1880 को जन्मे धनपत राय श्रीवास्तव उर्फ मुंशी प्रेमचंद की आज हम 144वीं जयंती मना रहे हैं। प्रेमचंद वकील बनना चाहते थे लेकिन आर्थिक तंगी के चलते उनका वह सपना पूरा नहीं हो सका। मुंशी प्रेमचंद विधवा विवाह के पक्षधर थे और इसी कारण उन्होंने पहली पत्नी के निधन के बाद समाज के विरुद्ध जाकर वर्ष 1905 में 25 साल की आयु में शिवरानी नामक एक बाल विधवा से विवाह किया, जिसके बाद उनकी आर्थिक और पारिवारिक स्थितियों में बदलाव आया। वैसे तो उन्होंने 13 वर्ष की उम्र में लेखन कार्य शुरू कर दिया

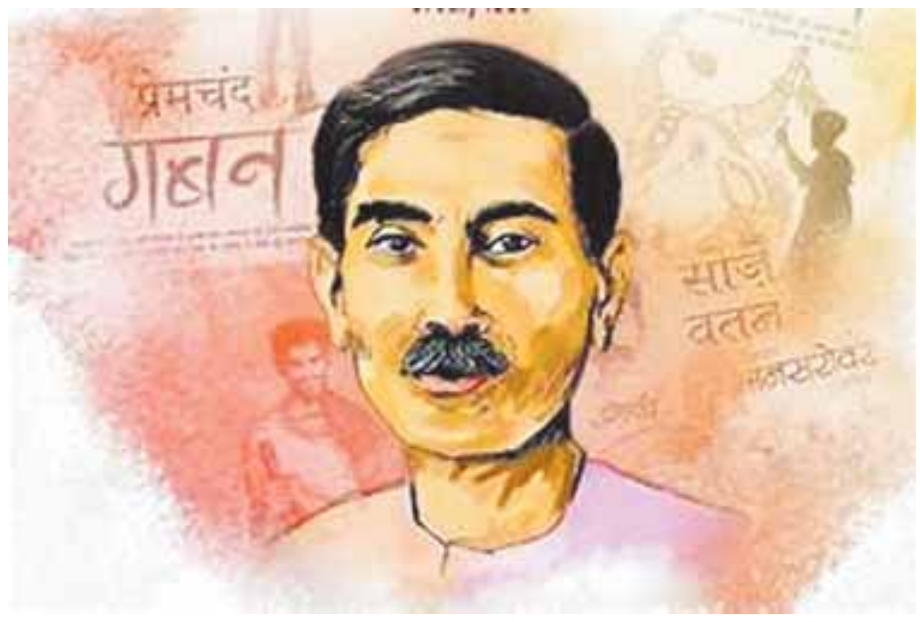

था लेकिन उनके लेखन में परिपक्वता शिवरानी से विवाह के बाद ही आई थी, जिससे उनके लेखन की मांग बढ़ने लगी। उनकी दूसरी पत्नी शिवरानी ने ही बाद में उनकी जीवनी लिखी थी। अपने जीवन के आखिरी दिनों में प्रेमचंद जलोदर नामक बीमारी से ग्रसित हो गए थे और 8 अक्टूबर 1936 को दुनिया से अलविदा हो गए।

मुंशी प्रेमचंद एक दिन बालेमियां मैदान में महात्मा गांधी का भाषण सुनने गए और उनके विचारों से इस कदर प्रभावित हुए कि उन्होंने ब्रिटिश सरकार की सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और उसके बाद पूरी तरह से स्वतंत्र लेखन में जुट गए। अपने जीवनकाल में मुंशी प्रेमचंद ने कुल 15 उपन्यास, 300 से अधिक कहानियां, 3 नाटक, 10 अनुवाद, 7 बाल पुस्तकें और हजारों की संख्या में लेखों व संस्मरणों की रचना की। उनके चर्चित उपन्यासों में बाजार-ए-हुस्न (उर्दू में), गोदान, कर्मभूमि, गबन, सेवा सदन, कायाकल्प, मनोरमा, निर्मला, प्रतिज्ञा प्रेमाश्रम, रंगभूमि, वरदान, प्रेमा इत्यादि और कहानियों में पूस की रात, नमक का दरोगा, बूढ़ी काकी, कफन, मंत्र, नशा, शतरंज के खिलाड़ी, आत्माराम, बड़े भाईसाहब, बड़े घर की बेटी, उधार की घड़ी, जुर्माना इत्यादि बहुत प्रसिद्ध रही। अपना अंतिम कालजयी उपन्यास 'गोदान' उन्होंने वर्ष 1936 में लिखा, जो बेहद चर्चित रहा और आज भी आधुनिक क्लासिक माना जाता है।

प्रेमचंद की कुछ कहानियों पर उनके निधन के बाद फिल्में भी बनी। 1980 में उनके उपन्यास 'निर्मला' पर एक टीवी धारावाहिक भी बना, जो काफी लोकप्रिय हुआ था। 1938 में उनके एक उपन्यास 'सेवासदन' पर फिल्म बनी। 1963 में 'गोदान' और 1966 में 'गबन' उपन्यास पर फिल्में बनी। 1977 में उनकी कहानी 'कफन' पर फिल्मकार मृणाल सेन द्वारा 'ओका ऊरी कथा' नामक तेलुगु फिल्म बनाई गई, जिसे सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। उनकी दो कहानियों 1977 में उनकी एक कहानी 'शतरंज के खिलाड़ी' और 1981 में 'सद्गति' पर बॉलीवुड फिल्मकार सत्यजित राय ने फिल्में बनाई।

मुझे ग्रे एरिया से परिचित कराया प्रेमचंद के 'निर्मला' ने

साक्षात्कार

सिल्क अग्रवाल

बाल हंस, चम्पक और नन्दन पढ़ने वाली मेरी कोमल बुद्धि का पहला साक्षात्कार प्रेमचंद से 2001 में हुआ। अपने घर से किसी शादी के समारोह में सम्मलित होने जाना था, ट्रेन की उबाऊ यात्रा से बचने के लिए स्टेशन पर दुकान को खंगाला, और निर्मला नाम के उपन्यास पर नज़र पड़ी।

ज्यादा वक्त था नही , सुना था ही कि 'कोई प्रेमचंद' हैं वो काफी अच्छा लिखते हैं। सोचा चलो ठीक है कुछ तो पढ़ ही लेंगे। ट्रेन की गति के साथ उपन्यास में निर्मला के जीवन की गति चलने लगी। उसका अनाथ होना, उसकी बेमेल शादी, उस पर लगे कलंक, कहानी चलती रही, पन्ने पलट पलट, कब मेरा मन निर्मला से जुड़ गया, पता ही नही चला, हर पन्ने के बाद सोचती शायद अब इसकी ज़िन्दगी में कुछ ठीक होगा, अब शायद बात बनेगी, अब शायद रुख बदलेगा, पर कहानी चलती रही, हाथों की रेखाओं की भांति निर्मला का भाग्य लिख दिया गया था, मेरे तमाम प्रतिरोधों और सदिच्छाओ के बाद भी निर्मला का अंत वह हुआ जो प्रेमचन्द ने उकेरा था। उस वक़्त मेरी उम्र कुछ 15 साल भी नही थी। दुनिया की संकुचित, स्वार्थी, नीचताओ से मेरा वास्ता नही पड़ा था, न लोगों से धोखे खा-खा कर ह्रदय पत्थर हुआ था, मित्रताओ में विषता का, विश्वास के साथ जुड़े घात का उतना अनुभव नही था। घर से बाहर माँ पिता के सरंक्षण के बिना कभी नही निकली थी, मेरी कल्पनाओं की दुनिया मे हर कहानी के अंत मे अच्छाई की जीत होती थी। मेरी सहज बुद्धि निर्मला के अन्याय को स्वीकार ही कर पा रही थी, कब वो बेबसी का गुस्सा आंखों से आंसू बनकर गिरने लगा पता ही नही चला, रो रो कर आंखे सूज गयी।

वो पहला उपन्यास था जिसने मुझे ग्रे एरिया से परिचित किया। जिसने मुझे बताया कि जीवन कितना व्यापक है, और दुनिया काली या सफेद नही बल्कि ग्रे है। फिर तो एक एक कर सब कुछ पढ़ डाला, सब कुछ जो उन्होंने लिखा वह, एक दूसरे से अलग है, पर फिर सब कुछएक जैसा, एक कलुषित जीवन वाला किसी भी क्षण साधु महात्मा को पराजित कर दे ऐसे कार्य कर सकता है, और जीवन भर संत रहने वाला मुश्किल क्षणों में कैसे नीचतम स्तर पर जा सकता है, ये सिर्फ प्रेमचंद ही विस्तृत समझा सकते हैं। उनकी कहानी में कोई नायक नहीं है, कोई नायिका नहीं है, सब पात्र परिस्थितियों के अनुसार नायक बन जाते हैं और परिस्थितियों के ही अनुसार खलनायक। उनके किसी लेखन में कोई विचारधारा से आप खुद को जोड़ लेंगे, उसको अपनी पूजा बना लेंगे, और अगले ही क्षण, अगले ही पन्ने पर वो उस विचारधारा को दुनिया का सबसे मूर्खतापूर्ण विचार सिद्ध कर देंगे। उनके लेखन लिए कोई बंधन नही है, न अच्छे का न बुरे का, जैसे इंसान का मन अनन्त है, जग अनंत है, हरि अनंत है वैसे उनके साहित्य के विचार और पात्र हैं, उन्हें अच्छाई या बुराई, उच्च या नीच, सही या गलत में आप बांध ही नही सकते। नायक और खलनायक, महान और पतित, अच्छे और बुरे, उनके पात्र सबकुछ हैं और वो कुछ भी नही हैं।

प्रेमचंद के हर उपन्यास तो ठीक, उनकी हर कहानी तक पर खूब लिखा जा सकता है, उनके लिखे 'क्या बिगाड़ के डर से ईमान की बात न करेंगे!' को आज भी प्रेस जगत में काफी संदर्भो में उपयोग लिया जाता है। रोने से दिल हल्का होता है, ये सब जानते हैं, पर प्रेमचंद ने इसको शब्द दिए हैं 'रुदन में कितना उल्लास, कितनी शांति, कितना बल है। जो कभी एकांत में बैठकर, किसी की स्मृति में, किसी के वियोग में, सिसक-सिसक और बिलख-बिलख नहीं रोया, वह जीवन के ऐसे सुख से वंचित है, जिस पर सैकड़ों हँसिया न्योछावर हैं। उस मीठी वेदना का आनंद उन्हीं से पूछो, जिन्होंने यह सौभाग्य प्राप्त किया है। हंसी के बाद मन खिन्न हो जाता है, आत्मा क्षुब्ध हो जाती है, मानो हम थक गए हों, पराभूत हो गए हों। रुदन के पश्चात् एक नवीन स्फूर्ति, एक नवीन जीवन, एक नवीन उत्साह का अनुभव होता है।' दुख को, रुदन का इससे सुंदर विस्तार और क्या हो सकता है भला।

यू ट्यूब के शार्ट्स से जीवन के फलसफे सीखने वाले चलन के वक्त प्रेमचंद को पढ़ना शायद उतना ट्रेंडी इतना कूल न लगे। पर जिसको वैसा लिखे का स्वाद लग जाये उसे फिर चाहे कुछ और सुगम कितना ही हो, प्रेमचंद के समकक्ष नही लगता।

मानव मन के स्वभाव का, उसकी जटिलताओं का, अध्धयन करना है तो प्रेमचंद पढ़िए, मनुष्य की जीवन यात्रा में किये जाने वाले आकस्मिक फैसलो को समझना है तो प्रेमचंद पढ़िए। इंसानी ज़ज़्बातों को गहराई से नापना है तो प्रेमचंद पढ़िए। अपने अंतस में छुपी लालसाओं को, लालच को, अहंकार को नग्न रूप में खुद से मिलवाना है तो प्रेमचंद पढ़िए। आप दुनिया को थोड़ा ज्यादा और खुद को थोड़ा कम बेहतर समझना शुरू कर देंगे।

प्रेमचंद, सामाजिक विवेक के रचनाकार

मुंशी प्रेमचंद जयंती

चित्रा माली

लेखिका स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

पश्चिमी संदर्भ में कम्युनलिज्म का अर्थ समुदाय आधारित कार्यवाही है, लेकिन जैसे ही भारतीय और दक्षिण एशियाई संदर्भ में इसका अनुवाद साम्प्रदायिकता या फिरकापरस्ती के रूप में किया जाता है, जिससे सामुदायिकता में निहित सकारात्मकता समाप्त हो पूरी तरह से नकारात्मकता में तब्दील हो जाती है । साम्प्रदायिकता का मतलब हो जाता है समुदायों के बीच,आमतौर पर धार्मिक समुदायों के मध्य,प्रतिस्पर्धा और टकराव जो अक्सर हिंसा का रूप लेती रहती है। साम्प्रदायिकता,हिंदू-मुस्लिम एकता, साझी संस्कृति और विरासत की जब भी बात की जाती है तो हमारे जेहन में गांधी,नेहरू और प्रेमचंद के लेख व रचनाएं घूमने लगती है। इन लेखों और रचनाओं के इतने वर्ष बीत जाने के बाद भी अगर किसी के विचारों और शब्दों को पढ़कर ऐसा लगे कि वे आज के समय के यथार्थ को प्रस्तुत कर रहे हैं तो आश्चर्यचकित होना लाजमी है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है तो यह लाज़मी है कि साहित्यकार समाज में फैल रही असहिष्णुता, सांप्रदायिकता,हिंसा,घृणा और अव्यवस्था के खिलाफ अपनी कृतियों के माध्यम से प्रतिरोध करें। समाज के प्रति इस जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए प्रेमचंद ने 1930 में 'हंस' पत्रिका के संपादन का कार्य किया। इसके पूर्व भी वे कई पत्र पत्रिकाओं के संपादन का कार्य कर रहे थे लेकिन 'हंस' पत्रिका के माध्यम से वे लेखक व लेखन की स्वतंत्रता और समाज के यथार्थ को दृढ़ता से प्रस्तुत कर रहे थे। हिंदू-मुस्लिम एकता की थीम पर आधारित एक महत्वपूर्ण निबंध उन्होंने लिखा जो सबसे पहले 1931 में 'हंस' में ही प्रकाशित हुआ था। हिंदुस्तान के परिपेक्ष्य में 1930 का दशक साम्प्रदायिकता के उभार का दौर था जिसकी चरम परिणति 1947 के विभाजन का सबब बनी। 1930 में प्रेमचंद जिस साम्प्रदायिक वातावरण पर चिंता जाहिर कर रहे थे कमोबेश वही वातावरण आज भी जस का तस बना हुआ है यह घोर चिंता का विषय है क्योंकि आज जब हम आधुनिक,प्रगतिशील और सेकुलर होने का दंभ भरते हैं तो वह केवल हमारे बाहरी हिस्से में परिलक्षित होता है जबकि आंतरिक रूप से आज भी हम धर्म,जाति और लिंग के भेदभाव परक पूर्वाग्रहों से ग्रसित हैं । प्रेमचंद लिखते हैं कि 'साम्प्रदायिकता सदैव संस्कृति की दुहाई दिया करती है, उसे अपने असली रूप में निकलने में शायद लज्जा आती है। इसलिए वह उस गधे की भांति है, जो सिंह की खाल ओढ़कर जंगल में जानवरों पर रोब जमात है । धर्म और संस्कृति के संबंध में प्रेमचंद के विचार क्रांतिकारी लगते है वह हंस में लिखे अपने लेख में लिखते हैं। 'हिंदू अपनी संस्कृति को कयामत तक सुरक्षित रखना चाहते हैं, मुसलमान अपनी संस्कृति को,दोनों ही अभी तक अपनी-अपनी संस्कृति को अछूती समझ रहे हैं,यह भूल गए हैं कि अब न कहीं हिंदू संस्कृति है और न मुस्लिम संस्कृति और न कोई अन्य संस्कृति, अब संसार में केवल एक संस्कृति है और वह है आर्थिक संस्कृति,मगर आज भी हिंदू और मुस्लिम संस्कृति का रोना रोए चले जाते हैं, हालांकि संस्कृति का धर्म से कोई

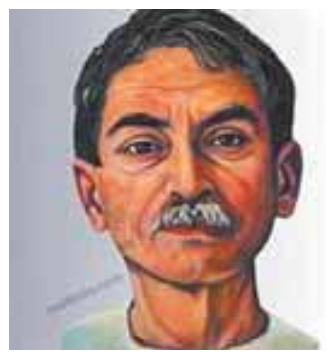

संबंध नहीं ..... फिर हमारी समझ में नहीं आता कि वह कौन -सी संस्कृति है,जिसकी रक्षा के लिए साम्प्रदायिकता इतना जोर बांध रही है, वास्तव में संस्कृति की पुकार केवल ढोंग है,निरा पाखंड, यह सीधे आदमियों को साम्प्रदायिकता की और घसीट लाने का केवल एक मंत्र है और कुछ नहीं'। हिंदू-मुसलमानों की साझी संस्कृति और विरासत को प्रेमचंद की रचनाओं में देखा जा सकता है जहां मुस्लिम पात्र हिंदुओं के त्योहारों,होली और दिवाली उत्साह से मनाते दिखाई देते हैं। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं के माध्यम से मुस्लिम समुदाय की दुनिया,उनके सपनों और उनके दुखों को भी दर्शाया है। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में दोनों ही समुदायों के आंतरिक जीवन को एक समान रूप में चित्रित किया है। प्रेमचंद कहते हैं कि 'साहित्यकार का लक्ष्य देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई नहीं है,बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है'। भारत के स्वाधीनता संघर्ष के ऐतिहासिक क्षणों के प्रेमचंद गवाह रहे और उन्होंने उन क्षणों का सामाजिक - सांस्कृतिक इतिहास अपनी रचनात्मक कृतियों में लगातार रचा है। गांधी जी ने जब असहयोग आंदोलन में युवाओं से आह्वान किया था कि वे अपनी सरकारी नौकरियां छोड़ दें, प्रेमचंद ने स्वाधीनता संघर्ष के संकल्प से संकल्पित होकर सरकारी नौकरी से इस्तीफा दे दिया था। प्रेमचंद गांधी जी से प्रभावित थे उनकी कृतियों में इस प्रभाव को देखा भी जा सकता है लेकिन वे गांधी जी के कभी अनुयायी नहीं बने । स्वराज व स्वदेशी आंदोलन के साथ साथ प्रेमचंद ने आर्थिक - सांस्कृतिक शोषण के समाजशास्त्र की व्याख्या भी अपनी रचनाओं में की। प्रेमचंद के साहित्य सृजन और चिंतन का स्वरूप,संघर्ष और क्रांति, समाज परिवर्तन और विद्रोह से निर्मित हुआ है इसीलिए उनका रचना संसार उपनिवेशवाद विरोधी,साम्प्रदायिकता विरोधी, साम्राज्यवाद विरोधी,सामंतवाद विरोधी,पूंजीवाद विरोधी, व्यक्तिवाद विरोधी है । प्रेमचंद अपनी रचनाओं के लिए भारतीय समाज,सभ्यता संस्कृति,लोक - संस्कृति,भाषा-अस्मिता और विशिष्ठता के साथ साथ गरीबी, शोषण, दमन,अपमान,बेरोजगारी से व्याप्त समाज को अपने विमर्श में शामिल करते हैं इसके लिए वे गांवों और शहरों के चप्पे - चप्पे को तलाशते हैं। उनकी कृतियों में गरीब, अनपढ़,निरीह,असंगठित मजदूर - किसान और शोषित दमित स्त्री-पुरुष लगातार स्थापित होते चले गए है। प्रेमचंद की कृति कायाकल्प,कर्मभूमि,रंगभूमि,निर्मला,सेवासदन, गबन, गोदान जिनका संदर्भ आज की सामाजिक व्यवस्था में भी बार बार लिया जाता है जिसमें किसानों - मजदूरों का कोई संगठित मोर्चा नहीं है और ना ही किसी प्रकार का संघर्ष,जो इस व्यवस्था का विरोध या प्रतिरोध करे । इस उपन्यास में केवल आम- जन की मजबूरियां और पूंजीवादी तंत्र की वेदनाएं हैं। किसानों का जीवन पशुओं से भी बदतर है और शोषण की इस व्यवस्था में महाजन,साहूकार,पुजारी,पुरोहित सभी शामिल हैं। गांव से मजदूरी के लिए शहरों की ओर पलायन तथा अजनबियत को भी उभारा है । होरी की मृत्यु के बाद होने वाला 'गोदान' एक क्रूर व्यंग्य बनकर पाठक को अंदर तक झकझोरता रहता है । प्रेमाश्रम में सामंतवाद - उपनेशवाद, स्त्री - अछूत, शिक्षण -संस्था,परिवार - देश की असंख्य समस्याओं को विस्तृत फलक पर रचा गया है । प्रेमचंद की पैनी राजनीतिक समझ को भी प्रेमाश्रम उपन्यास में देखा जा सकता है।

प्रेमचंद के हर उपन्यास की अपनी एक अलग पृष्ठभूमि है इसलिए उनके उपन्यासों को सामाजिक, आर्थिक,राजनीतिक या किसान जीवन के उपन्यास जैसे किसी विशेषण में नहीं बांधा जा सकता हैं । उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी समस्याओं को भी प्रमुखता से उठाया है । प्रेमचंद का अंतिम अधूरा उपन्यास मंगलसूत्र जो आत्मकथा और कहानी का मिश्रित प्रयोग है । इसमें पूंजीवादी व्यवस्था के अमानवीकरण पर व्यंग्य किया गया है । सृजनात्मकता की इस विकास यात्रा में कई पड़ाव आते हैं और वे निरंतर आगे बढ़ते रहते हैं । इस बीच गांधी विचार के यूटोपिया से भी उनका मोह भंग होता है और वे आदर्शवाद से परे आर्थिक समस्याओं से जूझते हैं । उनकी खोज भारतीय ढंग के समाजवाद की है । प्रेमचंद ने अंततः सभी विचारधाराओं के मॉडल को नकारते हुए कहा कि जनता को जानना होगा,वरना व्यवस्था उनके जीवन को हड़प जाएगी। साहित्य की सामान्य समझ रखने वाले व्यक्ति भी प्रेमचंद से उनकी कृतियों से किसी न किसी रूप में परिचित हैं । प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों,कहानियों और निबंधों के माध्यम से तत्कालीन समाज व्यवस्था,साम्प्रदायिकता और औपनिवेशिक विरोधी आंदोलन के कई पक्षों को सामान्यजन की भाषा में सहजता से प्रस्तुत किया है ।

जयंती विशेष

प्रेमचंद का क्यों होता है- सुनियोजित बायकॉट !

सुसंस्कृति परिहार

प्रेमचंद का तमाम साहित्य आज़ादी के पूर्व के हिंदुस्तान की उन तमाम सामाजिक, राजनैतिक पीड़ाओं के साथ साथ देश में व्याप्त भाईचारे, सद्भाव और नैतिकताओं का ईमानदारी से लिखा दस्तावेज है। उन्होंने लगातार लिखा है -इसलिए वे ज़ोर देकर कहते हैं 'मैं मज़दूर हूं एक दिन ना लिखूं तो मुझे रोटी का अधिकार नहीं है।' उनका यह कथन उस सच्चाई को प्रदर्शित करता है कि लेखक का दायित्व है कि वह सतत हालातों पर लिखता रहे क्योंकि यह उसका कर्म है और इस लेखन की बदौलत ही रोटी खा पाता है। तो लिखने में कोताही क्यों? निश्चित तौर पर यह लेखकों को स्मरण रखना चाहिए जिनसे लोग सच्चाई सामने लाने की अपेक्षा रखते है उनकी लेखनी थमना नहीं चाहिए।

आज़ कुछ चीज़ें बदल गई है मसलन लेखक मतलब के लिए सत्ता की चापलूसी में लिख रहा है राममंदिर निर्माण भले अभी तक अपूर्ण हो पर अनगिनत लोगों ने रामजी पर कितनी किताबें तैयार कर लीं और वे सरकार के ज़रिए बाजार में पटी पड़ी है। राम जी को लेकर आने तथाकथित हनुमान पर भी साथ साथ पुस्तकें सामने आती जा रही हैं। अखबार पत्र पत्रिकाएं सब बिना रामजी के अधूरे हैं। लेखकों में छपास और सम्मानित होने की हवस इतनी उफान पर है कि वे जल्द से जल्द बड़ा लेखक बनने किताब दर किताब छपाते जा रहे हैं।अब अख़बार मजूरी का पैसा नहीं देते फिर भी लेखकों की तादाद बढ़ती जा रही है। ये

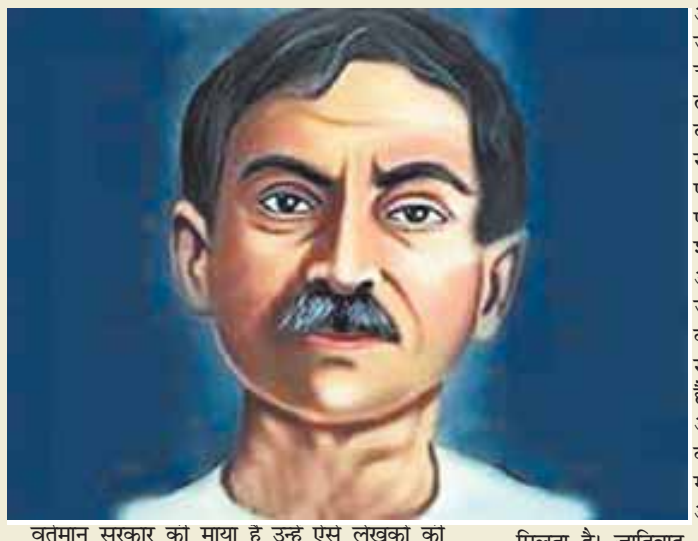

वर्तमान सरकार का माया है उन्हें ऐसे लेखकों की ज़रूरत है।

इसलिए आज प्रेमचंद जैसे जनवादी मज़दूर लेखक में खामियां दिख जाती हैं। कोई कहता है वे अपने लेखन से मुसलमानों का पक्ष ले रहे हैं जो नहीं किया जाना चाहिए तो कुछ लोग उन्हें दलित लोगों का पक्षधर बताकर उन्हें हिंदु विरोधी बताकर विरोध जताते हैं। 18वीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण लेखक की किताबें जलाते हैं। उन्हें कोर्स से निकाल देते हैं।

कौन थे प्रेमचंद आइए जान लेते हैं वे पत्रकार,लेखक कहानीकार और उपन्यासकार थे कहा जाता है कि यदि आज़ादी के पूर्व का हिंदुस्तान जानना है तो प्रेमचंद को पढ़ना चाहिए उन्होंने भरपूर साहित्यिक लेखन किया है। सबसे बड़ी बात ये है कि उनके लेखन में समय और काल के हिसाब से परिवर्तन आता रहा है। उन्होंने पहले लिखना आदर्शवाद से शुरू किया किन्तु उनका आदर्शवाद प्राचीन साहित्य जैसा नहीं था उनकी इस तरह की कहानियों में गहरी और सच्ची अनुभूति देखने मिलती है इन कहानियों के ज़रिए वे अपने पात्रों के चरित्र में सुधार करना चाहते हैं उनपर यहां गांधीजी के सुधारवादी आंदोलन का बड़ा असर देखने मिलता है। जातिवाद छुआछूत जैसी सामाजिक वेदनाएं उनके इस दौर के लेखन का मुख्य आधार रही हैं । यहां वे सामंतवादी ताकतों को इसके लिए जिम्मेदार ठहराते हैं।व उनका झुकाव आदर्शवाद से यथार्थवादी हो जाता है वे इनकी पहचान दलितों को कराते हैं। वे दैनन्दिन की घटनाओं को सामने लाकर विरोध की नई इबारत लिखते हैं । प्रेमचंद की रचनाओं में जिन गांवों तथा कस्बों की बात मुखर होती है वह अस्सी प्रतिशत जनता की आवाज गांव में रहनेवाला गोबर, धनिया तथा घीसू, माधव जैसे लोगों को हिन्दी साहित्य के पात्र बनेंगे।इन लोगों की तकलीफ़ के साथ प्रेमचंद सीधे जुड़ते हैं यह कहना तनिक भी अनुचित न होगा कि यह न सिर्फ गोबर की बल्कि लाखों-करोड़ों शोषितों एवं पीड़ितों की स्थिति थी। इस प्रकार प्रेमचंद शोषितों के एक वर्ग की ताकत में विश्वास रखते थे। यह कहना शायद गलत ना होगा कि हिन्दी साहित्य में वर्ग संघर्ष की समझ प्रेम चंद के यहां ही जन्म ली।

एक वक्त ऐसा भी आया जब गांधीवाद से उनका मोहभंग हो गया और वे पक्के प्रेमचंद को मार्क्सवादी बन गए प्रसिद्ध उपन्यास 'कर्मभूमि' के अन्त में सेठ जी के स्वर में प्रेमचंद बोलते हैं-'जन आंदोलन को चलाकर और समझौतों को बिना सोचे समझे करके जलती हुई और बहुत बड़ी गलती हुई। सैकड़ों घर बर्बाद हो जाने के सिवा और कोई नतीजा नहीं निकलता है।' ज'इस प्रकार के आंदोलन में मेरा विश्वास नहीं है। इनमें प्रेम की जगह द्वेष बढ़ता है। जब तक रोग का निदान न होगा उसकी ठीक औषधि न होगी केवल बाहरी टीम-टाम से रोग का नाश न होगा।' इसी उपन्यास के अंत में अमर से सलीम का यह बयान कि 'नतीजा यह होगा कि यहीं पड़े रहेंगे और रिआया तबाह होती रहेगी। तुम्हें तो कोई खास तकलीफ नहीं है लेकिन गरीबों पर क्या बीत रही है यह सोचो।' ये विचार यह सिद्ध करते हैं कि गहरी सूझबूझ और समझ ने उन्हें प्रगतिशील विचारधारा से जोड़ दिया।

उन्होंने दोनों सम्प्रदायों की आलोचना भी की तथा सांस्कृतिक एकता पर बल दिया। प्रेमचंद का मानना था कि दोनों की संस्कृति एक है। दोनों की सामाजिक समस्याएं भी एक ही सी हैं। दोनों के बीच गरीबी एवं अशिक्षा बिना किसी भेदभाव के मौजूद है। दोनों के सामने रोटी की समस्या सामान्य रूप से पाई जाती है। जाहिर है गरीबों की मात्र एक संस्कृति होती है और वह है रोटी की संस्कृति। उन्होंने इस रोटी की संस्कृति को विस्तार दिया। रोटी की जरूरत को सर्वोपरि बताते हुए इसलिए कहा कि मैं भी मज़दूर हूं और जिस दिन कुछ लिख नहीं लेता मुझे रोटी का अधिकार नहीं है।

आम आदमी या यूं कहें मज़दूरों की तरह जीवन जीने वाले प्रेमचंद ने जितनी हिम्मत और साहस के साथ अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध लिखा उससे ज़्यादा देश की अंदरूनी सामाजिक अव्यवस्थाओं और कारणों को उजागर करते हुए बेझिझक लिखा जिससे सामंतवादी ताकतें आज तक उनसे ख़फ़ा नज़र आती है। ब्राह्मणवादी व्यवस्था को उन्होंने गरीबों के शोषण और उनके पाखंड का जनक बनाया। इस बीच फासिस्ट ताकतों ने उन्हें स्त्री विरोधी भी बताने की कोशिश की उसकी वजह प्रेमचंद का अपनी पुत्री कमला को ना पढ़ाना बताया जा रहा है इन लोगों को उस दौर की उनकी आर्थिक स्थिति पर गौर करना चाहिए। कुल मिलाकर प्रेमचंद देश में व्याप्त अनगिनत सामाजिक बुराईयों से छुटकारा दिलाने, आपसी सद्भाव कायम रखने, जातिवादी सोच और सामंती वा पूंजीवादी ताकतों के शोषण के ख़िलाफ़ लिखे हैं जिनकी पुर्नस्थापना के लिए आज की सरकार प्रतिबद्ध है इसलिए देश के महान साहित्यकार प्रेमचंद का बायकॉट करवाती है, किताबें जलवातीं है,उनको पाठ्यक्रम से हटवाती है लेकिन प्रेमचंद कालजयी रचनाकार हैं जब तक धरती पर शोषण रहेगा वे प्रासंगिक रहेंगे। प्रेमचन्द ने शोषितवर्ग के लोगों को उठाने का हर संभव प्रयास किया। उन्होंने आवाज लगाई 'ए लोगों जब तुम्हें संसार में रहना है तो जिन्दों की तरह रहो मुर्दों की तरह ज़िंदा रहने से क्या फायदा?'

राजा शंकरशाह विवि. में वीवीएम कालेज के विद्यार्थियों ने लहराया परचम

बैतूल। राजा शंकरशाह विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में जारी की गई प्रवीणय सूची 2021-22 में महाविद्यालय की कॉमर्स की छात्रा योगिता कालभोर 82.67 प्रतिशत, विजेता गायकवाड 81.56 प्रतिशत, पूजा दुबे 80.88 प्रतिशत ने विश्वविद्यालय की एमकॉम की प्रवीणय सूची में उपरोक्त अंक प्राप्त कर क्रमशः द्वितीय, चतुर्थ एवं पंचम स्थान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त वीवीएम महाविद्यालय के माइक्रो बायोलॉजी की विभाग अध्यक्ष अर्चना पाल ने बताया कि शिक्षण सत्र 2020-21 की प्रवीणय सूची में 82.31 प्रतिशत अंक प्राप्त कर जूलॉजी में चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि को प्राप्त करने पर विवेकानंद विज्ञान महाविद्यालय की प्रबंधन समिति के सभी सदस्यों, समस्त प्राध्यापकों, स्टाफ सहित विद्यार्थियों के माता-पिता एवं मित्रों ने हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देकर उनके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

पीएम श्री विद्यालय में लगा स्वास्थ्य शिविर

- छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य की हुई जांच, विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों को दिया परामर्श

बैतूल/मुलताई। पीएम श्री शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय दुनावा में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया जिसमें छात्र छात्राओं का स्वास्थ्य जांच, विशेष परामर्श और जागरूकता गतिविधियां आयोजित की गई। स्वास्थ्य शिविर में

डॉक्टर के अलावा मनोवैज्ञानिक फार्मासिस्ट एवं नर्स और अन्य स्वास्थ्य विशेषज्ञ उपस्थित थे। स्वास्थ्य केंद्र मुलताई से डॉ प्रिया पाल, डॉ धर्मेंद्र पवार , डॉ मूलचंद पवार एवं नर्स चंद्रकला बवाड़े द्वारा स्वास्थ्य परीक्षण किया गया जिसमें सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण एवं नेत्र परीक्षण किया गया। शिविर में छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य संबंधी इंडिकेटर्स की पहचान करके स्वास्थ्य कार्ड तैयार किए जाएंगे चिकित्सा विशेषज्ञों की ओर से हेल्थ स्कैनिंग के आधार पर छात्र-छात्राओं को उचित उपचार के लिए दवाई और परामर्श दिया गया। प्रदेश के सभी पीएम श्री स्कूल के बच्चों के स्वास्थ्य पर फोकस किया जा रहा है। जिसके लिए सभी विद्यालयों में स्वास्थ्य शिविर के लिए फर्स्ट एड बॉक्स, वजन नापने की मशीन, थर्मोमीटर, बीपी जांच के लिए आवश्यक चिकित्सी उपकरण भी उपलब्ध कराए जाएंगे। इस शिविर में डॉक्टर के अलावा विद्यालय के प्राचार्य केशोराव पवार, महेश ठाकुर, विश्वनाथ बिसन्द्रे, रवि मालवी एवं अन्य शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित थे। शिविर में छठवीं क्लास से लेकर 12वीं क्लास तक के लगभग 250 छात्र छात्राओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया।

खेत में मिला आंगनवाड़ी सहायिका का शव, हादसा या हत्या, जांच में जुटी पुलिस

बैतूल/ मुलताई -ग्राम माझरी में एक महिला का कुएं में शव मिलने से हड़कंप मच गया। बताया जा रहा है कि महिला आंगनवाड़ी सहायिका थी और गांव से खेत निंदाई करने गई थी। जब रात तक महिला वापस नहीं आई तो उसे खोजा गया तो उसका शव खेत के कुएं में पड़ा मिला । मासोद चौकी प्रभारी बसंत आहके ने बताया कि सुनंदा पति रामराव कुमरे उम्र 32 वर्ष आंगनवाड़ी सहायिका थी, वह खेत में निंदाई करने गई थी। सुनंदा का खेत घर से लगभग 1 किलोमीटर दूर है। जब देर शाम तक वह घर वापस नहीं आई तो परिजन उसे ढूंढने के लिए खेत गए तो उसका शव कुएं में पड़ा हुआ मिला था। तुरंत रात में इसकी सूचना मासोद पुलिस को दी गई। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर महिला का शव निकला था और आज पोस्टमार्टम करवाया गया। यह हादसा या हत्या फिलहाल पुलिस इस बारे में सभी एंगल से जांच कर रही है।

बेसमेंट पार्किंग व फायर सेफ्टी उपकरणों को लेकर ताबड़तोड़ कार्यवाही

नपा राजस्व और पुलिस की संयुक्त कार्रवाई

- शहर के कई बड़े प्रतिष्ठानों को किया सील

बैतूल। देश की राजधानी दिल्ली में हुए कोचिंग हादसे के बाद जिला प्रशासन भी एक्टिव मोड पर आ गया है। प्रदेश के सीएम के आदेश पर सेफ्टी उपकरणों को लेकर पूरे प्रदेश के साथ-साथ बैतूल में भी नगरीय प्रशासन, राजस्व विभाग और पुलिस विभाग द्वारा प्रतिष्ठानों पर चेकिंग कर कार्यवाही की गई । शहर के गुप्ता मॉल एवं कांतिशिवा टाकीज सहित अन्य प्रतिष्ठानों पर चेकिंग की गई । जिसमे माल एवं टॉकीज में पार्किंग व फायर सेफ्टी की कमियां पाई गई, जिसके चलते कांतिशिवा टॉकीज, गुप्ता माल को सील किया गया। गुप्ता शॉपिंग मॉल में पार्किंग की जगह पर गोदाम बनाया गया था, जिसमें सामान रखा गया था, वही गाड़ियां रोड पर खड़ी रहती है। राज्य शासन से मिले निर्देश के बाद सोमवार को शहर के गंज क्षेत्र में स्थित गुप्ता शॉपिंग मॉल को राजस्व, नप और पुलिस के अमले ने सील कर दिया। अधिकारियों का कहना है कि मॉल संचालक द्वारा बेसमेंट पार्किंग का उपयोग दुकान का सामान रखने के लिए किया जा रहा था। साथ ही मॉल की फायर एनओसी भी नहीं की गई थी। जिसके कारण कलेक्टर के निर्देश पर यह कार्रवाई की गई। इसी के साथ अन्य मॉल संचालकों को भी नोटिस जारी कर जुर्माने की कार्रवाई की गई है। जानकारी के मुताबिक नई दिल्ली में 2 दिन पहले हुए हादसे के बाद शासन से मिले निर्देश पर कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी ने टीएल की बैठक में राजस्व, नपा विभाग के अधिकारियों को ऐसे संस्थान और मॉल, जिन्होंने

फायर एनओसी नहीं ली और नियम विरूद्ध तरीके से संचालन कर रहे हैं, उनके विरूद्ध सील करने की कार्रवाई के निर्देश जारी किए थे। जिसके बाद नगरपालिका, राजस्व अमले ने संयुक्त रूप से सोमवार देर शाम को मॉल पहुंचकर सील करने की कार्रवाई की। इस दौरान पंचनामा भी तैयार किया गया। जांच अधिकारियों ने बताया कि मॉल संचालक ने बेसमेंट बनाया हैं, लेकिन इसका इस्तेमाल बर्तन भंडार के लिए किया जा रहा था, जबकि पार्किंग सडक पर की जा रही थी। फायर सेफ्टी के लिए इंतजाम तो किए गए थे, नगरपालिका से फायर एनओसी नहीं ली गई थी। जिसके चलते मॉल पर यह कार्रवाई की गई।

49 लोगों को नोटिस किए थे जारी

बैतूल नगरपालिका ने फायर एनओसी नहीं लिए जाने पर 49 लोगों को नोटिस जारी किए थे। नोटिस जारी किए जाने के बाद भी किसी ने इसका जवाब नहीं दिया और न ही फायर एनओसी के लिए नगरपालिका में आवेदन किया है। जिसके बाद नगर पालिका द्वारा जुर्माना भी अधिरोपित किया था, लेकिन जुर्माना भी किसी ने नहीं भरा है। जिसके चलते नगरपालिका अब उक्त लोगों के विरूद्ध भी सील करने की कार्रवाई कर सकती है। मॉल के सील होने के बाद प्रशासन की कार्रवाई से बाजार में हड़कंप मच गया है।

व्यावसायिक प्रतिष्ठानों पर अचानक हुई कार्यवाही से व्यापारियों में रोष

बैतूल। सोमवार शाम को शहर के गुप्ता मॉल आदि व्यवसायिक प्रतिष्ठानों पर अचानक हुई कार्यवाही से व्यापारियों में प्रशासन के प्रति रोष व्याप्त हुआ है। कैट व्यापारी संघ के प्रचार सचिव राजेश मदान ने बताया कि केट व्यापारी संघ के पदाधिकारियों ने मंगलवार को नगरपालिका पहुंचकर सीएमओ ओपी भदौरिया, नपा अध्यक्ष पार्वती बाई बारसकर, पूर्व नपा अध्यक्ष आनंद प्रजापति के समक्ष अपना विरोध व्यक्त किया और नियमों की जानकारी मांगी गई जिस पर उन्होंने व्यापारियों को शीघ्र गजट नोटिफिकेशन उपलब्ध कराने के लिए कहा है जिसे पढकर व्यापारियों को यह पता लग सकेगा कि किन व्यापारियों के किस व्यवसायिक प्रतिष्ठान पर कौनसे नियम लागू होंगे। जिनका पालन करना अनिवार्य है। इस अवसर पर कैट व्यापारी संघ के अध्यक्ष मनोज भार्गव,सचिव दीपक खुराना, राकेश गुप्ता, कोषाध्यक्ष मनोज मेहता, संजय गुप्ता सहित अन्य कई व्यापारी मौजूद थे।

जिला अस्पताल में एक और प्रसूता की मौत, बच्चे ने भी दम तोड़ा

बैतूल। जिला अस्पताल बैतूल में प्रसूताओं की मौत का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। दो दिन पहले एक प्रसूता की यहां मौत हो गई थी। अब सोमवार को एक और प्रसूता की मौत का मामला सामने आया है। इस बार प्रसूता के साथ-साथ बच्चे ने भी दम तोड़ दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार घोड़ाडोंगरी ब्लॉक के ग्राम डांगवा की सुमंत्रा कास्देकर को प्रसव पीड़ा होने पर परिजन उसे डिलीवरी के लिए घोड़ाडोंगरी अस्पताल लाए थे। वहां से उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया था। यहां उसकी डिलीवरी हुई।

बांध दिए थे प्रसूता के हाथ- प्रसूता की मां सुशीला बाई का आरोप है कि उसकी बेटी के साथ डिलीवरी कराने वाली नर्स ने मारपीट की। उसके हाथ भी बांध दिए थे। उसके बाद उसकी डिलीवरी हुई। बच्चा मृत पैदा हुआ था। इसके बाद नर्स ने मृत बच्चे को एक थैले में रखकर परिजनों को सौंप दिया।

दो घंटे बाद तोड़ दिया दम- महिला के पति अर्जुन कास्देकर का आरोप है कि डिलीवरी के बाद उसकी पत्नी की हालत और बिगड़ गई। इसके करीब दो घंटे बाद उसने भी दम तोड़ दिया। उन्होंने जिला अस्पताल के स्टाफ पर लापरवाही बरतने

के आरोप लगाए हैं। वहीं कल से मृत बच्चे का शव झोले में रख कर परिजन भटक रहे हैं।

हंगामे के बाद पहुंचे डिप्टी कलेक्टर- मंगलवार को परिजनों ने जिला अस्पताल में हंगामा कर दिया। मामले की सूचना मिलने पर डिप्टी कलेक्टर मसूद खान अस्पताल पहुंचे और जांच का आश्वासन दिया। डॉक्टरों के पैनल से पीएम कराया जा रहा है। अस्पताल में पुलिस बल भी तैनात है। इस मामले में प्रीमेच्योर डिलीवरी होने की बात कही जा रही है।

दो दिन पहले भी हुई मौत- उल्लेखनीय है कि जिला अस्पताल में दो दिन पहले भी एक प्रसूता की मौत हुई थी। उस मामले में बच्चे को जन्म देने के बाद प्रसूता ने दम तोड़ा था। परिजनों ने आरोप लगाया था कि कोई इंजेक्शन लगाने के बाद मौत हुई थी। यह मामला अभी ठंडा पड़ा भी नहीं था कि दूसरा मामला सामने आ गया।

नगरपालिका परिषद के सम्मेलन में कांग्रेसी पार्षदों का जमकर हंगामा

नेता प्रतिपक्ष बोले : अधिकारी गुमराह करते रहे तो उनका मुंह करेंगे काला

बैतूल। चुनाव के करीब पांच माह बाद मंगलवार को नगरपालिका के सम्मेलन में एक बार फिर निर्माण कार्यों में भेदभाव को लेकर कांग्रेसी पार्षदों ने हंगामा कर दिया। बैठक की शुरूआत में ही कांग्रेसी पार्षद मुखर हो गए। अपने वार्डों में निर्माण कार्य नहीं होने से नाराज पार्षदों ने नपाध्यक्ष और अधिकारियों पर कई गंभीर आरोप लगाए। अध्यक्ष और अधिकारियों में तालमेल न होने से नाखुश नेता प्रतिपक्ष राजकुमार दीवान ने बैठक में कहा कि आगे भी ऐसा चलता रहा, तो वे अधिकारियों का मुंह काला करेंगे। नेताप्रतिपक्ष के इस ऐलान के बाद बैठक में सन्नाटा पसर गया। बाल मंदिर सभागृह में मंगलवार को लंबे समय बाद नपा का सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में नपाध्यक्ष पार्वती बारस्कर, उपाध्यक्ष महेश राठौर, सीएमओ ओमपाल सिंह भदौरिया समेत पार्षद और अधिकारी मौजूद थे। सम्मेलन में हालांकि नए विषय शामिल नहीं किए गए थे, लेकिन 35 पुराने विषयों पर चर्चा की गई। अधिकांश विषय पर सहमति तो बन गई, लेकिन कुछ पर पार्षदों की नाराजगी भी सामने आई है। नपाध्यक्ष ने परिषद के सम्मेलन में सभी 35 एजेंडों का वाचन किया। इस पर कांग्रेस के पार्षद आपत्ति उठाते रहे, लेकिन सभी विषय पारित कर लिए गए।

कांग्रेसी पार्षदों का फिर हंगामा- नपा का सम्मेलन शुरू होते ही नेता प्रतिपक्ष और युवा नेता राजकुमार दीवान, कांग्रेस पार्षद नंदनी तिवारी, अशोक नागले, नफीस खान ने भेदभाव का आरोप लगाना शुरू किए। इसकी शुरूआत नेता प्रतिपक्ष दीवान की और कहा कि नगरपालिका कामों और बजट के लिए कांग्रेसी पार्षदों के साथ भेदभाव कर रही है। उनका आरोप था कि भाजपा पार्षदों के वार्ड में मनमाना बजट दिया जा रहा है और कांग्रेसी पार्षदों के वार्ड में भेदभाव किया जा रहा है। पार्षद नंदनी तिवारी ने कहा कि पिछले दो वर्षों से अपने वार्ड स्थित स्कूलों में छात्र-छात्राओं के शौचालय बनाने की मांग कर रही है, लेकिन हर बार मांग को बजट का अभाव बताकर अनसुना कर दिया जा रहा है। उनका आरोप था कि छोटी क्लास के छात्राओं के मामले में भाजपा परिषद कोई सूध नहीं ले रही है। उनके वार्ड में 16 तारीख को निर्माण कार्यों के टेंडर लगाए, किसके कहने पर किए। इस पर अध्यक्ष बारस्कर ने कहा कि उनसे कोई चर्चा नहीं की गई, जबकि सीएमओ ने जवाब नहीं दे पाए।

पार्षद के डस्ट बिछाने पर भी बवाल- नेता प्रतिपक्ष राजकुमार दीवान ने पार्षद नंदनी तिवारी को अपने वार्ड में डस्ट बिछाने के लिए जेसीबी नहीं दिए जाने पर भी तीखे सवाल किए। बैठक में उन्होंने कहा कि जेसीबी के लिए अध्यक्ष से बात करने का कहा जाता है। अधिकारी कहते है कि अध्यक्ष से बात करो और अध्यक्ष, अधिकारियों पर टाल रहे है।

दुकानदार को दुर्लभ प्रजाति के सांप ने डंसा, लोगों ने बनाया बंधक

बैतूल। घोड़ाडोंगरी ब्लॉक के भोपाली में प्रसिद्ध शिवधाम छोटा महादेव है। यहां इन दिनों सावन के चलते श्रद्धालुओं का हुजूम लगा रहता है। खासतौर से श्रावण सोमवार पर बड़ी संख्या में यहां भक्त पहुंचते हैं। श्रद्धालुओं की आवाजाही के चलते यहां कई दुकानें भी लगी हैं। सोमवार को भी यहां दुकानें लगी थी और भक्तों का आना-जाना भी लगा था। इसी बीच केले की दुकान लगाने वाले दुकानदार राजू मोरले को दुर्लभ प्रजाति के हरे रंग के सांप ने काट लिया। जिससे उसकी तबीयत बिगड़ गई। दुकानदार को गंभीर हालत में घोड़ाडोंगरी अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां उसका इलाज चल रहा है। इधर लोगों को जानकारी मिलते ही उन्होंने सांप को

पकड़कर एक बोतल में बंद कर दिया। उसे बंधक बनाकर रख लिया। इधर सांप को बंधक बनाकर रखने की जानकारी सतपुड़ा बायोडायवर्सिटी कंजर्वेशन सोसायटी के अध्यक्ष आदिल खान को मिली।

बैंबो बिट वाइपर प्रजाति- इस पर वे मौके पर पहुंचे और लोगों को समझाईश देकर सांप को छुड़ाया। इसके बाद सांप को सुरक्षित जंगल में आजाद छोड़ दिया। आदिल खान ने बताया कि यह बैंबो बिट वाइपर प्रजाति का सांप है। यह जंगल में पेड़ों के बीच रहना पसंद करता है। यह सांप दुर्लभ प्रजाति का माना जाता है।

फीस माफी, पुलिस द्वारा कोरे कागज पर हस्ताक्षर

वेतन नहीं मिलने आदि संबंधी शिकायतों पर कलेक्टर ने दिए कार्रवाई के निर्देश

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी एवं अपर कलेक्टर (विकास) अक्षत जैन ने जनसुनवाई के दौरान 142 प्रकरणों पर कार्रवाई की। इनमें मोहम्मद साबिर द्वारा बच्चों की फीस माफी, झल्लार के श्री वासुदेव ने पुलिस द्वारा कोरे कागजों पर हस्ताक्षर करवाने, जिला चिकित्सालय में आईसीयू सपोर्टिंग स्टाफ द्वारा वेतन नहीं मिलने जैसी शिकायतों पर अधिकारियों को गंभीरतापूर्वक कार्रवाई के निर्देश प्रदान किए। कलेक्टर मंगलवार को राजस्व अधिकारियों के साथ कलेक्टोरेट सभागार में जनसुनवाई कर रहे थे। कलेक्टर ने जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ आवेदकों के प्रकरणों पर सुनवाई कर रहे थे। आजाद वार्ड बैतूल निवासी मोहम्मद शाबिर ने अपनी आर्थिक परिस्थितियों के चलते अपनी बेटी और भांजी की स्कूल फीस माफ करने का अनुरोध किया। उन्होंने लेख किया कि विनायकम स्कूल में

पांचवी की कक्षा उत्तीर्ण उनकी पुत्री एवं भांजी की फीस देना शेष है। फीस माफी का उन्होंने अनुरोध किया। कलेक्टर ने जिला शिक्षा अधिकारी को आवेदन अग्रेषित करते हुए कार्रवाई के निर्देश दिए।

आरोपियों को बचाने का प्रयास

भैंसदेही तहसील के ग्राम आमला निवासी आवेदक श्री वासुदेव द्वारा अपनी शिकायत में राजेश लोखंडे, गंगाधर लोखंडे एवं अन्य के विरूद्ध मारपीट किए जाने की शिकायत करते हुए लेख किया कि झल्लार पुलिस द्वारा आरोपियों को बचाने का किया जा रहा है। आरोपियों के विरुद्ध कुल्हाड़ी से मारपीट का गंभीर अपराध दर्ज ना करते हुए मामूली धारा लगाई गई और आवेदकों से कोरे कागज पर हस्ताक्षर करवाए और उल्टा शिकायतकर्ता देवेन्द्र और राजेश आत्मज वासुदेव को जेल में बंद करवा दिया गया है। कलेक्टर ने पुलिस अधीक्षक को आवश्यक कार्रवाई के लिए प्रकरण प्रेषित किया है।

सरकारी सडक को अतिक्रमण से करें मुक्तः तिलक वार्ड बैतूल निवासी सबरून निशा ने दिए अपने आवेदन में बताया कि ग्राम गौठाना स्थित एक एकड़ जमीन खसरा 120.3 वर्ष 1993 से उनके स्वामित्व की है। नक्शे के अनुसार जमीन के बगल से शासकीय सडक दर्शाई गई है। परंतु अन्य भू-स्वामियों द्वारा उक्त स्थान पर दीवार निर्माण कर सडक अवरूद्ध करते हुए दीवार बनाकर उक्त जमीन को अपने कब्जे में कर लिया गया है। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने नियमानुसार शिकायत का निराकरण कर सडक मार्ग का अतिक्रमण से मुक्त कराने के निर्देश दिए।

टावर को अन्य जगह लगाने की मांगः बैतूल की जसोंदी पंचायत के ग्राम घुटीगढ़ निवासी रामचरण शेषकर ने बीएसएनएल टावर को हटाकर किसी अन्य स्थान पर लगाए जाने संबंधी आवेदन दिया। आवेदन के माध्यम से बताया कि बीएसएनएल कंपनी के अधिकारी एवं भू-राजस्व विभाग हल्का नं.62 के पटवारी की मिलीभगत से जानबूझकर टावर लगाया जा रहा है। टावर लगने से आसपास के 8 से 10 परिवारों को परेशानी होगी और बिल्डिंग गिरने का खतरा बना रहेगा। प्राप्त आवेदन पर कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने तहसीलदार बैतूल (ग्रामीण) को की जांच कर निराकरण किए जाने के निर्देश दिए। इस अवसर पर अपर कलेक्टर (विकास) एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी अक्षत जैन, एसडीएम तृप्ति पटेरिया एवं अन्य विभागों के अधिकारी उपस्थित थे।

थाना सांईखेड़ा पुलिस ने बसों एवं वाहनों की चेकिंग कर की चालानी कार्यवाही

बैतूल/ मुलताई । थाना सांईखेड़ा पुलिस द्वारा पुलिस अधीक्षक के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए बरसात के

मौसम में यात्री वाहन तथा मालवाहक वाहनों की फिटनेस की सघनता से चेकिंग की गई। वाहनों के दस्तावेजों जैसे फिटनेस, परमिट एवं इंश्योरेंस, पीयूसी, लाइसेंस एवं अन्य दस्तावेजों की जांच की गई। वाहन चालकों को यातायात नियम संबंधी जानकारी से अवगत कराया एवं थाना क्षेत्र अंतर्गत संचालित स्कूल बसो का भी निरीक्षण किया गया। बसो के दस्तावेजों को चेक कर सुरक्षा संबंधी व्यवस्था चेक की गई। बसों के दस्तावेजों को चेक कर सुरक्षा संबंधी व्यवस्था चेक की गई। बस चालकों को सावधानीपूर्वक एवं यातायात नियमों का पालन करने संबंधी निर्देश दिये गये। उक्त कार्यवाही की दौरान थाना सांईखेड़ा निरीक्षक मुकेश ठाकुर, प्रधान संपादक रामानंद, बलवीर मर्सकोले, रविन्द्र नागले, आरक्षक विनोद साहू एवं सैनिक चंद्रभान उपस्थित थे।

मनीष सर की शैक्षणिक सामग्री का हुआ विमोचन

नरसिंहपुर। सी एम राइज विद्यालय साईखेड़ा पदस्थ सामाजिक विज्ञान विषय के नवाचारी शिक्षक मनीष शंकर तिवारी द्वारा कक्षा 10 के चारों विषयों के पाठ्यक्रम आधारित माइंड मैप, फ्लो चार्ट्स तथा महत्वपूर्ण बिंदुओं के रेखा चित्रों, मानचित्रों और विषय वस्तु हेतु उपयोगी चित्रों से सुसज्जित चार पुस्तिकाओं इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान का विमोचन संस्था प्राचार्य चंद्रकांत विश्वकर्मा के कर कमलों से सायं संस्था के शिक्षकों के बीच किया। श्री विश्वकर्मा ने इस अवसर पर इस प्रयास को विद्यालय हित में मील का पत्थर बताया। ज्ञात हो कि मनीष तिवारी द्वारा निरंतर शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार किये जाते हैं। कोरोना काल में मनीष के वीडियो मध्यप्रदेश के दूरदर्शन केंद्र से भी प्रसारित हुए थे। अपने विभिन्न नवाचारों तथा विद्यार्थियों के प्रति उनके समर्पण को सम्मान देते हुए जिला कलेक्टर द्वारा भी गत वर्ष सम्मानित किया गया था।छात्रोपयोगी इन पुस्तिकाओं के विमोचन कार्यक्रम में भानुप्रताप राजपूत ने कहा कि श्री तिवारी द्वारा तैयार यह शैक्षणिक सामग्री पाठ्यक्रम को सरल रूप में प्रस्तुत करता है। मनीष तिवारी ने इस अवसर पर जिला शिक्षा अधिकारी तथा विकास खण्ड शिक्षा अधिकारी के कुशल मार्गदर्शन को धन्यवाद देते हुए कहा कि शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के नेतृत्व में यह अवसर मिल रहा है जिससे विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं।

प्रेमचंद की कहानियां अंधेरे में किरण की तरह

भोपाल। मुंशी प्रेमचंद बेशक हमारे सर्वश्रेष्ठ लेखक हैं क्योंकि बच्चों से लेकर बड़ों तक हर वर्ग और हर समुदाय के लोग उन्हें पढ़ते हैं। वह अपने समय की चुनौतियों, राजनीति और विदेशी सत्ता को अपने लेखन में बराबर अनेक मोर्चों पर निशाना बनाते रहे। यह बात प्रतिष्ठित लेखक एवं पूर्व प्राध्यापक उर्मिला शिरीष ने क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान सभागार में 'प्रेमचंदः पीढ़ियों का संवाद' आयोजन में बतौर मुख्य अतिथि कही। मप्र हिंदी साहित्य सम्मेलन, भोपाल एवं क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में हुए इस आयोजन में वनमाली कथा के संपादक मुकेश वर्मा और उर्दू के वरिष्ठ साहित्यकार इकबाल मसूद ने विशेष वक्ता के रूप में मंच पर उपस्थित रहे। सम्मेलन की भोपाल इकाई के अध्यक्ष भवेश दिलशाद ने प्रेमचंद की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में प्राध्यापक चित्रा सिंह ने कहा कि प्रेमचंद की अनेक कथाएं आज भी भारतीय जनमानस को उद्वेलित कर रही हैं और हमेशा युवा पीढ़ी को उद्वेलित करती रहेंगी। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के प्राचार्य जयदीप मंडल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। स्वागत वक्तव्य में प्राध्यापक सुरेश मकवाना ने प्रेमचंद साहित्य से प्रासंगिक विचारों का उल्लेख किया। इसके बाद प्रसिद्ध रंगकर्मी विवेक सावरीकर ने मुंशी प्रेमचंद की एक महत्वपूर्ण कहानी 'रामलीला' का नाटकीय अंदाज में वाचन किया।

लुटेरी सौतन ने पीटा ब्याहता पत्नी को और लूटा पति को, साथियों को भी नहीं छोड़ा

देवास। देवास जिला कलेक्टर परिसर में मंगलवार को जनसुनवाई में अनूठा मामला सामने आया। मामला बागली से जुड़ा हुआ होकर हाई प्रोफाइल मामला है। इस मामले में जफर भुट्टो नामक शख्स की ब्याहता पत्नी ने अपनी सौतन शबनम शेख पर आरोप लगाते हुए कहा कि जब से यह जिंदगी में आई है उसने उसके पति जफर भुट्टो से विगत 5 वर्षों में करोड़ों रुपए अपने रिश्तेदारों के नाम पर लिए हैं। खुद की शिक्षा दीक्षा भी और मकान के साथ अन्य देश आराम भी उन्हीं की दौलत से की गई। 5 दिन पूर्व वही सौतन जफर भुट्टो के घर पर पहुंची और निकाह वाली पत्नी के साथ गंभीर मारपीट की जिसका मेडिकल सोमवार 29 जुलाई को बागली हॉस्पिटल में करवाया गया और बागली थाने पर विभिन्न धाराओं में रिपोर्ट भी दर्ज की गई है । पीड़ित महिला सर में अंदरूनी चोट लगने के कारण देवास इलाज करने पहुंची मंगलवार को जनसुनवाई में जफर खान भुट्टो की पत्नी अपनी फरियाद लेकर जिला कलेक्टर कार्यालय एवं पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंची जहां पर अपनी पूरी आपबीती बताई। इसी दौरान जफर भुट्टो के साथ बागली क्षेत्र के दो अन्य लोगभी भी इस महिला का शिकार हो गए हैं उन लोगों का कहना है कि उन्होंने संबंधित महिला के साथ मिलकर तीन लोगों ने करनावद के पास लगभग 35 आरे जमीन खरीदी थी तीनों का नाम उसे जमीन पर है। लेकिन दो पार्टनर को बगैर बताएं संबंधित महिला ने उक्त जमीन का सौदा इंदौर के किसी व्यापारी से कर दिया और 11 लाख रुपए बयाना स्वरूप वसूली करली जिसकी शिकायत भी संबंधित व्यक्ति ने इंदौर थाना क्षेत्र में की है। पीड़ित दो पार्टनर ने भी बागली थाने पर इस संबंध में आवेदन दिया उनका कहना है कि उनके फर्जी हस्ताक्षर करके उक्त जमीन महिला द्वारा बाल बाल बचने का मामला सामने आया था। जैसे ही उन्हें मालूम हुआ उन्होंने हस्ताक्षर करने से मना कर दिया और सौदा निरस्त हो गया। उक्त महिला पेशे से वकील बताई जाती है। ओर यह डिग्री भी झूठ पिछड़ा वर्ग जाति का प्रमाण पत्र देकर ली गई है।

जन-समस्या निवारण शिविरों का आयोजन

नरसिंहपुर। नरसिंहपुर वृत अंतर्गत विद्युत उपभोक्ताओं की बिजली बिल एवं विद्युत संबंधी शिकायतों / समस्याओं के निराकरण के लिये वृत कार्यालय, संभागीय कार्यालय एवं वितरण केन्द्र कार्यालय स्तर पर संबंधित अधिकारियों की उपस्थिति में कुल 30 नंबर जन-समस्या निवारण शिविरों का आयोजन किया गया। आयोजित किये गये शिविरों में 48 नंबर शिकायतें प्राप्त हुई जिसमें से 41 नंबर शिकायतों का त्वरित निराकरण किया गया तथा शेष 07 नंबर शिकायतों के निराकरण हेतु प्राथमिकता से कार्यवाही की जा रही है।

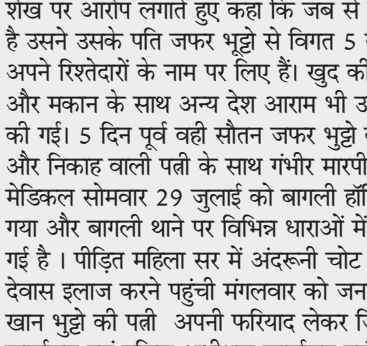

श्री गुरु टेकचंद सामाजिक एवं धार्मिक ट्रस्ट की साधारण सभा एवं प्रतिभा सम्मान समारोह सम्पन्न

देवास। श्री दामोदर वंशिय गुजराती दर्जी समाज द्वारा संचालित श्रीगुरु टेकचंद सामाजिक एवम धार्मिक ट्रस्ट देवास की साधारण सभा एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन 28 जुलाई को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता समाज के वरिष्ठ रामेश्वर सोलंकी, मुख्य अतिथि दिलीप परमार ट्रस्ट संरक्षक देवास और कड़छा एवं दीपचंद मेहता ट्रस्ट संरक्षक देवास, ट्रस्ट अध्यक्ष सत्यनारायण सोलंकी द्वारा श्री गुरू टेकचंद जी महाराज के चित्र पर माल्यार्पण किया एवं दीप प्रज्वलित कर आम सभा का शुभारम्भ किया। वित्तीय वर्ष 2023-24 के आय एवं व्यय पत्रक का वाचन कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश की सोलंकी द्वारा किया गया।

ट्रस्ट अध्यक्ष सत्यनारायण सोलंकी द्वारा विगत 3 वर्षो के ट्रस्ट के कार्यकाल की उपलब्धियों पर प्रकाश डाल कर समाज को अवगत करवाया गया। दिलीप परमार द्वारा समाज के गार्डन हेतु नई भूमि क्रय करने हेतु पहल की गई। समाज के वक्ता मोहन परिहार द्वारा मृत्यु भोज, दहेज प्रथा, मामेरा प्रथा के स्वरूप सीमित करने का सुझाव दिया गया एवं

समाज मे अगर कोई विवाद होता है तो उसे समाजजनों के साथ बैठकर समाधान किये जाने का प्रस्ताव रखा गया। इस हेतु समाज में एक पारिवारिक समाधान समिति का गठन करने का सुझाव दिया गया। दीपचन्द मेहता द्वारा मृत्यु भोज को सीमित करने हेतु मृत्यु भोज का खाना नही खाने हेतु संकल्प दिलाया। ट्रस्ट के आगामी 3 वर्षो के कार्यकाल हेतु समाज के वरिष्ठजन द्वारा ट्रस्ट सदस्यों की सहमति लेकर चुनाव अधिकारी अजय सोलंकी की अनुमति से सर्व सम्मति से नए कार्य काल के लिए अध्यक्ष पद पर मोहन परिहार पूर्व प्रबंधक मध्य प्रदेश ग्रामीण बैंक एवं नवीन ट्रस्ट कार्यकारणी की घोषणा की गई। उपस्थित सभी सदस्यों ने श्री परिहार को शुभकामनाएं दी। श्री परिहार ने अपने संबोधन में समाज को आदर्श समाज बनाने का संकल्प लिया और बताया कि वर्तमान अध्यक्ष सत्यनारायण सोलंकी के द्वारा सामाजिक एकता के लगातार प्रयास एवं वरिष्ठजनों और ट्रस्ट सदस्यों की सहमति से ही निर्विरोध चुनाव सम्पन्न हुए। उन्होंने सम्पूर्ण समाज के प्रति आभार व्यक्त किया।सभा समाप्ति की घोषणा की गई। इसके पश्चात प्रतिभा सम्मान समारोह की शुरुआत हुई। मुख्य अतिथि मोहन वर्मा साहित्यकार एवं कवि, अजय सोलंकी शिक्षा विकास खंड अधिकारी देवास द्वारा प्रतिभावान विद्यार्थियों की शील्ड एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। राजेन्द्र परमार द्वारा प्रतिभावान छात्रों को मैडल, दिलीप परमार द्वारा कॉपी एवं पेन का सेट, घनश्याम जाधव द्वारा फोटो वितरित किए।

इस अवसर पर ट्रस्ट के मंदिर के पुजारी श्री बैरागी को भी उनकी उत्कृष्ट सेवा के लिए सम्मानित किया गया। साथ ही समाज मे विशेष प्रतिभावान बच्चों आनंद दिलीप परमार को उज्जैन नगर निगम में सिविल इंजीनियर के पद पर नियुक्ति होने, चित्रांश प्रतीक सोलंकी को आईआईटी रुड़की हरिद्वार में चयन होने, जया राजेश पडियार एवं समृद्धि मिलिंद सोलंकी को चार्टेड अकाउंटेंट बनने, ज्योती मुकेश नायक को एयरफोर्स में अग्निवीर योजना में चयन होने और श्रद्धा संजय जाधव को उनकी उत्कृष्ट पेंटिंग के लिए सम्मानित किया गया। अधिक मेहनत करने एवं भविष्य के लिए पानी बचाओ ,स्वच्छता अभियान को जीवन का हिस्सा बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। अजय सोलंकी द्वारा समाज के बच्चो को भविष्य के लिए अपना लक्ष्य तय करने के बारे में प्रेरित किया और एक सुंदर गीत भी सुनाया एवं बच्चो के उज्वल भविष्य की कामना की। बड़ी संख्या में मातृ शक्ति ,बच्चे एवं सामाजिक बंधु कार्यक्रम में शामिल हुए। संचालन ट्रस्ट सचिव शिरिष मेहता द्वारा किया गया, ट्रस्ट के उपाध्यक्ष प्रदीप चावड़ा ने सभी सामाजिक बंधुओ और अतिथियों का आभार माना। इसके पश्चात गुरुदेव की आरती में की गई। सभी सामाजिक बंधुओ ने भोजन प्रसादी ग्रहण की। उक्त जानकारी ट्रस्ट मीडिया प्रभारी दिलीप सोलंकी ने दी।

कलेक्टर एवं एसपी ने किया नर्मदा नदी घाटों का निरीक्षण

नरसिंहपुर। कलेक्टर शीतला पटले और एसपी अमित कुमार ने मंगलवार को नर्मदा नदी तट बरमान, हीरापुर और ककराघाट का निरीक्षण किया।विदित है कि ज़िले में हुई अतिवर्षा एवं सोमवार को नर्मदा नदी के बरगी डैम में जल निकासी के लिए 7 गेट खोले गए थे जिससे नदी के सभी तटों पर जलस्तर बढ़ गया है। घाटों के निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने निर्देश दिए कि नर्मदा नदी जल प्रवाह अधिक होने के कारण तटवर्ती इलाक़े में होमगार्ड,पुलिस,राजस्व एवं पंचायत विभाग का अमला चौबीस घंटे निगरानी रखें।इसके लिए टीम तैयार कर ली जाये। नाव एवं बोट संचालकों को सख़्त हिदायत दी जायें कि बड़े हुए जल स्तर में किसी भी प्रकार से नौका विहार नहीं हो। तटों के समीप बोर्ड एवं संकेतक भी लगवाए जाये जिससे लोग सतर्क रहें। लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित की जाये। हर स्थिति में स्थानीय प्रशासनिक अमला वरिष्ठ अधिकारियों से संपर्क में रहें और हर एक गतिविधि की जानकारी दें। इस दौरान एसडीएम श्रीमती संघमित्रा गौतम,तहसीलदार श्री नीरज तखरिया,नायब तहसीलदार श्री पारस मिश्रा एवं श्री विक्रम ठाकुर मौजूद थे।

राष्ट्रीय किसान मजदूर महासंघ नरसिंहपुर जिला इकाई की बैठक

नरसिंहपुर। राष्ट्रीय किसान मजदूर महासंघ नरसिंहपुर जिला इकाई की बैठक - संगठन विस्तार एवं दो माह अगस्त एवं सितंबर चलने वाली सदस्यता अभियान को लेकर मंडी रोड स्टेशन गंज नरसिंहपुर में संपन्न हुई । बैठक में मुख्यतः महाकौशल प्रांत से ऋषिराज पटेल, जिला अध्यक्ष कमल सिंह लोधी, चौधरी लोकेश सिंह पटेल, राजेश पटेल, मातवर सिंह पटेल, रविंद्र सिंह पटेल, प्रदीप गुमास्ता, विमलेश पटेल, राजू गुमास्ता, राम जी गुमास्ता, मनोहर लोधी, कमलेश पटेल, तेजबल सिंह, चेतराम पटेल, जितेंद्र लोधी, गोलू, पासराम, विशाल, प्रशांत सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारीगढ़ ओर किसान उपस्थित रहे । इसके उपरांत सभी पदाधिकारी गण और किसान मिलकर कलेक्ट कार्यालय पहुंचकर मूंग से संबंधित मूंग के खरीदी स्लॉट को 15 दिनों को बढ़ाने, एवं क्रय की गई मूंग के नियमानुसार 7 दिवस में शीघ्र भुगतान न होने की समस्याओं को लेकर मुख्यमंत्री के नाम कलेक्टर को ज्ञापन सोपा ।

मौत बांटते असुरक्षित कोचिंग सेंटर, पीजी और हॉस्टल

विडम्बनापूर्ण है ऐसे जलभराव एवं आगजनी के हादसों से सबक नहीं लिया जाता। यह प्रवृत्ति दुर्भाग्यपूर्ण है। विडम्बना देखिये कि ऐसे भ्रष्ट शिखरों को बचाने के लिये सरकार कितने सारे झूठ का सहारा लेती है। राजधानी में रह-रह कर एक के बाद एक हो रहे हादसों के बावजूद दिल्ली-सरकार की नींद नहीं खुल रही है। हाल ही में गुजरात के राजकोट में एक एम्यूजमेंट पार्क के अंदर गेमिंग जोन में लगी आग की लपटें हो या राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में बच्चों के एक प्राइवेट हॉस्पिटल में आग लगना और अब कोचिंग सैंटर में तीन होनहार एवं देश के भविष्य बच्चों का दर्दनाक तरीके से डूबकर मर जाना-निश्चित रूप से ये हादसे प्रशासनिक लापरवाही की उपज हैं, यही कारण है कि सिस्टम में खामियों और ऐसी आपदाओं को रोकने में सरकारी अधिकारियों की लापरवाही की निंदा भी व्यापक स्तर की जा रही है।

ललित गर्ग

लेखक, पत्रकार, स्तंभकार

दिल्ली में सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी कराने वाले एक कोचिंग सेंटर के बेसमेंट में पानी भरने से तीन छात्रों की मौत-हादसे ने समूचे राष्ट्र को दुःखी एवं आहत किया है, यह हादसा नहीं, बल्कि मानव जनित त्रासदी है, लापरवाही एवं लोभ की पराकाष्ठा है। इस त्रासदी की जड़ में है घोर दोषग्रस्त कोचिंग प्रणाली और व्यवस्था की जड़ों में समा गया बेलगाम भ्रष्टाचार। इससे संतुष्ट नहीं हुआ जा सकता कि कोचिंग संस्थान के दो लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया है, क्योंकि दिल्ली नगर निगम के उन कर्मचारियों और अधिकारियों को क्यों नहीं गिरफ्तार किया गया जो सब कुछ जानते-बूझते हुए इस संस्थान को बेसमेंट में लाइब्रेरी चलाने की सुविधा प्रदान किए हुए थे। इस दुःखद एवं पीड़ादायक घटना ने एक बार फिर यही साबित किया है कि निर्माण कार्यों में फैले व्यापक भ्रष्टाचार और शासन तंत्र में बैठे लोगों की मिलीभगत के बीच ईमानदारी, नैतिकता, जिम्मेदारी या संवेदनशीलता जैसी बातों की जगह नहीं है। जिसकी कीमत निर्दोषों को अपनी जान गंवा का चुकानी पड़ रही है। निश्चित ही देशभर में कुकुरमुत्तों की तरह उग आए कोचिंग सैंटर डैथ सैंटर बन चुके हैं। कोचिंग सैंटरों का कारोबार शासन के दिशा-निर्देशों की धज्जियां उड़ाकर चल रहे हैं। छात्रों को सुनहरी भविष्य का सपना दिखा कर मौत बांटी जा रही है। आजादी के अमृत-काल में पहुंचने के बाद भी भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, बेईमानी हमारी व्यवस्था में तीव्रता से व्याप्त है, अनेक हादसों एवं जानमाल की हानि के बावजूद भ्रष्ट हो चुकी मोटी चमड़ी पर कोई असर नहीं होता। प्रश्न है कि सेंटर के मालिक को तो गिरफ्तार कर लिया लेकिन ऐसी घटनाओं के दोषी अधिकारी क्यों नहीं गिरफ्तार होते?

शनिवार की शाम राजधानी दिल्ली के ओल्ड राजेन्द्र नगर के कोचिंग सैंटर में हुए हादसे में तीन छात्रों नेविन डोल्विन, तान्या सोनी और श्रेया यादव की दुखद मौत ने अनेक सवालों को खड़ा किया है। केरल का रहने वाला नेविन आईएएस की तैयारी कर रहा था और वह जेएनयू से पीएचडी भी कर रहा था। उत्तर प्रदेश की श्रेया यादव ने अभी एक महीना पहले ही इस कोचिंग सेंटर में दाखिला लिया था। कोचिंग सेंटर के बेसमेंट में लाइब्रेरी चल रही थी जहां 150 छात्रों के बैठने की व्यवस्था थी। हादसे के वक्त 35 छात्र मौजूद थे। चंद मिनटों में ही बेसमेंट में पानी भर गया। सिर्फ इसी सेंटर में नहीं, बल्कि लगभग सभी शैक्षणिक कोचिंग सेंटर के बेसमेंट में लाइब्रेरी बनाई गई है। जिसके गेट बायोमेट्रिक आईडी से खुलते हैं, जैसे ही बारिश होती है, बिजली चली जाती है, उसके बाद बेसमेंट से निकलना बिना बायोमैट्रिक आईडेंटिफिकेशन के मुश्किल होता है। ऐसी स्थिति में हादसे और मौत की संभावना बढ़ जाती है। ओल्ड राजेंद्र नगर के न सिर्फ कोचिंग सैंटर बल्कि पीजी और हॉस्टल की असुरक्षित हालत भी मौत लिये किसी भी क्षण बड़े हादसे की संभावना के साथ खड़ी है। जहां इस कदर अवैध निर्माण है कि कभी भी दूसरा या दोबारा हादसा हो सकता है। इसलिये ऐसे हादसों की जांच से काम नहीं चलने वाला।

विडम्बनापूर्ण है ऐसे जलभराव एवं आगजनी के हादसों से सबक नहीं लिया जाता। यह प्रवृत्ति दुर्भाग्यपूर्ण है। विडम्बना देखिये कि ऐसे भ्रष्ट शिखरों को बचाने के लिये सरकार कितने सारे झूठ का सहारा लेती है। राजधानी में रह-रह कर एक के बाद एक हो रहे हादसों के बावजूद दिल्ली-सरकार की नींद नहीं खुल रही है। हाल ही में गुजरात के राजकोट में एक एम्यूजमेंट पार्क के अंदर गेमिंग जोन में लगी आग की लपटें हो या राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में बच्चों के एक प्राइवेट हॉस्पिटल में आग लगना और अब कोचिंग सैंटर में तीन होनहार एवं देश के भविष्य बच्चों का दर्दनाक तरीके से डूबकर मर जाना-निश्चित रूप से ये हादसे प्रशासनिक लापरवाही की उपज हैं, यही कारण है कि सिस्टम में खामियों और ऐसी आपदाओं को रोकने में सरकारी अधिकारियों की लापरवाही की निंदा भी व्यापक स्तर की जा रही है। यह याद रखने योग्य है कि नियमित अंतराल पर मानवीय जिम्मेदारी वाले पहलू की अनदेखी से ऐसी गंभीर घटनाएं होने के बावजूद अधिकारियों की उदासीनता और लापरवाही कम होती नहीं दिख रही है। इन त्रासद हादसों ने कितने ही परिवारों के घर के चिराग बुझा दिए।

परिवार वालों ने और छात्रों ने स्वर्णिम भविष्य के सपने संजो कर और लाखों की फीस देकर कोचिंग शुरू की होगी लेकिन उन्हें नहीं पता था कि उन्हें इस तरह मौत मिलेगी। छात्रों की मौत को महज हादसा नहीं माना जा सकता, यह एक तरह से निर्मम हत्या है और हत्यारा है हमारा सिस्टम। हादसे से आक्रोशित छात्रों का कहना है कि वे 10-12 दिन से दिल्ली नगर निगम से कह रहे हैं कि ड्रेनेज सिस्टम की सफाई कारवाई जाए लेकिन किसी भी जनप्रतिनिधि और जिम्मेदार अधिकारियों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। हादसे तभी होते हैं जब नियमों और कानूनों को ताक पर रखा जाता है। तंत्र की काहिली और आपराधिक लापरवाही के चलते ऐसे हादसे होते हैं जिनमें भ्रष्टाचार पसरा होता है, जब अफसरशाह लापरवाही करते हैं, जब स्वार्थ एवं धनलोलुपता में मूल्य बौने हो जाते हैं और नियमों और कायदे-कानूनों का उल्लंघन होता है। जलभराव क्यों और कैसे हुआ, यह तो जांच का विषय है ही लेकिन इन शैक्षणिक एवं व्यावसायिक इकाइयों को उसके मालिकों ने मौत का कुआं बना रखा था। आखिर क्या वजह है कि जहां दुर्घटनाओं की ज्यादा संभावनाएं होती हैं, वही सारी व्यवस्थाएं फेल दिखाई देती है? सारे कानून कायदों का वहीं पर स्याह हनन होता है। हर दुर्घटना में गलती भ्रष्ट आदमी यानी अधिकारी एवं व्यवसायी की ही होती है, लेकिन दुर्घटना होने के बाद ही उन पर कार्रवाई क्यों होती है? सरकार पहले क्यों नहीं जागती?

वैसे तो बेसमेंट में कोचिंग सैन्टर या लाइब्रेरी चलाना गैर-कानूनी है, इस घटना के सन्दर्भ जब बेसमेंट में स्टोर या पार्किंग की अनुमति दी गई थी तो वहां लाइब्रेरी कैसे चलने लगी? स्पष्ट है कि कोचिंग संचालकों और दिल्ली नगर निगम के अधिकारियों की मिलीभगत से ऐसा हो रहा होगा। जलभराव के कारण पानी जब बेसमेंट में घुसा तब लाइब्रेरी में 30-35 छात्र थे। यह तो गनीमत रही कि तीन अभागे छात्रों को छोड़कर बाकी सब जैसे-तैसे निकल आए। इस इलाके में बरसात में हर समय जलभराव होता है, लेकिन किसी ने उसकी सुध नहीं ली। इसका कोई विशेष औचित्य नहीं कि एमसीडी ने एक जांच समिति गठित करने की बात कही है। जांच के नाम पर लीपापोती होने की ही आशंका अधिक है। दिल्ली की घटना इसकी परिचायक है कि जिन पर भी शहरी ढांचे की देखरेख करने और उसे संवारने की जिम्मेदारी है, वे अपना काम सही से करने के लिए तैयार नहीं। यही कारण है कि देश की राजधानी के साथ-साथ अन्य महानगरों का भी शहरी ढांचा बुरी तरह चरमरा गया है।

बात हम नया भारत एवं विकसित भारत की करते हैं, लेकिन हमारी व्यवस्थाएं अभी वैसी नहीं बनी है और हम अनियंत्रित एवं असुरक्षित विकास करते जा रहे हैं। मुंबई हो, दिल्ली हो, चैन्नई या बेंगलुरु या ऐसे ही अन्य बड़े शहर -हर कहीं अनियोजित विकास और शहरी निर्माण संबंधी नियम-कानूनों के खुले उल्लंघन के चलते आए दिन दुर्घटनाएं होती रहती हैं। स्थिति यह है कि सरकारी भवनों तक में सुरक्षा के उपायों की अनदेखी होती है। दिल्ली के इनकम टैक्स भवन में आग से एक अधिकारी की जान हाल में गयी। कहने को तो अपने देश में हर तरह के नियम-कानून हैं, लेकिन वे कागजों पर ही अधिक हैं या निर्दोषों को परेशानी करने के लिये है। औसत जनप्रतिनिधि और अधिकारी-कर्मचारी पैसे बनाने के फेर में रहते हैं और अनियोजित विकास को रोकने के बजाय उसे बढ़ावा देने का काम करते हैं। सब चलता है वाली प्रवृत्ति इस तरह अपनी जड़ें जमा चुकी है कि व्यवस्था की परवाह करना ही छोड़ दिया गया है। यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है कि शहरी विकास के बड़े-बड़े दावे करने और उन्हें संवारने की तमाम योजनाएं बनाने के बावजूद देश के शहर दुर्दशाग्रस्त एवं असुरक्षित हैं। हर हादसे पर सियासत होती है लेकिन कोचिंग सैंटर माफिया इतना ताकवर है कि उसके आगे कोई कुछ नहीं बोलता। ऐसा क्यों है यह सब जानते हैं।

टेनपिन बॉलिंग की राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में भाग लेंगे अभिज्ञान पटेल

● बैंगलोर में आयोजित होगी राष्ट्रीय चैम्पियनशिप ● अभिज्ञान पटेल ने स्टेट चैम्पियनशिप में किया था शानदार प्रदर्शन

भोपाल। मध्यप्रदेश टेनपिन बॉलिंग एसोसिएशन के सचिव अंकुर बजाज ने घोषणा की है कि इस चैम्पियनशिप के लिए चयनित खिलाड़ी अंकुर बजाज, उत्कर्ष श्रीवास्तव, चैतन्य शिंगणे, अभिज्ञान पटेल, मोहित अग्रवाल, कुसे, अरुणिता गजभिए और कीर्ति वर्मा इस वर्ष अक्टूबर में बैंगलोर में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय चैम्पियनशिप में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करेंगे। यह उभरती प्रतिभाओं के साथ अनुभवी दिग्गजों का कॉम्बिनेशन है जो राष्ट्रीय स्तर पर शानदार प्रदर्शन करने के लिए तैयार हैं। ज्ञात हो कि अभिज्ञान पटेल ने इसी वर्ष मई में राज्यस्तरीय चैम्पियनशिप में शानदार प्रदर्शन के साथ सफलता हासिल की थी। उनके प्रदर्शन और खेल कौशल के आधार पर राष्ट्रीय स्तर के लिए चयन हुआ है। इस चैम्पियनशिप के लिए चयन होने पर अभिज्ञान के शुभचिंतकों और वरिष्ठ लोगों ने बधाई और शुभकामनाएँ दीं हैं।

भोपाल के कलियासोत डैम के 2 गेट खोले

● टेस्टिंग के लिए गेट खोलकर देखे; भदभदा के गेट खुलने पर कलियासोत में आएगा पानी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कलियासोत डैम के 13 में से 2 गेट मंगलवार की दोपहर साढ़े 3 बजे खोल दिए गए। हालांकि, डैम अभी पूरा नहीं भरा है। भदभदा डैम में बढ़ते जलस्तर और कभी भी गेट खोले जाने की संभावना के बीच कलियासोत डैम के गेट को टेस्टिंग के लिए खोला गया। टेस्टिंग के बाद गेट बंद कर दिए जाएंगे। गेट खोले जाने के दौरान जलसंसाधन विभाग के अधिकारी मौजूद रहे। कोलार फायर स्टेशन इंचार्ज पंकज खरे ने बताया, सुरक्षा के लिहाज से मुनादी कराई गई है। निगम का अमला भी यहां तैनात किया गया है। बता दें कि भोपाल में अब तक 24.75 इंच बारिश हो चुकी है, जो सीजन की करीब 66 प्रतिशत है। वहीं, जुलाई में बारिश का कोटा भी पूरा हो गया है। जुलाई में ही 15 इंच से ज्यादा पानी गिर चुका है, जबकि कोटा 14.4 इंच का है। 10 में से 6 साल ऐसा हुआ, जब जुलाई का कोटा पूरा हुआ है। मौसम विभाग ने बुधवार से फिर तेज बारिश होने का अलर्ट किया गया है। मंगलवार को धूप-छांव या हल्की बारिश वाला मौसम रहेगा। भोपाल की लाइफ लाइन बड़ा तालाब में भी पानी का लेवल बढ़ रहा है। इसका फुल टैंक लेवल 1666.80 फीट है। मंगलवार तक इसमें 1665.75 फीट पानी आ गया है। यानी, अब यह सिर्फ 1.05 फीट ही खाली है। हालांकि, यदि कैचमेंट एरिया में लगातार तेज बारिश हुई तो इसके गेट जल्दी खुल सकते हैं। इधर, शाहपुरा तालाब में भी अच्छा पानी आ गया है।

'मैं महापौर बोल रही हूं'

जिंसी चौराहे से अतिक्रमण हटाएं ?

पहले भी ठेले हटाने को कहा था; महिलाएं-बच्चों को निकलने में परेशानी हो रही

भोपाल (नप्र)। मैं महापौर मालती राय बोल रही हूं...। जिंसी चौराहे पर अतिक्रमण है। कई ठेले बीच में ही खड़े हो जाते हैं। इससे बच्चों और महिलाओं को गुजरने में दिक्कतें होती हैं। पास में ही सेंट फ्रांसिस स्कूल है। पहले भी ठेले हटाने को कहा था। ये वापस क्यों आ जाते हैं। आगे ऐसा न हो। भोपाल के स्मार्ट सिटी कंट्रोल रूम से मंगलवार को महापौर राय ने मोबाइल पर अफसरों को कॉल करके कुछ इस तरह से निर्देश दिए। यहां महापौर ने महापौर हेल्पलाइन की समीक्षा की और हर विभाग के जिम्मेदारों को कॉल करके पेंडिंग शिकायतों के बारे में बताया। महापौर ने उद्यान, सिविल, गोवर्धन परियोजना, अतिक्रमण, सफाई, स्ट्रीट लाइट, सीवेज, स्ट्रीट डॉग्स प्रभारी को भी कॉल किया।

बारिश की वजह से सीवेज की समस्या

महापौर राय ने बताया, 1 से 30 जुलाई के बीच कुल 4143 शिकायतें आई हैं। इनमें से 1116 शिकायतें ही पेंडिंग है। बारिश की वजह से सीवेज समस्या है, क्योंकि सीवेज की निकासी में समय लगता है। हेल्थ की शिकायतें रोज दूर करते हैं। स्ट्रीट लाइट की शिकायतों पर काम चल रहा है। महापौर मालती राय ने मंगलवार को महापौर हेल्पलाइन में दर्ज की गई समस्याएं सुनीं।

स्ट्रीट डॉग्स की शिकायतें सबसे ज्यादा

भोपाल में आवारा कुत्तों के शिकार के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। महापौर हेल्पलाइन में इनकी शिकायतें की जा रही हैं। यही कारण है कि इन शिकायतों संख्या भी बढ़कर 1071 हो गई है, जो अन्य शिकायतों की तुलना में सबसे ज्यादा है। इसके बाद सीवेज, स्मार्ट लाइट की समस्याएं शामिल हैं।

लोगों को भी कॉल किया

महापौर ने मंगलवार को अफसरों के साथ शिकायत करने वाले लोगों को भी कॉल किया। एक व्यक्ति से पूछा कि आपकी सीवेज की समस्या दूर हो गई। व्यक्ति ने कहा कि हां, अब कोई समस्या नहीं है। इसके बाद महापौर ने पूछा कि किसी ने बदले में पैसे तो नहीं लिए।

इन नंबर पर कर सकते हैं शिकायत

स्ट्रीट लाइट, स्ट्रीट डॉग्स, सीवेज, सफाई समेत निगम से जुड़ी अन्य समस्याएं हैं तो आप भी निगम को कॉल करके शिकायत दर्ज करा सकते हैं। इसके लिए महापौर हेल्पलाइन नंबर-155304 पर कॉल करना होगा।

लोकसभा में उठा यूनियन कार्बाइड के जहरीले कचरे का मामला

भोपाल सांसद ने कहा- मार्च 2023 में केंद्र से 126 करोड़ मिले फिर भी कचरा नहीं उठा

भोपाल (नप्र)। लोकसभा में मंगलवार को भोपाल सांसद आलोक शर्मा ने भोपाल की यूनियन कार्बाइड परिसर में 40 साल से पड़े जहरीले कचरे का निष्पादन न होने का मामला उठाया। लोकसभा में शून्यकाल के दौरान आलोक शर्मा ने कहा- मैंने 2-3 दिसंबर की रात को हुई दुनिया की सबसे भीषणतम त्रासदी को झेला है। ये देश का महत्वपूर्ण मुद्दा है।

आलोक शर्मा बोले- मैंने मौत का मंजर अपनी आंखों से देखा

शून्यकाल में आलोक शर्मा ने कहा- मैं यूनियन कार्बाइड की भीषणतम त्रासदी की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। यह भोपाल ही नहीं देश का महत्वपूर्ण मुद्दा है। 2 दिसंबर 1984 की रात 1:00 बजे पूरा भोपाल गहरी नींद में सो रहा था और सोते समय अचानक लोगों को खांसी होने लगी और इस घटना में हजारों लोग मौत की आगोश में सो गए थे। उस मौत के मंजर को मैंने अपनी आंखों से देखा है।

केंद्र ने एक साल पहले 126 करोड़ दिए फिर भी कचरे का निष्पादन नहीं हो पाया: आलोक शर्मा ने कहा- इस भीषणतम त्रासदी को 40 वर्ष हो गए हैं लेकिन आज भी वहां पर मौजूद जहरीला कचरा का निष्पादन नहीं हो पाया है आज भी वहां कीटनाशक दवाइयां बनाने वाली बहुराष्ट्रीय अमेरिकन कंपनी यूनियन कार्बाइड इंडिया लिमिटेड का 337 मेट्रिक टन कचरा निष्पादन के लिए बचा हुआ है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव की अध्यक्षता में गठित ओवरसाइड कमेटी ने 126 करोड़ रुपए की धनराशि यूनियन कार्बाइड के कचरे के निष्पादन के लिए मार्च 2023 में उपलब्ध करा दी गई 1 साल से ज्यादा समय बीत गया। लेकिन कचरे का निष्पादन नहीं हो पाया। मंत्री जी जल्दी यह निर्देश दें कि 126 करोड़ रुपए की धनराशि कचरा निष्पादन के लिए उपलब्ध करा दी गई है तो वहां के कचरे का शीघ्र निष्पादन होना चाहिए।

एजेंसी को अगस्त में शिफ्ट करना है जहरीला कचरा

मप्र के गैस राहत एवं पुनर्वास विभाग के अफसरों ने बताया कि यूनियन कार्बाइड के जहरीले कचरे के निष्पादन के लिए टेंडर करके एजेंसी फाइनल कर दी गई है। जिस एजेंसी को इस कचरे को इंदौर के पास डिस्पोजल करना है उसे अगस्त में यह काम करना है। लेकिन, इंदौर में जिस जगह यह कचरा ट्रांसफर होना है वहां के स्थानीय रहवासी विरोध कर रहे हैं।

भोपाल- बैरसिया में तालाब में डूबे 3 दोस्त

एक छात्र का शव रात में मिला, गोताखोरों ने दो के शव निकाले

भोपाल (नप्र)। बैरसिया के ललरिया गांव में सोमवार की शाम पंचायत के तालाब में डूबने से तीन बालकों की मौत हो गई। तीनों के शव तालाब से निकाल लिए गए हैं। शवों को नगर निगम के गोताखोर और एसडीआरएफ की संयुक्त टीम द्वारा निकाला गया है। एक बालक का शव रात में ही निकाल लिया गया था। दो के शव आज सुबह निकाले गए। तीनों की उम्र 14 से 15 वर्ष है। पोस्टमॉर्टम बैरसिया के ही शासकीय अस्पताल में होगा। बैरसिया थाना प्रभारी नरेंद्र कुलदस्ते के मुताबिक ललरिया निवासी राज अहिरवार, नीलेश अहिरवार और एहतेशाम सोमवार की शाम करीब पांच-छह बजे घर से निकले थे। जब वह घर नहीं लौटे तो परिजनों ने तलाशना शुरू किया।

लोगों ने बताया कि बालकों को परवलिया रोड की तरफ जाते देखा है। परिजन बच्चों को तलाशते हुए ललरिया से करीब डेढ़ किमी बाहर निकले तो उन्हें रात करीब 9 बजे तालाब किनारे बच्चों के कपड़े और चप्पल मिलीं। उन्होंने टार्च की लाइट से देखा तो तालाब में एक बालक का शव ऊपर आ गया था। पुलिस मौके पर पहुंच गई थी। पुलिस ने तालाब से राज अहिरवार का शव बाहर निकाला है। पूरी रात रेस्क्यू चलता रहा।

सुबह मिले दोनों बालकों के शव: बचे हुए दो बच्चे नीलेश 13 साल और एहतेशाम 14 साल के शव सुबह 9.20 बजे निकाले गए। उनका पोस्टमार्ट्म बैरसिया में ही करवाया जाएगा। तीनों ही बच्चों के माता-पिता मजदूरी करते हैं। तीनों दोस्त नोवीं कक्षा में पढ़ते थे। वहीं तालाब में डूबे एक बालक का शव सोमवार रात को ही तालाब से निकाल लिया गया था।

कलेक्टर भी गए थे घटना स्थल

तीन बच्चों के तालाब में डूबने की खबर सुनकर भोपाल कलेक्टर, कौशलेंद्र विक्रम सिंह भी घटना स्थल पर पहुंच गए थे। जिस तालाब में डूबने से बच्चों की मौत हुई है वह इसी साल मनरेगा योजना के तहत बनाया गया था। तालाब की गहराई 6-7 फीट बताई जा रही है।

म.प्र.में 38 दिन में सीजन की आधी बारिश

सिवनी में सबसे ज्यादा 31 इंच पानी गिरा; आज 7 जिलों में अलर्ट

भोपाल (नप्र)। मानसून की एंट्री के 38 दिन में ही मध्यप्रदेश में सीजन की आधी यानी 50 प्रतिशत बारिश हो गई है। सबसे ज्यादा सिवनी जिले में 31.26 इंच पानी गिरा है। 30 जुलाई से एक और स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव हो रहा है। 31 जुलाई से एक बार फिर पूरा प्रदेश तरबतर होगा। छतरपुर, छिंदवाड़ा, सिवनी, मंडला, बालाघाट, डिंडौरी और अनूपपुर में तेज बारिश का अलर्ट है। आईएमडी, भोपाल के वैज्ञानिक प्रकाश दावले ने बताया कि अभी साउथ-ईस्ट मध्यप्रदेश के ऊपर एक साइक्लोनिक सर्कुलेशन एक्टिव है। मानसून ट्रफ गुना, रायसेन, मंडला से होते हुए बंगाल की खाड़ी की ओर जा रही है। दो अन्य सिस्टम भी एक्टिव हैं। इस वजह से बारिश का दौर चल रहा है। 31 जुलाई से स्ट्रॉन्ग एक्टिविटी दिखाई देगी।

पश्चिमी हिस्से में सबसे ज्यादा बारिश: प्रदेश में अब तक एवरेज 18.5 इंच बारिश हो चुकी है। यह नॉर्मल बारिश से 1.6 इंच ज्यादा है। पश्चिमी हिस्से- भोपाल, इंदौर, उज्जैन, नर्मदापुरम, ग्वालियर-चंबल संभाग में एवरेज से 10 प्रतिशत ज्यादा पानी गिर चुका है। पूर्वी हिस्से- रीवा, सागर, जबलपुर और शहडोल संभाग में 4 प्रतिशत ज्यादा बारिश हुई है। बारिश के मामले में जबलपुर संभाग सबसे आगे है। सिवनी, डिंडौरी, छिंदवाड़ा, मंडला और बालाघाट में सबसे ज्यादा बारिश हुई है। वहीं, रीवा संभाग आंकड़ों में पीछे है।

जन्मदिन पर बोरवेल में गिरी मासूम

साढ़े 4 घंटे में 100 फीट गहराई से बाहर निकाला, लेकिन इससे पहले सांसें थमीं

सिंगरौली (नप्र)। मध्यप्रदेश के सिंगरौली में सोमवार को 3 साल की मासूम 100 फीट गहरे बोरवेल में गिर गई। जिला प्रशासन और एसडीईआरएफ की टीम ने महज साढ़े चार घंटे में उसे बाहर निकाल लिया, लेकिन तब तक उसकी सांसें थम चुकी थीं। सोमवार को ही उसका तीसरा जन्मदिन भी था। सिंगरौली से करीब 30 किमी दूर बरगवां थाना क्षेत्र के कसर गांव में ये हादसा हुआ। सोमवार शाम करीब 4 बजे तीन साल की सौम्या साहू अपने पिता पिंटू साहू के साथ खेत पर गई थी। पिता काम में व्यस्थ हो गए और बच्ची खेलते-खेलते खुले बोरवेल के पास चली गई। पैर फिसलने से बोरवले में गिर गई। इसके बाद अफरा-तफरी मच गई। परिजनों ने तत्काल इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस टीम और जिला प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची। जिला प्रशासन और एसडीईआरएफ की टीम ने शाम करीब 6 बजे रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया। तीन जेसीबी से खुदाई शुरू की गई। बच्ची जहां गिरी थी इससे करीब दस-पंद्रह फीट दूर तीन जेसीबी से खुदाई की जाने लगी। दो जेसीबी समानांतर खुदाई

कर रही थीं। वहीं, एक जेसीबी से बोरवेल और समानांतर खुदाई के बीच वाली जगह से मिट्टी हटा रही थी।

बच्ची के फेफड़ों में भर गया था पानी: आखिरकार रात करीब साढ़े 10 बजे प्रशासन ने बच्ची को बोरवेल से बाहर निकाल लिया। साढ़े चार घंटे तक बिना रुके चले इस ऑपरेशन के बाद प्रशासन की टीम ने बच्ची को तुरंत एम्बुलेंस से बैढ़न के सरकारी अस्पताल रवाना किया। रात करीब 11.30 बजे बैढ़न सीएमएचओ डॉ. निखिल जैन ने सौम्या के मौत की पुष्टि की। डॉ. जैन ने बताया कि सौम्या के फेफड़े में काफी पानी भर गया था। बोरवेल में बारिश का पानी भर गया था।

पूरे ऑपरेशन को कलेक्टर-एसपी ने किया मॉनिटर

कलेक्टर चंद्रशेखर शुक्ला और एसपी निवेदिता गुप्ता सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंचे। उन्होंने पूरे ऑपरेशन को खुद मॉनिटर किया। निर्देश के बाद ऑपरेशन तेज गति से चला। बारिश का सीजन होने के कारण और बोरवेल में पहले से ही पानी भरा होने से ऑपरेशन आसान नहीं था। दोहरी चुनौती थी कि ऑपरेशन तेजी से भी चलना चाहिए और जल्दबाजी में मिट्टी भी नहीं धंसनी चाहिए। हालांकि काफी सक्रियता और एहतियात के बाद भी बच्ची को नहीं बचाया जा सका।

ग्वालियर में कांग्रेस विधायक पर एफआईआर

● महिलाओं को बाल पकड़कर पीटने का आरोप; बोले- मेरे पीएसओ से झूमाझटकी की

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर ग्रामीण से कांग्रेस विधायक साहब सिंह गुर्जर के खिलाफ महिलाओं से अभद्रता और मारपीट का मामला दर्ज किया गया है। आदिवासी महिलाओं का आरोप है कि विधायक ने उन्हें बाल पकड़कर पीटा है। महिलाओं ने सोमवार को एसपी धर्मवीर सिंह भदौरिया से शिकायत की। महिलाएं महाराजपुरा के मऊ पहाड़ी की रहने वाली हैं। विधायक ने सभी आरोपों को झूठा बताया है। उनका कहना है कि महिलाओं ने उनके पीएसओ की सर्विस रिवॉल्वर छीनने की कोशिश की, झूमाझटकी भी की।